॥ श्रीः ॥

धर्मशास्त्र

# परासरस्मृति ।

भाषा टीका युतः

धर्मशास्त्र, सकल प्रायश्चित्त शुद्धि निर्णय
मानव धर्म प्रचारकः ।

काशी निवासी पं० गुरुप्रसाद शर्मा
द्वारा भाषानुवादितः

सोऽयं
बम्बई
वर्णो
बाबू हरिनारायण बर्मा बुक्सेलर,
कचौड़ीगली काशी ने छपवाया ।

Printed by J. N. Rao at the Nageshwar Press Benares.

प्रथमबार १५०० ] सन् १९२३ ई० [ मूल्य ।।।)

॥ श्रीः ॥

❋ धर्म शास्त्र ❋

# पाराशरस्मृतिः ।

भाषा टीका युतः

धर्म शास्त्र विषयक सकल प्रायश्चित्त शुद्धि
निर्णय मानव धर्म प्रचारकः ।

काशी निवासी पं० गुरु प्रसाद शर्मा
द्वारा भाषानुवादितः

सोऽयं
❋ बम्बई ❋
वर्णो

बाबू हरीनारायण वर्मा बुकसेलर
कचौड़ीगली काशीने छपवाया ।

के० एन राव द्वारा काशी नागेश्वर प्रेस, में छपा ।

प्रथम वार १५०० } सं० १९२३ { मूल्य ॥)

❀ श्रीः ❀

# पाराशरस्मृतिभाषाटीकाकी विषयानुक्रमणिका।



॥ इति पराशर स्मृतिविषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

# अथ पाराशरस्मृति

## भाषा टीका सहित ।
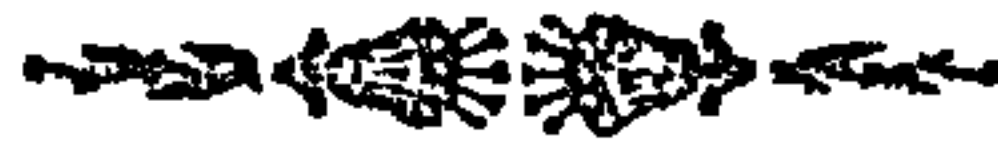
**अथातोहिमशैलाग्ने देवदारुवनालये ।**
**व्यासमेकाग्रमासीनमपृच्छन्नृषयः पुरा ॥ १ ॥**

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ मंगलाचरण पूर्वक इसग्रंथका बयानहारि विद्वान् यों लिखता है कि किसी समय ऋषि लोगों ने हिमालय पर्वत के शिखर पर देवदारु वृक्षों के बन में एकाग्र चित्त होकर वैठे हुये व्यासजी से ऐसा प्रश्न किया ॥ १ ॥

**मानुषाणांहितं धर्मवर्त्त मानेकलौयुगे ।**
**शौचाचारंयथावच्च बद सत्यवती सुत ॥ २ ॥**

कि हे सत्यवती के पुत्र आप हम लोगों से मनुष्यों के जो धर्म इस कलियुग में हितकारी हो सक्ते हैं तथा उनके शौच और आचार भी विधि पूर्वक कहें ॥ २ ॥

---

१ यद्यपि इस ग्रंथका नाम पाराशरस्मृति ऐसा सुनने से पहिले पहिल हर एक मनुष्य के मनमें आवेगा कि इसे पराशरजीने रचा है । परन्तु जब इस ग्रन्थका थोड़ा सा भी पढेंगे तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि पराशरजीने जो धर्मकी बातें व्यासजी औरउनके साथी ऋषियों को सुनाई थी उन सबो को किसी मनुष्य ने अथवा उन्ही ऋषियो मै से अन्यतम् ने इकट्ठी कर लोकोपकार के निमित्त लिखकर ग्रंथ रच दिया है ।

तच्छ्रुत्वान्नृषि वाक्यं तुसशिष्योऽग्न्यर्क सन्निभः ॥
प्रत्युवाचमहातेजाः श्रुतिस्मृतिविशारदः ॥ ३ ॥

ऋषियों के इस वाक्य को सुनकर अपने शिष्यों के मध्य में बैठे तथा अग्नि और सूर्य की भांति अति तेजस्वी रूप देख पड़ते हुये और श्रुति स्मृति (अर्थात् वेद और धर्म शास्त्र) में परम निपुण श्रीव्यास जी बोले ॥ ३ ॥

न चाहंसर्वतत्वज्ञः कथंधर्मवदाम्यहम् ॥
अस्मात्पितवै प्रष्ठव्य इतिव्यासः सुतोवदत् ॥४॥

मैं सम्पूर्ण बातों का तत्व नहीं जानता तो धर्म क्यों कर कह सकूं इस हेतु हमारे पिता से ही पूँछना चाहिये ऐसा पराशर के सुत व्यासजी ने कहा ॥ ४ ॥

ततस्तेऋषयः सर्वेधर्मतत्त्वार्थकांक्षिणाः ॥
ऋषिंव्यासंपुरस्कृत्यगतावदरिकाश्रमम् ॥ ५ ॥

अनन्तर वे सब ऋषि लोग धर्म तत्व जानने की इच्छा से व्यासजी को अगाड़ी कर वदरिका श्रम को चलपड़े ॥ ५ ॥

नानापुष्पलताकीर्णफलपुष्पै रलंकृतम् ।
नदी प्रस्रवणोपेतं पुण्यतीर्थोपशोभितम् ॥ ६ ॥

वहां पर अनेक भांति की फूली हुई लतायें फैल रही थीं, विविध प्रकार के फल और फूलों से बड़ी शोभा हो रही थी, नदियां झरने चल रहे थे, अच्छे २ पवित्र तीर्थों से आश्रम सुहावना हो रहा था ॥ ६ ॥

मृगपक्षिनिनादाढ्यं देवतायतनावृतम् ॥
यक्षगंधर्वसिद्धैश्च नृत्यगीतैरलं कृतम् ॥ ७ ॥

बहुत से मृग और पक्षियों के शब्द चारों ओर सुनाई दे रहे थे, देवताओं के मंदिरों को घेरासा बंध रहा था यक्ष गंधर्व सिद्ध लोगों के नृत्य और गान से अधिकतर शोभा हो रही थी॥७॥

तस्मिन् नृपिसभामध्ये शक्ति पुत्रं पराशरम् ॥
सुशासीनं महातेजा मुनिमुख्यगणैर्वृतम् ॥ ८ ॥

ऐसे आश्रम के बीच ऋषियों की जो सभा हो रही थी उसमे मुख्य २ मुनियोंके मध्य सुख पूर्वक बैठे हुए शक्ति के पुत्र श्री पराशर जीको बड़े तेजस्वी ॥ ८ ॥

कृतांजलिपुटोभूत्वा व्यासस्तुऋषिभिः सह ॥
प्रदक्षिणाभिवादैश्चस्तुतिभिः समपूजयेत् ॥ ९ ॥

श्रीव्यासजीने ऋषिगणों समेत दोनों हाथ जोड़कर तथा प्रदक्षिणा और प्रणाम करके एवं स्तुतियों से भी सन्तुष्ट किया ॥९॥

अथ संतुष्टहृदयः पराशरमह मुनिः ॥
आहसुस्वागतं ब्रूही त्यासीनोमुनिपुंगवः ॥ १० ॥

तब पराशर महामुनिने अपने हृदय में बहुत प्रसन्न होकर कहा कि अपने शुभागमनका वृत्त कहिये अनन्तर मुनियो में श्रेष्ठ १०

कुशलंसम्यगित्युक्त्वाव्यासः पृच्छत्यनंतरम् ॥
यदिजानासिमेभक्तिं स्नेहाद्वाभक्तवत्सल ॥ ११ ॥

श्रीव्यासजी भली भांति कुशल हैं ऐसा कह कर बैठे और यों बोले कि हे भक्तवत्सल! यदि आप मेरी भक्ति अपने में जानते हैं अथवा आपका स्नेह मुझ पर है तो ॥ ११ ॥

धर्मंकथयमेतातअनुग्राह्योह्यहंतव ॥
श्रुतामेमानवाधर्मा वासिष्ठाः काश्यपास्तथा ॥ १२ ॥

हे तात! मुझे धर्म बतलाइये क्योंकि मैं आपका अनुग्रह पात्रहूं मैने मनु, वसिष्ठ, कश्यप, ॥ १२ ॥

गार्गीयागौतमीयाश्चतथाचौशनसाः स्मृताः ॥
अत्रेर्विष्णोश्चसंवर्तादक्षादंगिरसस्तथा ॥ १३ ॥

गर्ग गौतम. उशना अत्रि. विष्णु संवर्त; दक्ष, अंगिरा, ॥ १३ ॥

शातातपाच्चहारीताद्याज्ञवल्क्यात्तथैवच ॥
आपस्तंब कृता धर्माः शंखस्यलिखितस्यच ॥१४॥

शातातप, हारीत, याज्ञवल्क्य आपस्तंब, शंख, और लिखित ॥ १४ ॥

कात्यायनकृताश्चैवतथा प्राचेतसान्मुनेः ॥
श्रुताह्येते भवत्प्रोक्ताः श्रुत्यर्थामेन विस्मृताः ॥ १५ ॥

कात्यायन, तथैव प्राचेतस मुनि के कहे हुए धर्मों को सुना है और आपने जो श्रुति अर्थात् वेदों के अर्थ मुझ मे कहे हैं उन्हें भी मैं नहीं भूलाहूँ ॥ १५ ॥

अस्मिन्मन्वंतरेधर्माः कृतत्रेतादिकेयुगे ॥
सर्वेधर्माः कृतेजाताः सर्वेनष्टाः कलौयुगे ॥ १६ ॥

इसी * मन्वतंर में सत्ययुग और त्रेतादियुग के जो धर्म हैं उन्मे से सत्ययुग में तो सारे धर्म थे और कलियुग में सब के सब दूर होगये हैं ॥ १६ ॥

चातुर्वर्ण्यसमाचारं किंचित्साधारणंवद ॥
चतुर्णा मपिवर्णानां कर्त्तव्यं धर्मकोविदैः ॥ १७ ॥

चारों वर्णों का जो कुछ साधारण आचार है सो कहिए कि जिस्मे धर्म निपुण चारों वर्णके लोग करैं ॥ १७ ॥

ब्रूहिधर्मस्वरूपज्ञसूक्ष्मं स्थूलंच विस्तरात् ॥
व्यास वाक्यावसानेतु मुनिमुख्यः पराशरः ॥ १८ ॥

आप धर्मका स्वरूप जानते हैं इस हेतु सूक्ष्म और स्थूल दोनों धर्म विस्तार पूर्वक कहिए व्यासकी बातें हो चुकने पर मुनियों में प्रधान पराशर जी ॥ १८ ॥

* अर्थात वैवस्वतमन्वंतरमें और देवताओंके ७१ युगोंकाएक मन्वंतर होता है।

धर्मस्यनिर्णयं प्राहसूक्ष्मं स्थूलं च विस्तरात् ॥

शृणुपुत्रप्रवक्ष्यामि शृण्वंतुमुनयस्तथा ॥ १९ ॥

धर्म का सूक्ष्म और स्थूल दोनो विध निर्णय विस्तार पूर्वक यों कहने लगे कि हे पुत्र! तुम सुनो और सारे मुनि गण भी सुनें (इस भांति श्रोताओं को सावधान किया) ॥ १९ ॥

कल्पेकल्पे क्षयोत्पत्त्याब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ॥

श्रुतिस्मृति सदाचारनिर्णेतारश्चसर्वदा ॥ २० ॥

हर एक कल्प (संसारोत्पत्ति (काल मे ब्रह्मा, विष्णु, और महेश्वर (शिव) ये तीनो क्षीण हो कर उत्पन्न होते और श्रुति (वेद) स्मृति, (धर्मशास्त्र) तथा सदाचार, (होलिकादि) का निर्णय सदा करते हैं ॥ २० ॥

नकश्चिद्वेदकर्त्ताचवेदंस्मृत्वाचतुर्मुखः ।

तथैवधर्मान्स्मरतिमनुः कल्पांतरेंतरे ॥ २१ ॥

वेद का कर्त्ता कोई नहीं है चतुर्मुख ब्रह्मा ने वेदको स्मरण किया इसी भांति प्रति कल्पांतर में मनुजी धर्मों का स्मरण कर्ते हैं ॥ २१ ॥

अन्येकृतयुगेधर्मास्त्रेतायांद्वापरेयुगे ॥

अन्येकलियुगे पुंसांयुगरूपानुसारतः ॥ २२ ॥

सत्ययुग मे पुरुषो के धर्म और ही थे और त्रेता में कुछ और तथा द्वापर में उससे भी भिन्न थे इसी भांति कलियुग के धर्म दूसरे ही हैं जैसा युग तैसे धर्म होते है ॥ २२ ॥

तपः परं कृतयुगे त्रेतायांज्ञानमुच्यते ॥

द्वापरेयज्ञमेवाहुर्दानमेकंकलौ युगे ॥ २३ ॥

सत्य युग में तपस्या ही बड़ा धर्म था त्रेता मे ज्ञान को परम धर्म मानते थे द्वापर मे यज्ञ को और कलियुग मे केवल दान ही धर्म है ॥ २३ ॥

कृतेतुमानवाधर्मास्त्रेतायांगौतमाः स्मृताः ॥

द्वापरे शांखलिखिताः कलौपाराशराःस्मृताः ॥ २४ ॥

सत्ययुग मे मनु के कहे हुये धर्म, त्रेता मे गौतम के, द्वापर मे संख लिखित के, और कलियुग मे पराशर के धर्म माने जाते हैं॥२४॥

त्यजेद्देशं कृतयुगे त्रेतायां ग्राममुत्सृजेत् ॥

द्वापरे कुलमेकं तु कर्त्तारं तु कलौयुगे ॥ २५ ॥

सत्ययुग में पाप करनेवाले के देश को छोड़ना चाहिए त्रेता में उसके गांवको, द्वापर में उसके कुलको और कलियुग में उस करने वाले ही को त्यागना होता है ॥ २५ ॥

कृते संभाषणादेव त्रेतायांस्पर्शनेन च ॥

द्वापरेत्वन्नमादाय कलौपतति कर्मणा ॥ २६ ॥

सत्ययुग में पापी के साथ बोलनेही से त्रेता में स्पर्श करने से द्वापर में उसका अन्न लेनेसे मनुष्य पतित होता है और कलियुग में तो पाप कर्म करने सेही पतित होता है अन्य था नहीं ॥ २६ ॥

कृतेतात्क्षणिकः शापस्त्रेतायां दशभिर्दिनैः ॥

द्वापरे चैकमासेनकलौ संवत्सरेणतु ॥ २७ ॥

सत्ययुग में कोई सराधे तो उसीक्षण उसका फल हो जाता है त्रेतामें दसदिन के बीच होता, द्वापर में एक महीनेपर और कलियुग मे बरसभर के अन्तर होता है ॥ २७ ॥

अभिगम्य कृतेदानं त्रेतास्वाहूयदीयते ॥

द्वापरेया च मानायसेवयादीयतेकलौ ॥ २८ ॥

सत्ययुग में ब्राह्मण के घरपर जाकर लोगदान देते हैं त्रेता में बुलाकर देते द्वापरमें मांगने परदेते, और कलियुग में जो सेवाकरे उसे देते हैं ॥ २८ ॥

अभिगम्योत्तमंदानमाहूयैवतुमध्यमम् ॥

अधमं याचमानाय सेवादानंतु निष्फलम् ॥ २९ ॥

किसी के घर पर जाकर देना उत्तम दान है, बुलाकर देना मध्यम है, मांगने पर देना अधम दान है और सेवाकरने पर जो दिया वह निष्फल होता है ॥ २९ ॥

जितोधर्मोह्य धर्मेण सत्यं चैवानृतेनच ॥
जिताश्चौरैश्चराजानः स्त्रीभिश्च पुरुषाजिताः ॥३०॥

उस कलियुग में धर्म से अधर्म प्रबल होता है सच्चे से झूठा राजाओं से चोरलोग, और पुरुषोंसे स्त्री प्रबल होती है ॥ ३० ॥

सीदंतिचाऽग्निहोत्राणि गुरु पूजाप्रणश्यति ॥
कुमार्यश्चप्रसूयंते तस्मिन्कलियुगे सदा ॥ ३१ ॥

अग्निहोत्रके कर्म ढीले पडजाते, गुरुओं की पूजा नष्टहो जाती है और कारी लडकियों को बच्चे जन्मते हैं यही वर्ताव सदा हो जाता है ॥ ३१ ॥

कृतेत्वस्थिगताः प्राणास्त्रेतायां मांसमाश्रिताः ॥
द्वापरे रुधिरं चैवकलौत्वन्नादिषुस्थिताः ॥ ३२ ॥

सत युग में प्राण हड्डियों में रहता है, त्रेताके मध्यमांसोंमें द्वापर में रुधिर के बीच और कलियुग में अन्नादि ( खानेपीने ) में प्राण रहता है ॥ ३२ ॥

युगेयुगे च येधर्मास्तत्रतत्र च ये द्विजाः ॥
तेषांनिंदा न कर्त्तव्या युगरूपाहितेद्विजाः ॥ ३३ ॥

हर एक युग के जो धर्म है और उन २ युगों में जो द्विज होते हैं उनकी निन्दा करनी योग नहीं क्योंकि वे युगों के रूपही है ॥३३॥

युगेयुगेतुसामर्थ्यंशेषंमुनि विभाषितम् ॥
पराशरेणचाप्युक्तं प्रायश्चित्तं विधीयते ॥ ३४ ॥

युग २ के सामर्थ्य तथा जो विशेष बाते हैं उन्हें और अनेक मुनियों ने अथवा पराशरने भी कहा है उससे जो कुछ शेषअर्थात् न्यून वा अधिक हो उसी में प्रायश्चित्त होता है ॥ ३४ ॥

अहमद्यैवतत्सर्वं मनुस्मृत्यब्रवीदिदं ॥

चातुर्वर्ण्यसमाचारं शृण्वन्तुमुनिपुंगवाः ॥ ३५ ॥

मैं आजही उन सबो को सुनकर आपलोगो से चारोंवर्णो के समाचार कहताहूं हे ऋषि श्रेष्ट ! आप लोग सुनें ॥ ३५ ॥

पराशरमतं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ॥

चिंतितंब्राह्मणार्थायधर्मसंस्थापनायच ॥ ३६ ॥

यहपराशरका कथितधर्मशास्त्र पाठकरने से पुण्य जनकहोता है अनुष्टानकरने से पवित्र स्वर्गदायक होता है और नरकादि निवृत्ति करने से पापनाशकहै ब्राह्मणोंके निमित्त और धर्मस्थापन के लिए चिंतितहुआ है ॥ ३६ ॥

चतुर्णामपिवर्णानामाचारो धर्मपालकः ॥

आचार भ्रष्टदेहानां भवेद्धर्मः पराङ्मुखः ॥ ३७ ॥

चारों वर्णोका धर्म आचार से ही पालित होता है और जिन्के सरीर आचार भ्रष्ट हैं उनसे धर्म भी विमुख होजाता है ॥ ३७ ॥

षट्कर्माभिरतो नित्यं देवतातिथिपूजकः ॥

हुतशेषंतुभुंजानोब्राह्मणोनावसीदति ॥ ३८ ॥

छकर्मों ( येकर्म आगे कहे जावेंगे ) में सदा रत रहनेहारा और देवता तथैव अतिथियों का पूजन करने हारा और हुतशेष अर्थात् वैश्वदेवकर्म से बचा हुआ अन्न भोजन करनेवाला जो ब्राह्मणहै उसे दोष नही होता है ॥ ३८ ॥

संध्यास्नानं जपोहोमो देवतानां च पूजनम् ॥

आतिथ्यं वैश्वदेवंच षट्कर्माणि दिनेदिने ॥ ३९ ॥

तीनों संध्याओं में स्नान, गायत्री जप, होम, देवताओं का पूजन अतिथि सत्कार और बलिवैश्वदेव, ये छओ कर्म प्रतिदिन कर्त्तव्य हैं ॥ ३९ ॥

इष्टोवायदिवाद्वेष्यो मूर्खः पंडितएववा ।

संप्राप्तो वैश्वदेवांते सोतिथिः स्वर्गसंक्रमः ॥ ४० ॥

मित्र हो अथवा शत्रु, मूर्ख हो वा पण्डित चाहे कैसा भी मनुष्य वैश्वदेव के अंत में आजावे तो वह स्वर्ग प्राप्त कराने द्वारा अतिथि कहलाता है ॥ ४० ॥

दूराच्चोपगतंश्रांतं वैश्वदेवउपस्थितम् ॥
अतिथिंतं विजानीयान्नातिथिः पूर्वमागतः ॥ ४१ ॥

जो दूरसे आया हो, थकाहो, और वैश्वदेव के समय पहुंचा हो उसे अतिथि जानो न कि जो पहिले कभी आगया हो ॥ ४१ ॥

नपृच्छेद्गोत्रचरणे स्वाध्यायं च व्रतानि च ॥
हृदयं कल्पयेत्तस्मिन्सर्वदेवमयोहिसः ॥ ४२ ॥

ऐसे अतिथि का गोत्र और शाखा तथा वेद और व्रत न पूंछना चाहिए उसपर अपना चित्त लगावे वही सर्व देव स्वरूप होता है॥४२॥

नैकग्रामीणमतिथिं संगृह्णीत कदाचन ॥
अनित्यमागतोयस्मात्तस्मादतिथि रुच्यते ॥ ४३ ॥

एकही गांव के रहने वाले को अतिथि समझ के कभी न लेना क्योंकि अतिथि का अर्थ यही है कि जो नित्य न आवे ॥ ४३ ॥

अतिथिंचसंप्राप्तं पूजयेत्स्वागतादिना ॥
तथासनप्रदानेनपादप्रक्षालनेन च ॥ ४४ ॥

उक्त समय में आये हुये अतिथि को स्वागत आदि कथन करके आसन देने से और पांव धोने से पूजन करे ॥ ४४ ॥

श्रद्धयाचान्नदानेन प्रियप्रश्नोत्तरेण च ॥
गच्छतश्चानुयानेन प्रीतिमुत्पादयेद्गृही ॥ ४५ ॥

श्रद्धा पूर्वक भोजन देने से उसकी प्रिय बातें पूछने और कहने से और जब चलने लगे तो उसके पीछे पीछे कुछ दूर पहुंचाने से उसकी प्रसन्नता गृहस्थ को करनी चाहिये ॥ ४५ ॥

अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्त्तते ॥
पितरस्तस्यनाऽश्नति दशावर्षाणि पंच च ॥ ४६ ॥

जिसके घरसे अतिथि निराश होकर चला जाता है उसके पितर लोग पंद्रहवर्ष भोजन नहीं लेते ॥ ४६ ॥

काष्ठाभारसहस्त्रेण घृतकुंभ शतेन च ॥
अतिथिर्यस्य भग्नाशस्तस्य होमोनिरर्थकः ॥ ४७ ॥

जिस्का अतिथि निराश हुआ वह चाहे १००० भार ईंधनसे और १०० घड़े घीसे भी होम करे तो भी वह निष्फल है ॥ ४७ ॥

सुक्षेत्रे वापयेद्वीजं सुपात्रेनिक्षिपेद्धनम् ॥
सुक्षेत्रेचसुपात्रेचह्युसंदत्तंननश्यति ॥ ४८ ॥

अच्छे खेत में बीज बोना और सुपात्रको धन देना क्योंकि सुखेम और सुपात्र में बोया और दिया हुआ नष्ट नहीं होता ।४८।

अपूर्वः सव्रतीविप्रोह्य पूर्वश्चातिथिस्तथा ॥
वेदाभ्यासरतो नित्यमपूर्वोहि दिनेदिने ॥ ४९ ॥

अच्छे व्रतवाला ब्राह्मण अतिथि और वेदाभ्यास में रत रहने हारा मनुष्य ये प्रतिदिन भी आवें तो इन्हें अपूर्वही अर्थात् नया आया हुआ जानना ॥ ४९ ॥

वैश्वदेवेतु संप्राप्ते भिक्षुके गृहमागते ॥
उद्धृत्य वैश्वदेवार्थं भिक्षांदत्वा विसर्जयेत् ॥ ५० ॥

वैश्वदेवके समय में यदि कोई भिक्षुक घर में आजावे तो वैश्वदेवके लिये अन्न निकाल कर शेष उस भिखारीको भिक्षा देकर बिदा कर देना ॥ ५० ॥

यतिश्चब्रह्मचारीचपक्कान्नस्वामिनावुभौ ॥
तयोरन्नमदत्वा च भुक्त्वा चांद्रायणंचरेत् ॥ ५१ ॥

पके हुए अन्नके स्वामी सन्यासी और ब्रह्मचारी है इसलिये यदि

उनको विना दियेही आप भोजन करे तो चान्द्रायण व्रतकरना उचित है

दद्याच्चभिक्षात्रितयं परिव्राट्ब्रह्मचारिणे ॥
इच्छयाच ततो दद्याद्विभवे सत्यवारितम् ॥ ५२ ॥

संन्यासी और ब्रह्मचारी इन दोनों को पहिले तीनों भिक्षा अर्थात् जल, अन्न, पुनः जल देकर यदि सामर्थ्य हो तो यथा रुचि और भी वस्तु देवै कुछ निषेध नहीं है ॥ ५२ ॥

यतिहस्तेजलं दद्यद्भैक्ष्यंदद्यात् पुनर्जलम् ॥
तद्भैक्ष्यंमेरुणातुल्यं तज्जलंसागरोपमम् ॥ ५३ ॥

यती के हाथ में पहिले जल देना तब भिक्षा देनी अनन्तर पुनः जल देना तो वह भिक्षा मेरु पर्वत के तुल्य होती है, और वह जल समुद्र के तुल्य होता है ॥ ५३ ॥

यस्यच्छत्रंहयश्चैव कुंजरारोहमृद्धिमत् ॥
ऐंद्रस्थानमुपासीत् तस्मात्तंनविचारयेत् ॥ ५४ ॥

जिसके छत्र, घोड़े, हाथी, और बड़े मूल्य के सिंहासनादि होते ऐसे ऐन्द्रस्थान (इन्द्रके तुल्य पदवी) पर वह पहुंचता है इस हेतु उस (यति के विषय) का विचार न करना ॥ ५४ ॥

वैश्वदेवकृतंदोषं शक्तोभिक्षुरपोहितुम् ॥
नहिभिक्षुकृतंदोषं वैश्वदेवोव्यपोहति ॥ ५५ ॥

वैश्वदेव में जो दोष किया हो उसे भिक्षु हटा सक्ता है परन्तु भिक्षुक के प्रति जो दोष किया हो उसे वैश्वदेव नहीं छुड़ा सक्ता है ॥ ५५ ॥

अकृत्वावैश्वदेवंतु ये भुंजंति द्विजातयः ॥
तेषामन्नंनभुंजीत काकयोनिंव्रजंति ते ॥ ५६ ॥

जो द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य) वैश्वदेव किए विना ही भोजन कर लेते हैं उनका अन्न भोजन न करना चाहिये क्यों कि वे काक योनि में जाते हैं ॥ ५६ ॥

अकृत्वावैश्वदेवं तु भुंजंते येद्विजाधमाः ॥
सर्वेतेनिष्फलाज्ञेयाः पतंतिनरकेऽशुचौ ॥ ५७ ॥

वैश्वदेव विना कियेही जो द्विजाधम भोजन करतेहैं वे सब निष्फल होते और अपवित्र नरक में गिरते हैं ॥ ५७ ॥

वैश्वदेवविहीनाये आतिथ्येन वहिष्कृताः ॥
सर्वे ते नरकं यांति काकयोनिंव्रजंति च ॥ ५८ ॥

जो वैश्वदेव कर्म से रहित हैं और अतिथि सत्कार से बहिर्मुख हैं वे सब नरक और काक योनि को जाते हैं ॥ ५८ ॥

शिरोवेष्ट्यतुयोभुंक्ते दक्षिणाभिमुखस्तु यः ॥
वामपादेकरंन्यस्यतद्वैरक्षांसिभुंजते ॥ ५९ ॥

शिर में वस्त्र लपेट कर जो भोजन कर्ता तथा बायें पांव पर हाथ रख कर जो भोजन कर्ता है सो मानो राक्षस भोजन कर्ते हैं ॥ ५९ ॥

यतयेकांचनं दत्वा तांबूलं ब्रह्मचारिणे ॥
चौरेभ्योप्यभयं दत्वा दातापिनरकंव्रजेत ॥ ६० ॥

यदि सन्यासी को सोना दे, ब्रह्मचारी को पान दे और चोरों को अभय दान दे तो वह दाता भी नरक को प्राप्त होता है ॥ ६० ॥

शुक्लवस्त्रं च यानं च तांबूलं धातुमेवच ॥
प्रतिगृह्यकुलंहन्यात्प्रति गृह्णाति यस्य च ॥ ६१ ॥

जो यती अथवा ब्रह्मचारी शुक्लवस्त्र सवारी, तांबूल, और धातु ( सोना चांदी आदि ) दान ग्रहण करे तो वह अपने और देने वाले दोनों के कुलकी हत्या कर्ता है ॥ ६१ ॥

चौरोवा यदि चांडालः शत्रुर्वापितृ घातकः ॥
वैश्वदेवेतुसंप्राप्ते सोतिथिः स्वर्गसंक्रमः ॥ ६२ ॥

चोर चांडाल, शत्रु, अथवा पितृ घाती भी हो, और वैश्वदेव के समय में आजावै तो वह स्वर्ग प्रद अथिति होता है ॥ ६२ ॥

नगृह्णातितुयोविप्रो अतिथिं वेदपारगम् ॥
अदत्तं चान्नमात्रंतुभुक्त्वाभुंक्तेतुकिल्बिषम् ६३ ॥

जो ब्राह्मण वेद पारगामी अतिथि को नहीं लेता और बिना दिया हुआ ही अन्न खाता है, तो वह पाप भोजन कर्ता है ॥ ६३ ॥

ब्राह्मणस्य मुखंक्षेत्रं निरूपरम कंटकम् ॥
वापयेत्सर्वबस्तूनिसाकृषिः सर्वकामिका ॥ ६४ ॥

ब्राह्मण का मुख उस खेत के तुल्य है, कि जिसमें कांटे और ऊसर न हों इस हेतु उस में सब प्रकार के बीज बोने चाहिये क्योंकि वह खेती सब कामना देती है ॥ ६४ ॥

अव्रताह्यनधीयाना यत्र भैक्ष्यचराद्विजाः ॥
तंग्रामंदंडयेद्राजा चौरभक्तप्रदोहिसः ॥ ६५ ॥

जिस गांव में अनपढ़े और विना व्रत के द्विज रहते होवें उस ग्रामको राजा दंड देवे, क्योंकि वह चोरों का खिलाने हारा है॥६५॥

क्षत्रियोहिप्रजारक्षन् शस्त्रपाणिः प्रदंडवान् ॥
निर्जित्यपरसैन्यानि क्षितिंधर्मेणपालयेत् ॥ ६६ ॥

क्योंकि क्षत्रिय को चाहिये कि प्रजाओं की रक्षा करे, हाथ में शस्त्र धारण कियेही रहे, दंड भली भांति दे, और दूसरे की सेनाओं को जीत कर धर्म पूर्वक पृथ्वी को पालन करे ॥ ६६ ॥

नश्रीः कुलक्रमाज्जाता भूषणोल्लिखितोऽपिवा ॥
खड्गेनाक्रम्यभुंजीत वीरभोग्यावसुंधरा ॥ ६७ ॥

किसी के कुलमें परंपरा से लक्ष्मी नहीं जन्मी है, और न किसी के भूषण में लिखी है, इस हेतु अपने खड्गके बल से लेकर उसका भोग करे, क्योंकि वसुंधरा वीरोंही के भोगने योग्य है ॥ ६७ ॥

पुष्पंपुष्पं विचिनुयान्मूलच्छेदंनकारयेत् ॥
मालाकारइवाऽऽरामे न यथांगारकारकः ॥ ६८ ॥

जिस भांति माली फुलवारी में वृक्षों का केवल फूल चुनता है जड़ समेत नहीं उखाड़ लेता इसी भांति राजा भी प्रजा से थोड़ा २ धन लेवे और कोला बनाने हारों की भांति जड़ मूल से उनका उच्छेद न करे ॥ ६८ ॥

लाभकर्मतथारत्नं गवांचपरिपालनम् ॥
कृषिकर्मचवाणिज्यं वैश्यवृत्तिरुदाहृता ॥ ६९ ॥

वैश्यों की वृत्ति यह है कि, व्योहार, देना, रत्नों का क्रय विक्रय कर्ना गौओं को पालना, और वाणिज्य करना ॥ ६९ ॥

शूद्रस्यद्विजशुश्रूषा परमोधर्म उच्यते ॥
अन्यथाकुरुतेकिंचित्तद्भवेत्तस्यनिष्फलम् ॥ ७० ॥

शूद्रका परम धर्म द्विजों की सेवा करना है इससे अन्यथा जो कुछ वह कर्त्ता है सो सब उसका निष्फल होता है ॥ ७० ॥

लवणं मधुतैलं च दधितक्रंघृतंपयः ॥
नदुष्येच्छूद्रजातीनां कुर्यात्सर्वेषुविक्रयम् ॥ ७१ ॥

शूद्रों का लवण, मधु, तेल, दही, छाछ, घी, और दूध इनका दोष नहीं सब के पास बेच सक्ता है ॥ ७१ ॥

विक्रीणन्मद्यमांसानिह्यभक्ष्यस्यचभक्षणम् ॥
कुर्वन्नगंम्यागमनं शूद्रः पतति तत्क्षणात् ॥ ७२ ॥

मद्य और मांस को बेचने से, अभक्ष्य को भक्षण कर्नें से और अगम्या स्त्री का गमन कर्नेंसे उसी क्षण शूद्र पतित होता है॥७२॥

कपिलाक्षीरपानेन ब्राह्मणीगमनेनच ॥
वेदाक्षरविचारेण शूद्रस्यनरकंध्रुवम् ॥ ७३ ॥

इतिपाराशरीये धर्मशास्त्रे चातुर्वर्ण्याचारो नामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

कपिला गौका दूध पीने से, ब्राह्मणी का संग कर्नें से, और वेद के अक्षरों को विचार कर्नें से शूद्र को नरक अवश्य होता है॥ ७३ ॥

इति पाराशर धर्मशास्त्र भाषाटीकायांचातुर्वर्ण्याचारोनाम प्रथमोऽध्यायः॥ १ ॥

अतःपरंगृहस्थस्यकर्माचारं कलौयुगे ॥
धर्मसाधारणं शक्त्या चातुर्वर्ण्याश्रमागतम् ॥ १ ॥

पहिले अध्याय में विशेष और साधारण धर्म कहे, अब दूसरे अध्याय में ग्रन्थकार प्रतिज्ञा करते हैं कि इसके अनन्तर गृहस्थका जो आचरण कलियुग में चारोंवर्णों के क्रमसे ( पूर्व २ कलियुगों में जो चारों वर्णोंका क्रमपूर्वक ) चला आया है ॥ १ ॥

तं प्रवक्ष्याम्यहंपूर्वं पराशरवचो यथा ॥
षट्कर्मसहितोविप्रः कृषिकर्म च कारयेत् ॥ २ ॥

उसे और शक्ति अर्थात् समार्थ्य के न्युन वा अधिक होने से जो साधारण धर्म होता है उसे भी मैं उसी भांति कहूंगा, कि जैसे पहिले पराशर का वचन है ( प्रथमोध्यायमें उक्त ) छओं कर्म सहित ब्राह्मण को खेती भी करानी चाहिये ॥ २ ॥

क्षुधितं तृषितं श्रांतं बलीवर्दंनयोजयेत् ॥
हीनांगंव्याधितंक्लीवं वृषंविप्रोनवाहयेत् ॥ ३ ॥

भूखे, प्यासे, और थके हुए बैल को जुए में न जोते, जो बैल अंगहीन हो अथवा रोगी हो तथा क्लीव ( बधिया किया ) हो उसे तो हलमें बाधना ही न चाहिये ॥ ३ ॥

स्थिरांगं नीरुजं दृप्तं सुनर्दं षंढ वर्जितम् ॥
वाहयेद्दिवसस्यार्द्धं पश्चात्स्नानंसमाचरेत् ॥ ४ ॥

जिस बैलके अंग दृढहो, रोग रहित हो दर्पसे भराहो डकारें मारता हो, बधिया न हो इस भांति के बैल को आधा दिन जोते पीछे स्नान करे ॥ ४ ॥

जप्यंदेवार्चनंहोमं स्वाध्यायं चैवमभ्यसेत् ॥
एकद्वित्रिचतुर्विप्रान्भोजयेत्स्नातकान्द्विजः ॥ ५ ॥

द्विजों को चाहिये कि जप देवपूजन, होम, और वेदका अध्ययन प्रतिदिन करे एक, दो, तीन, वा चार ब्राह्मण ब्रह्मचारियों को भोजन करावे ॥ ५ ॥

स्वयंकृपेतथाक्षेत्रे धान्यैश्चस्वयमर्जितैः ॥
निर्वपेत्पंचयज्ञांश्च क्रतुदीक्षां चकारयेत् ॥ ६ ॥

अपने जोते खेत में अपने कमाने से, जो अन्न हो उनसे पंच यज्ञ (बलिवैश्व देव आदिक) और बडे यज्ञों को भी करावे ॥ ६ ॥

तिलांरसानविक्रेया विक्रेयाधान्यतस्समाः ॥
विप्रस्यैवविधावृत्ति स्तृणकाष्ठादिविक्रयः ॥ ७ ॥

तिल और रस (घी तेल आदि) कभी न बेचे यदि बेचे तो अन्न से बदलाकरले ब्राह्मण की वृत्ति ऐसी होती है, तृण और काठ आदिकोंका विक्रय करलेवे ॥ ७ ॥

ब्राह्मणश्चेत्कृषिं कुर्यात्तन्महादोषमवाप्नुयात् ॥
अष्टागवंधर्महलं षड्गवंवृत्तिलक्षणम् ॥ ८ ॥

ब्राह्मण खेति करे, तो उसको बडा दोष लगता है, आठ बैलका हल धर्म हल होता है और छ बैलों से वृत्तिके अर्थ ॥ ८ ॥

चतुर्गवंनृशंसानां द्विगवंगोजिघांसुवत् ॥
द्विगवंवाहयेत्पादं मध्यान्हेतुचतुर्गवम् ॥ ९ ॥

चार बैलों से निर्दयी लोगोंका और दो बैलों से गौकी हत्या करने हारों का सा होता है। दो बैलों का हल पहर भर जोतना चाहिये चार बैलोंका दो पहर तक ॥ ९ ॥

षड्गवंतुत्रिया मा ह्यष्टभिःपूर्णंतुवाहयेत् ॥
नाप्नोतिनरकेष्वेवं वर्त्तमानस्तुवैद्विजः ॥ १० ॥

छ बैलों का तीन पहर तक और आठ बैलों से पूरे दिनभर जोते। इस भांति जो द्विज वर्ताव कर्ता है वह नरक में नहीं जाता ॥१०॥

दानंदद्याच्चवैतेषां प्रशस्तस्वर्गसाधनम् ॥
संवत्सरेणयत्पापं मत्स्यघातीसमाप्नुयात् ॥ ११ ॥

दान भी देवै तो उन कर्षकों का यह अत्युत्तम स्वर्गसाधन होता

है । जो पाप मछली मारने वाले को बरस भर में होता है ॥ ११ ॥

अयोमुखेनकाष्ठेन तदेकाहेनलांगली ॥
पाशकोमत्स्यघाती च व्याधःशाकुनिकस्तथा ॥१२॥

उतना लोहे जडे हुए काठ हल से एकही दिन में हल जोतने वाले को होता है । फांसी देने हारा, मछली मारने वाला, व्याधा, (शिकारी) चिडीमार ॥ १२ ॥

अदाताकर्षकश्चैव पंचैतेसमभागिनः ॥
कंडनीपेषणीचुल्ली उदकुंभीचमार्जनी ॥ १३ ॥

और जो अदाता खेतिहर हैं यह पांचों तुल्य पाप भागी होते हैं ओखली, चक्की, चुल्ही, पानीका घडा, मार्जनी (झाडू) ॥ १३ ॥

पंचसूनागृहस्थस्य अहन्यहनिवर्त्तते ॥
वैश्वदेवोवलिर्भिक्षा गोग्रासोहंतकारकः ॥ १४ ॥

ये पांचों हत्याके स्थान गृहस्थको प्रतिदिन होते हैं । वैश्वदेव बलि, भिक्षा, गोग्रास, और हंतकार ॥ १४ ॥

गृहस्थःप्रत्यहंकुर्यात्सूनादोषैर्नलिप्यते ॥
वृक्षंछित्वामहींभित्वा हत्वाचकृमिकीटकान् ॥ १५ ॥

प्रतिदिन गृहस्थ करे, ते उसे पूर्वोक्त हत्याके दोष नहीं लगते वृक्षको काट पृथिवी को फाड और कृमि कीटों को मार कर ॥ १५ ।

कर्षकःखलयज्ञेन सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
योनदद्याद्द्विजातिभ्यो राशिमूलमुपागतः ॥ १६ ॥

खेतिहारखल यज्ञके द्वारा सब पापों से छूटजाता है । अन्नकी राशी पर आये हुये द्विजोको नहीं देता ॥ १६ ॥

सचौरःसचपापिष्ठो ब्रह्मघ्नंतंविनिर्दिशेत् ॥
राज्ञेदत्वातुषड्भागं देवानांचैकविंशकम् ॥ १७ ॥

वह पापी, चोर, और ब्रह्मघाती कहाता है। राजाको छठा भाग और देवतों को इक्कीसवां ॥ १७ ॥

विप्राणांत्रिंशकंभागं सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥
क्षत्रियोपिकृषिंकृत्वा देवान्विप्रांश्चपूजयेत् ॥ १८ ॥

और ब्राह्मणों को तीसवां भाग देकर सब पापों से मुक्त होता है। क्षत्री भी खेती करके देवता और ब्राह्मणों की पूजा करै ॥ १८ ॥

वैश्यः शूद्रस्तथाकुर्यात्कृषिवाणिज्यशिल्पकम् ॥
विकर्मकुर्वतेशूद्राः द्विजशुश्रूषयोज्झिताः ॥ १९ ॥

वैश्य तथा शूद्र भी खेती, वाणिज्य, और शिल्प ( कारीगरी ) करें, जो शूद्र ब्राह्मण की शुश्रूषा ( सेवा ) छोडदेते हैं व अपने कर्म से विरुद्धकर्म करनेहारे होते हैं ॥ १९ ॥

भवंत्यल्पायुषस्तेवै निरयंयांत्यसंशयम् ॥
चतुर्णामपिवर्णानामेषधर्मः सनातनः ॥ २० ॥

इति पाराशरीयेधर्मशास्त्रे गृहस्थधर्माचारो नामद्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

वे थोड़े दिन जीते हैं और निश्चय करके नरक में जाते हैं। यह धर्म चारों वर्णों का सनातन से चला आता है ॥ २० ॥

इति० द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अतः शुद्धिंप्रवक्ष्यामिजननेमरणेतथा ॥
दिनत्रयेणशुद्ध्यंतिब्राह्मणाः प्रेतसूतके ॥ १ ॥

अब जन्म और मरण में जितने दिनों करके शुद्धि होती है सो कहूंगा मरणाशौच में ब्राह्मण लोग तीन दिनमें शुद्ध होते हैं ( समानोदकों के मरण में यह शुद्धि जाननी ) ॥ १ ॥

क्षत्रियोद्वादशाहेनवैश्यः पंचदशाहकैः ॥
शूद्रः शुद्ध्यतिमासेन पराशरवचोयथा ॥ २ ॥

क्षत्री बारह दिनमें वैश्य पन्द्रह दिनमें और शूद्र महीने भरमें शुद्ध पराशर के वचनानुसार होताहै ( सपिण्डों के मरणमें यह शुद्धि जानना ) ॥ २ ॥

उपासनेतुविप्राणामंगशुद्धिश्चजायते ॥
ब्राह्मणानांप्रसूतौतुदेहस्पर्शोविधीयते ॥ ३ ॥

अग्निहोत्र आदि कर्मों की उपासना के लिये तो उतने समय तक ब्राह्मणोंका अंग शुद्ध हो जाता है ( आशौचमें भी अग्नि होत्रादि करसक्ते हैं ) और प्रसूति अर्थात् जनना शौच में ब्राह्मणों का शरीर स्पर्श करने में कुछ दोष नहीं ॥ ३ ॥

जातौविप्रोदशाहेनद्वादशाहेनभूमिपः ॥
वैश्यः पंचदशाहेनशूद्रोमासेनशुद्ध्यति ॥ ४ ॥

पुत्र आदि के जन्म होने में ब्राह्मण दस दिनों में, क्षत्रिय १२ दिनों में, वैश्य १५ दिनों में और शूद्र एक महीना में शुद्ध होता है ॥ ४ ॥

एकाहाच्छुद्ध्यतेविप्रोयोऽग्निवेदसमन्वितः ॥
त्र्यहात्केवलवेदस्तुद्विहीनोदशभिर्दिनैः ॥ ५ ॥

जो ब्राह्मण अग्निहोत्र कर्त्ता हो और वह भी पढाहो वह एकही दिन में शुद्ध होताहै । केवल वेदही पढें हो तो तीन दिनों में और जो दोनों से रहित हो वह दस दिनों में शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥

जन्मकर्मपरिभ्रष्टः संध्योपासनवर्जितः ॥
नामधारकविप्रस्तु दशाहंसूतकीभवेत् ॥ ६ ॥

जो ब्राह्मण जन्म प्रभृति अपने कर्मों से परिभ्रष्ठ हो संध्योपासन भी न कर्ताहो और नाम मात्रका ही ब्राह्मण कहलाताहो उसे दस दिन अशौच लगता है ॥ ६ ॥

अजागावोमहिष्यश्च ब्राह्मणीनवसूतका ॥
दशरात्रेण शुद्ध्येत भूमिस्थंचनवोदकम् ॥ ७ ॥

बकरी, गौ, भैंस, और ब्राह्मणी ये सब नवप्रसूता हों तो दस दिनों में शुद्ध होते हैं तथा नया पानी बरसा हो और भूमिपर पड़ाहो वह भी दस दिनों में शुद्ध होताहै ॥ ७ ॥

एकपिंडास्तुदायादाः पृथग्दारनिकेतनाः ॥
जन्मन्यपिविपत्तौच तेषांतत्सूतकं भवेत् ॥ ८ ॥

जो सपिंड है ( एकही पुरुषसे उत्पन्न है ) परन्तु भिन्न जाती की स्त्री से जन्म हुये हैं वेदायाद कहलाते हैं उन्हे भी जन्म और मरणमें अपने पिताकासा आशौच होता है ॥ ८ ॥

तावत्तत्सूतकंगोत्रे चतुर्थपुरुषेणतु ॥
दायाद्विच्छेदमाप्नोतिपंचमोवात्मवंशजः ॥ ९ ॥

इनदायादों की सपिण्डता तीन पुरुष तक रहती है और उतनेही तक यह गोत्र का आशौच भी उन्हे रहता है चौथे पुरुष में उनकी दायादता छूटजाती है अर्थात् आदि पुरुष से पांचवां दायाद नहीं रहता है ॥ ९ ॥

चतुर्थेदशरात्रं स्यात्षण्निशाः पुंसिपंचमे ॥
षष्ठेचतुरहाच्छुद्धिः सप्तमेतुदिनत्रयात् ॥ १० ॥

चौथे तक दस दिन का आशौच पांचवें में छः दिन, छठे में चार दिन और सातवें में तीन दिनका आशौच होता है ॥ १० ॥

भृग्वग्निमरणेचैव देशांतरमृतेतथा ॥
बालेप्रेतेचसन्यस्तेसद्यः शौचविधीयते ॥ ११ ॥

पहाड से गिरकर, अग्नि से जलकर, परदेस में, जन्म काल ही में, और सन्यास लेकर जिसका मरण होवै उसका आशौच उसी क्षण स्नान करने से निवृत्त हो जाता है ॥ ११ ॥

देशांतरमृतः कश्चित्सगोत्रः श्रूयतेयदि ॥
नत्रिरात्रमहोरात्रं सद्यः स्नात्वाशुचिर्भवेत् ॥ १२ ॥

यदि कोई देशांतर में अपना सपिंड मरजावे और वर्षदिन के अनन्तर सुनै तो उसका त्रिरात्र आदि नहीं लगता स्नान करके उसीक्षण शुद्ध हो जाता है ॥ १२ ॥

देशांतरगतोविप्रः प्रवासात्कालकारितात् ॥
देहनाशमनु प्राप्तस्तिथिर्नज्ञायतेयदि ॥ १३ ॥

कोई ब्राह्मण परदेश में कालको प्राप्त हो गया और उसके मरण की तिथि न ज्ञात हो तो ॥१३॥

कृष्णाष्टमीत्वमावस्या कृष्णाचैकादशीचया ॥
उदकंपिण्डदानंचतत्र श्राद्धं च कारयेत् ॥ १४ ॥

कृष्णपक्ष की अष्टमी अमावस और एकादशी को उसका पिण्डोदक दान करनाँ तथा श्राद्धभी करना चाहिये ॥ १४ ॥

अजातदन्तायेबाला ये च गर्भाद्विनिः सृताः ॥
नतेषामग्नि संस्कारो न शौंचं नोदकक्रिया ॥ १५ ॥

जिन बालकों को दांत जमा न हो और जो गर्भ से निकलेहीहों उनके मरणे पर अग्निदाह, आशौच और जलदानादिक नहीं होते १५

यदिगर्भोविपद्येतस्रवेत्वापियोषितः ॥
यावन्मासस्थितोगर्भो दिनंतावत्तुरूपकम् ॥ १६ ॥

यदि किसी स्त्रीका गर्भपतन हो अथवा गर्भस्राव हो तो जितने महीने का वह गर्भ हो उतनेही दिन उसका सूतक जानना १६

आचतुर्थाद्भवेत्स्रावः पातः पंचमषष्ठयोः ॥
अतऊर्ध्वंप्रसूतिः स्याद्दशाहंसूतकंभवेत् ॥ १७ ॥

चार महीने तक गर्भ गिरे तो उसे स्राव कहते हैं पांचवें वा छठे मासमें गिरे तो उसे पात बोलते हैं इसके उपरान्त गिरे तो वह प्रसव ही गिना जाता है उसका सूतक दस दिनों तक होता है ॥ १७ ॥

दंतजातेनुजातेचकृतचूडेचसंस्थिते ॥
अग्निसंस्कारणे तेषांत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ १८ ॥

दांत जमा हो वा न जमा हो और उसके मरणे पर यदि उसे अग्निदाह करें तो सपिंडों को तीनदिनों का आशौच होता है इसी.

भांती चौल अर्थात् मुंडन होने पर जो बालक मरे उसका भी तीन दिन आशौच होता है ॥ १८ ॥

आदंतजन्मनः सद्य आचूडान्नैशिकीस्मृता: ॥
त्रिरात्रमाव्रता देशाद्दशरात्र मतः परम् ॥ १९ ॥

दांत जमने तक उसी छन उससे उपरांत चौल होने तक एक दिन चौल होने पर व्रतबंध होनेताई तीनदिन और व्रतबंध होने पर दसदिन का आशौच होता है ॥ १९ ॥

ब्रह्मचारी गृहे येषां हूयते च हुताशने ॥
सम्पर्कंचेन्नकुर्वन्ति न तेषां सूतकंभवेत् ॥ २० ॥

ब्रह्मचारी को और जिसके ग्रह में अग्निहोत्र होता हो उन्हें जन्म और मरणका आशौच नहीं लगता यदि आशौच वालों से खाने पीने बैठने का संसर्ग न रक्खे तो ॥ २० ॥

संपर्काद्दुष्यतेविप्रो जननेमरणेतथा ॥
संपर्काच्चनिवृत्तस्य नप्रेतंनैवसूतकम् ॥ २१ ॥

जन्म अथवा मरण में ब्राह्मण संपर्कही से दोष भागी होता है यदि संपर्क न करे तो उसे सूतक वा प्रेताशौच नहीं लगता है ।२१।

शिल्पिनः कारुकावैद्यादासीदासाश्चनापिताः ॥
राजानः श्रोत्रियाश्चैवसद्यः शौचाःप्रकीर्त्तिताः ॥ २२ ॥

शिल्पी ( चितेरा आदि ) कारुक ( रसोइयाप्रभृति ) वैद, दासी, दास, नाई, राजा, और श्रोत्रिय ( वेद पाठी ) इन सबों का आशौच शुद्धि उसीछन हो जाता है ॥ २२ ॥

सव्रतोमंत्र पूतश्च आहिताग्नि श्चयोद्विजः ॥
राज्ञश्चसूतकंनास्ति यस्यचेच्छति पार्थिवः ॥ २३ ॥

किसी व्रतको करनेवाला, सत्र अर्थात् यज्ञ से पवित्र हुआ और अग्निहोत्र करनेहारा जो द्विज हो उसे और राजाओं को सूतक नहीं होता तथा जिसे राजा चाहै उसे भी सूतक नहीं होता है ॥ २३ ॥

उद्यतोनिधनेदान आर्तोविप्रोनिमंत्रितः ॥
तथैव ऋषिभिर्दृष्टं यथाकालेनशुद्ध्याति ॥ २४ ॥

मरने पर उद्यत हुआ, और दान करने में उद्यत, जो आर्त ( व्याधि आदिसे पीडित ) हो, और नवता हुआ ब्राह्मण इन्हें भी ऋषियों ने कहा है कि उस अपने अपने कार्य समय में शुद्ध हो जाते हैं ॥२४॥

प्रसवेगृहमेधीतु न कुर्यात्संकरंयदि ॥
दशाहाच्छुध्यतेमातात्ववगाह्यपिताशुचिः ॥ २५ ॥

यदि गृहस्थ पुत्रादि के जन्म होने से प्रसूती का स्पर्श न करे तो पिता उसी क्षण स्नान करके शुद्ध हो जाता है और माता दस दिनों में शुद्ध होती है ॥ २५ ॥

सर्वेषांशावमाशौचं मातापित्रोस्तुसूतकम् ॥
सूतकंमातुरेवस्या दुपस्पृश्यपिताशुचिः ॥ २६ ॥

मरण में तो जितने उसके सपिंड हैं उन सबों को छूना न चाहिये और जन्म होने में केवल पिता और माता ही को न स्पर्श करना तिसमें भी पिता तो स्नान आचमन करनेकेअनन्तर स्पर्श योग्य हो जाता है परन्तु माता दस दिन तक बराबर अशुद्ध रहती है ॥२६॥

यदिपत्न्यां प्रसूतायां संपर्ककुरुते द्विजः ॥
सूतकंतुभवेत्तस्य यदिविप्रः षडंगवित् ॥ २७ ॥

स्त्री को प्रसव हो और ब्राह्मण उसको स्पर्श आदि कर ले तो चाहे वह वेद के षडंग ( शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त ज्योतिष, छन्द ) भी जानता हो तब भी दस दिन बराबर अशुद्ध रहेगा छूने योग्य न होगा ॥ २७ ॥

संपर्काज्जायतेदोषो नान्योदोषोस्तिवैद्विजे ॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन संपर्कंवर्जयेद्बुधः ॥ २८ ॥

संपर्क से द्विज को दोष होता है और दोष उसको नहीं है इस

हेतु बुधिमान् को चाहिये सर्वथा उस संपर्क से बचा रहे ॥ २८ ॥

विवाहोत्सवयज्ञेषु त्वंतरामृतसूतके ॥
पूर्वसंकल्पितंद्रव्यंदीयमानंनदुष्यति ॥ २९ ॥

विवाह, उत्सव, ( व्रतबंधादि ) और यज्ञ इनके मध्य यदि जन्म वा मरण हो जाय तो पहिले संकल्प किये हुये द्रव्योंको देने में दोष नहीं होता ॥ २९ ॥

अंतरातुदशाहस्य पुनर्मरणजन्मनी ॥
तावत्स्यादशुचिर्विप्रो यावत्तत्स्यादनिर्दशम् ॥ ३० ॥

यदि एक आशौच पडा हो और दस दिन के भीतर ही दूसरा जन्म अथवा मरण पुनः हो जावै तो पहिले आशौच में दस दिनो में ही उस दूसरे की भी शुद्धि हो जाती है कोई कोई इस वचन का अर्थ यों करते है कि जबतक बीचमें आपडे हुए दूसरे आशौच के दस दिन पूरे न होलें तबतक बराबर ब्राह्मण को अशुचि रहती है ॥ ३० ॥

ब्राह्मणार्थविपन्नानां वंदिगोग्रहणेतथा ॥
आहवेषुविपन्नाना मेकरात्रं स शौचकम् ॥ ३१ ॥

जिन्का मरण ब्राह्मण की रक्षा के निमित्त बंदी ( कैदी ) के छोड़ाने और गौ के छुडाने में हुआ हो तथा संग्राममें जो मरे हों उन्का एक दिन रात अशौच होता है ॥ ३१ ॥

द्वाविमौपुरुषौ लोके सूर्यमंडलभेदिनौ ॥
परिव्राड्योगयुक्तश्च रणेचाभिमुखोहतः ॥ ३२॥

ये दोनो पुरुष सूर्य का मंडल बेध कर स्वर्ग में जाते हैं एक योगकरने हारा संन्यासी और दूसरा जो रण में सन्मुख हो कर मरे ॥३२॥

यत्रयत्रहतः शूरःशत्रुभिः परिवेष्टितः ॥
अक्षयांल्लभतेलोकान् यदिक्लीबंनभाषते ॥ ३३ ॥

शूर मनुष्य चाहे जहां कहीं भी शत्रुओं के घेरा में पडकर मारा जावे तो उसे अक्षय लोक मिलते हैं परंतु यदि कातर वचन न बोला हो॥३३

संन्यस्तंब्राह्मणंदृष्ट्वास्थानाच्चलतिभास्करः ॥
एषमेमंडलंभित्वा परंस्थानंप्रयास्यति ॥ ३४ ॥

संन्यासी हुए ब्राह्मण को देख सूर्य कांप उठते हैं कि यह मेरा मण्डल बेध कर ब्रह्मलोक में जावेगा ॥ ३४ ॥

यस्तुभग्नेषुसैन्येषु विद्रवत्सु समंततः ॥
परित्रातायदागच्छेत्सचक्रतुफलंलभेत् ॥ ३५ ॥

सेनाओं के इधर उधर भागने पर उनकी रक्षा के लिये जो शूर सन्मुख होता है उसे यज्ञ करने का फल होता है ॥ ३५ ॥

यस्यच्छेदक्षतंगात्रं शरमुद्गरयष्टिभिः ॥
देवकन्यास्तुतंवीरं हरंतिरमयंतिच ॥ ३६ ॥

जिस वीर पुरुष के शरीर में बाण मुद्गर और लाठियों की चोट से घाव हो जाता है उसे देवताओं की कन्याएं ले जाकर विहार करती हैं ॥ ३६ ॥

देवांगनासहस्राणि शूरमायोधनेहतम् ॥
त्वरमाणाः प्रधावंति ममभर्त्तामभेतिच ॥ ३७ ॥

हजारों देवांगनाएं रण में मारे हुए शूर के निकट यों कहती हुई दौड़ कर आती हैं कि यह मेरा भर्ता है यह मेरा भर्ता है ॥३७॥

यंयज्ञसंघैस्तपसाचविप्राः स्वर्गैषिणोवात्रयथैवयांति ॥
क्षणेनयांत्येवहितत्रवीराः प्राणान्सुयुद्धेनपरित्यजंतः ॥ ३८

जिस स्वर्ग में सैकड़ों यज्ञ और तपस्या से स्वर्ग के अभिलाषी जिस भांति जाते हैं उसी भांति अच्छे युद्ध में प्राणदेकर वीरलोग भी वहां पर एकही छिन में जाते हैं ॥ ३८ ॥

जितेनलभ्यतेलक्ष्मीर्मृतेनापिसुरांगनाः ॥
क्षणध्वंसिनिकायेस्मिन्काचिंतामरणेरणे ॥ ३९ ॥

जीत हो तो संपदा मिले और मरणे से देवांगना मिलैं तो ऐसे रण में इस क्षण भंगी काया की कौन सी चिन्ता है ॥ ३९ ॥

ललाटदेशेरुधिरंस्रवच्चयस्याहवेतुप्रविशेच्चवक्त्रम् ॥
तत्सोमपानेनकिलास्यतुल्यंसंग्रामयज्ञेविधिवच्चदृष्टम् ४०

युद्धमें जिसके मस्तकसे रुधिर गिर कर मुख में पडता है तो वह उसके विधिवत् यज्ञ में सोमपान करने के तुल्य होता है ॥ ४० ॥

अनाथंब्राह्मणंप्रेतं येवहंतिद्विजातयः ॥
पदेपदेयज्ञफलमानुपुर्व्याल्लभंतिते ॥ ४१ ॥

जो द्विजातिलोग किसी अनाथ मरे हुए ब्राह्मणको दाह करने के लिये उठा ले जाते हैं तो वे जितने पांव चलते हैं उन हर एक में उन्हें यज्ञका फल होता जाता है ॥ ४१ ॥

नतेषामशुभंकिंचित्पापं वाशुभकर्मणां ॥
जलावगाहनात्तेषां सद्यःशौचंविधीयते ॥ ४२ ॥

उन भले काम करने हारोंको कोई अशुभ और पाप नहीं होता तथा जल में स्नान करने से उनकी शुद्धि भी वसी छिन हो जाती है ॥ ४२ ॥

असगोत्रमबंधुंचप्रेतीभूतंद्विजोत्तमं ॥
वहित्वाचदहित्वासप्राणायामेनशुद्ध्यति ॥ ४३ ॥

जो ब्राह्मण अपना सगोत्र और बंधु न हो उसे ले जाने और दाह करने ले तो एक प्राणायाम करने से शुद्धि होती है ॥ ४३ ॥

अनुगम्येच्छयाप्रेतंज्ञातिमज्ञातिमेववा ॥
स्नात्वासचैलंस्पृष्ट्वाग्निंघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ ४४ ॥

अपनी इच्छा से यदि किसी जाति अथवा परजाति के मुर्दे के पीछे जावे तो वस्त्र समेत स्नान करके अग्नि का स्पर्श करे और उस दिन घी खाकर रहे तब शुद्ध होता ॥ ४४ ॥

क्षत्रियंमृतमज्ञानाद्ब्राह्मणोयोनुगच्छति ॥
एकाहमशुचिर्भूत्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ ४५ ॥

जो ब्राह्मण अज्ञान से किसी मरे हुए क्षत्रिय के पीछे जाता है वह एक दिन रात अशुद्ध रहता है और दूसरे दिन पंचग व्य खाने से शुद्ध होता है ॥ ४५ ॥

शवंचवैश्यमज्ञानाद्ब्राह्मणोह्यनुगच्छति ॥
कृत्वाशौचंद्विरात्रंच प्राणायामान्षडाचरेत ॥ ४६ ॥

मरे हुए वैश्य के पीछे यदि अज्ञान से ब्राह्मण जावे तो दो दिन आशौच करके छः प्राणायाम करे तब शुद्ध होता है ॥ ४६ ॥

प्रेतीभूतंतुयःशूद्रं ब्राह्मणोज्ञानदुर्बलः ॥
अनुगच्छेन्नीयमानंत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ ४७ ॥

जो अज्ञानी ब्राह्मण मरे हुए शूद्रके पीछे जाता है वह तीन दिन अशुचि रहता है ॥ ४७ ॥

त्रिरात्रेतुततःपूर्णेनदींगत्वासमुद्रगाम् ॥
प्राणायामशतंकृत्वा घृतंप्राश्यविशुद्धयति ॥ ४८ ॥

तीन दिन बीतने पर किसी समुद्र गामिनी नदी में जाकर सौ प्राणायाम करे और घी भोजन करे तो शुद्ध होता है ॥ ४८ ॥

विनिवर्त्यंयदाशूद्राः उदकांतमुपस्थिताः ॥
द्विजैस्तदानुगंतव्याएषधर्मःसनातनः ॥ ४९ ॥

जब शूद्र लोग दाह करके किसी जलाशय के निकट लौट आवें तब उनके पास ब्राह्मण प्रभृति जावें यह सनातन धर्म है ॥४९॥

तस्माद्द्विजोमृतंशूद्रं नस्पृशेन्नचदाहयेत् ॥
दृष्टेसूर्यावलोकेनशुद्धिरेषापुरातनी ॥ ५० ॥

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे जननमरण सूतकादि
शुद्धिर्नाम तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

इस लिये द्विज लोग मरे हुए शूद्रको न छूवें और न जलावें और देखलें तो भी सूर्य की और ताकने से शुद्ध होते हैं यही रीति पुरातन है ॥ ५० ॥

इति श्रीतृतीयो ध्यायः ॥ ३ ॥

---

अतिमानादतिक्रोधात्स्नेहाद्वायदिवाभयात् ॥
उद्बध्नीयात्स्त्रीपुमान्वा गतिरेषाविधीयते ॥ १ ॥

यदि कोई पुरुष अथवा स्त्री अपने मानकी हानि से, अत्यन्त क्रोध से बडे प्रेम से, और अति भयसे आत्मवध करे (मरजावे) तो उसकी गति यह होती है ॥ १ ॥

पूयशोणितसंपूर्णे त्वंधतमसिमज्जति ॥
षष्ठिवर्षसहस्राणि नरकंप्रतिपद्यते ॥ २ ॥

कि पीव और रक्त से भरे हुए अन्धतामसनामी नरक में साठ हजार बरस तक पड़ा रहता है ॥ २ ॥

नाशौचंनोदकंनाग्निं नाश्रुपातंचकारयेत् ॥
वोढारोग्निप्रदातारः पाशच्छेदकरास्तथा ॥ ३ ॥

उक्त प्रकार से मरने हारे का आशौच, उदकदान, और दाह कर्म, नकरे तथा उसके अर्थ रोदन भी न करे उनके लेजाने, दाह करने, और बन्धन काटने हारों की ॥ ३ ॥

ततकृच्छ्रेणशुद्ध्यंती त्येवमाहप्रजापतिः ॥
गोभिर्हतंतथोद्बद्धंब्राह्मणेनतुघातितम ॥ ४ ॥

शुद्धि तप्तकृच्छ्रव्रत से होती है ऐसा प्रजापति कहते हैं । गौओं से मारा हुआ, अपने से मेरा हुआ, (जैसा पहिले कहआए हैं अति क्रोधादि से) और ब्राह्मणों करके मारा हुआ जो हो ॥ ४ ॥

संस्पृशंतितुयेविप्रावोढारश्चाग्निदाश्चये ॥
अन्येयेचानुगंतारः पाशच्छेदकराश्चये ॥ ५ ॥

उसे जो कोई ब्राह्मण छूवें, उठाकर ले जावें, दाह करें, और उसकी रथी के पीछे चलैं अथवा गलेका बंधन काटें तो ॥ ५ ॥

तप्तकृच्छ्रेणशुद्धास्ते कुर्युर्ब्राह्मणभोजनम् ॥
अनडुत्सहितांगांच दद्युर्विप्रायदक्षिणाम् ॥ ६ ॥

वे तप्तकृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होकर ब्राह्मण भोजन करावें और वृषभ सहित गौ ब्राह्मण को दक्षिणा देवें ॥ ६ ॥

त्र्यहमुष्णंपिवेद्वारित्र्यहमुष्णंपयःपिवेत् ॥
त्र्यहमुष्णंपिवेत्सर्पि र्वायुभक्षोदिनत्रयम् ॥ ७ ॥

तप्तकृच्छ्रव्रत यों होता है कि पहिले तीन दिन उष्णजल पीकर रहे उसके अनन्तर तीन दिन उष्ण दूध पीवे, पुनः तीन दिन तप्त घी पीवे उसके पीछे तीन दिन कुछ न खावे ऐसे बारह दिन में यह व्रत होता है ॥ ७ ॥

षट्पलंतुपिवेदंभः त्रिपलंतुपयः पिवेत ॥
पलमेकंपिवेत्सर्पिस्तप्तकृच्छ्रंविधीयते ॥ ८ ॥

( ऊपर जो उष्णआदि पीने की कहा है उसका तोल यह है) कि २४ तोले जल पीना, १२ तोले दूध और ४ तोले घी पीना तब तप्त कृच्छ्र होता है ) ॥ ८ ॥

योवैसमाचरद्विप्रः पतितादिष्वकामतः ॥
पंचाहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा ॥ ९ ॥

जो ब्राह्मण पतितादिकों के साथ अनिच्छा पूर्वक ५।१० अथवा १२ दिनों तक रहे ॥ ९ ॥

मासार्द्धमासमेकंवामासद्वयमथापिवा ॥
अब्दार्द्धमब्दमेकंवाभवेदूर्ध्वंहितत्समः ॥ १० ॥

वा १५ दिनों तक अथवा १।२। वा ६ मास तक रहे वा एक वर्ष तक रहे तो वक्ष्यमाण प्रायश्चित्त करे यदि वर्ष दिन से अधिक साथ रहे तो उन्ही के तुल्य हो जाता है ॥ १० ॥

त्रिरात्रंप्रथमेपक्षेद्वितीयेकृच्छ्रमाचरेत् ॥
तृतीयेचैवपक्षेतुकृच्छ्रंसांतपनंभवेत् ॥ ११ ॥

इन आठों प्रकार के संसर्गका प्रायश्चित्त क्रमसे यों जानना कि त्रिरात्र कृच्छ्र, कृच्छ्रसान्त पन, ॥ ११ ॥

चतुर्थेदशरात्रंस्यात्पराकः पंचमेमतः ॥
कुर्याच्चांद्रायणंषष्ठेसप्तमेत्वैंदवद्वयम् ॥ १२ ॥

दशरात्र, पराक, चांद्रायण, दो ऐन्दव ॥ १२ ॥

शुद्ध्यर्थमष्टमेचैव षण्मासान्कृच्छ्रमाचरेत् ।
पक्षसंख्याप्रमाणेन सुवर्णान्यपिदक्षिणा ॥ १३ ॥

और छः महीने तक कृच्छ्रव्रत करना पडता है और दक्षिणाभी इन में क्रम से पहिले में एक दूसरे में दो सुवर्ण ( मोहर ) इसी भांती एक सुवर्ण अधिक करके ब्राह्मण को दी जाती है ॥ १३ ॥

ऋतुस्नातातुयानारी भर्तारंनोपसर्पति ॥
सामृतानरकंयातिविधवाचपुनः पुनः ॥ १४ ॥

जो स्त्री ऋतु स्नाता ( रजस्वला स्नान कर चुकी ) हो और अपने पति के पास नजावे तो वह मरने पर नरक में पडती और बारम्बार विधवा भी होती है ॥ १४ ॥

ऋतुस्नातांतुयोभार्यांसन्निधौनोपगच्छति ॥
घोरायांभ्रूणहत्यायां युज्यतेनात्रसंशयः ॥ १५ ॥

जो पुरुष निकट रहकर भी अपनी ऋतु स्नाता स्त्री के पास नहीं जाता उसे बडी भारी गर्भ हत्या होती है इस में कुछ सन्देह ही नहीं ॥ १५ ॥

दरिद्रंव्याधितंधूर्त्तंभर्तारंयानमन्यते ॥
साशुनीजायतेमृत्वासूकरीचपुनः पुनः ॥ १६ ॥

जो स्त्री अपने दरिद्र रोगी अथवा धूर्त पति का भी अपमान करे तो वह मरकर कुत्ती और सूकरी बारंबार होती है ॥ १६ ॥

पत्यौजीवतियानारी उपोष्यव्रतमा चरेत् ॥
आयुष्यंहरतेभर्त्तुः सानारीनरकंव्रजेत् ॥ १७ ॥

पतिके जीते ही जो नारी उपवासकरके व्रत करती है वह अपने पतिकी आयुष्य की हानि करती है ॥ १७ ॥

अपृष्ट्वैवभर्त्तारं यानारीकुरुतेव्रतम् ॥
सर्वंतद्राक्षसान्गच्छेदित्येवंमनुरब्रवीत् ॥ १८ ॥

जो स्त्री अपने पतिके बिना पूछे ही व्रत करती है उसका सब फल राक्षसोंहीको होता है ऐसा मनुने कहा है ॥ १८ ॥

बांधवानांसजातीनांदुर्वृत्तंकुरुतेतुया ॥
गर्भपातंचयाकुर्यान्नतांसंभाषयेत्क्वचित् ॥ १९ ॥

जो स्त्री अपने कुटुंब और जातिकी बडी भारी हानि करे और औषध प्रभृति के द्वारा गर्भ पात करे उससे बोलना कभी न चाहिये ॥ १९ ॥

यत्पापंब्रह्महत्याया द्विगुणंगर्भपातने ॥
प्रायश्चित्तंनतस्यास्तितस्यास्त्यागोविधीयते ॥ २० ॥

ब्रह्महत्यासे दूना पाप गर्भ पातन करने में होता है और उसका प्रायश्चित्त अर्थात् शोध भी नहीं होसकता इसहेतु ऐसी स्त्रीका त्याग ही करना विहित है ॥ २० ॥

नकार्यमावसथ्येननाग्निहोत्रेणवापुनः ॥
समवेत् कर्मचांडालोयस्तुधर्मपराङ्मुखः ॥ २१ ॥

जो मनुष्य धर्म से विमुख है उसके आवसथ्य और अग्निहोत्र करने से क्या होता है अर्थात् कुछ सिद्ध नहीं वह कर्मचाण्डाल कहाता है ॥ २१ ॥

ओघवाताहृतंवीजं यस्यक्षेत्रेप्ररोहति ॥
सक्षेत्रीलभतेवीजंनबीजोत्ताभागमर्हति ॥ २२ ॥

जल और वायु के वेग से यदि कोई वीज लुड़क कर कहीं दूसरे के खेत में जा जमे तो उस खेत का स्वामी ही उस वीज को लेता है न कि उस वीज के स्वामी को भी भाग मिलता है ॥ २२ ॥

तद्वत्परस्त्रियाःपुत्रौद्वौसुतौकुंडगोलकौ ॥
पत्यौजीवतिकुंडश्तुमृतेभर्तरिगोलकः ॥ २३ ॥

इसी भांति पर स्त्री को भी कुण्ड और गोलक दो पुत्र होते हैं भर्ता जीता रहे उस समय उपपति से जो पुत्र उत्पन्न हो उसे कुंड और पतिके मरने पर जो उपजे उसे गोलक कहते हैं ॥ २३ ॥

औरसःक्षेत्रजश्चैव दत्तःकृत्रिमकःसुतः ॥
दद्यान्मातापितावायं सपुत्रोदत्तकोभवेत् ॥ २४ ॥

औरसे, ( अपनी सजातीय भार्या में उत्पन्न क्षेत्रज, दत्तक, और कृत्रिम इतने प्रकारके पुत्र होते हैं जिस पिता वा माता किसी को दे वही दत्तक पुत्र होता है ॥ २४ ॥

परिवित्तिःपरिवत्ता यथाचपरिविद्यत ॥
सर्वेतेनरकंयांति दातृयाजकपंचमाः ॥ २५ ॥

परिवित्त, ( जिसके छोटे भाईने पहिले अपना व्याह कर लिया हो ) परिवेत्ता ( उसी परिवित्तका वह छोटा भाई ) और जिस कन्या को परिवेत्ता व्याहे, तथा उस कन्या का दाता और उसका व्याह कराने हारा ब्राह्मण ये पांचों नरक में जाते हैं ॥ २५ ॥

द्वौकृच्छ्रौपरिवित्तेस्तु कन्यायाःकृच्छ्रएवच ॥
कृच्छ्रातिकृच्छ्रौदातुस्तु होताचांद्रायणंचरेत् ॥ २६ ॥

परिवित्ति को दो कृच्छ्रव्रत करने चाहिये, कन्याको एक कृच्छ्र, दाता को कृच्छ्रव्रत करना होता है और व्याह कराने हारा चांद्रायण करे ॥ २६ ॥

कुब्जवामनषंढषुगद्गदजडपुच ॥
जात्यंधबधिरमूकतदोषःपरिविंदृत ॥ २७ ॥

जिसका जेठा भाई कुबड़ा, बौना, नपुंसक तोतला अज्ञानी (जड़) जन्मांध वधिर अथवा गूंगा होवे तो उसके छोटे भाई को पहिले व्याह करने से दोष नहीं होता है ॥ २७ ॥

पितृव्यपुत्रःसापत्नपरनारीसुतस्तथा ॥
दाराग्निहोत्रसंयोगेनदोषःपरिवेदने ॥ २८ ॥

चचेरे और सौतीले भाई को तथा दत्तकादि परनारी सुतों को जेठे भाई से पहिलेही व्याह और अग्निहोत्र करने में दोष नहीं है ॥ २८ ॥

ज्येष्ठोभ्रातायदातिष्ठ दाधानंनैव कारयेत् ॥
अनुज्ञातस्तुकुर्वीत शंखस्यबचयंनयथा ॥ २९ ॥

यदि जेठा भाई व्याह वा अग्निहोत्र करने की इच्छा न रखता हो और उसकी आज्ञा लेकर छोटा भाई अग्निहोत्र करने की इच्छा न रखता हो और उसकी आज्ञा लेकर छोटा भाई अग्निहोत्र आदि करले तो शंख के वचन हैं कि उसे दोष नहीं ॥ २९ ॥

नष्टेमृतेप्रव्रजिते क्लीवेचपतितेपतौ ॥
पंचस्वापत्सुनारीणां पतिरन्योविधीयते ॥ ३० ॥

जिसका पति नष्ट (अर्थात् जिसका बिदेश जाने आदिमे कहीं पताही न लगे) मृत प्रव्राजित, (संन्यासी) नपुंसक और पतित होवे इन पांच प्रकार की विपत्तियों में उस स्त्री को अन्यपति विहित ॥ ३० ॥

मृतेभर्तरियानारीब्रह्मचर्यव्रतस्थिता ॥
सामृतालभतेस्वर्गं यथातेब्रह्मचारिणः ॥ ३१ ॥

भर्ता के मरने पर जो स्त्री ब्रह्मचर्य वर्त करती हुई अपने दिनों को बिताती है वह मर कर ब्रह्मचारियों की भांति स्वर्ग में जाती है ॥ ३१ ॥

तिस्रः कोट्योर्द्धकोटीच यानिलोमानिमानवे ॥

तावत्कालंवसेत्स्वर्गे भर्त्तारंयानुगच्छति ॥ ३२ ॥

जो स्त्री अपने पति के मरने पर उसी के साथ प्राण त्याग करती है वह साढे तीन करोड़ अर्थात् जितने रोंगटे देह में है उतने बरस स्वर्ग में बास करती है ॥ ३२ ॥

व्यालग्राहीयथाव्यालं वलादुद्धरतेविलात् ॥
एवंस्त्रीपतिमुद्धृत्य तेनैवसहमोदते ॥ ३३ ॥

इतिपाराशरीयेधर्मशास्त्रे उदुवन्धनादिमृतशुद्धिर्नामचतुर्थोऽध्यायः॥४॥

जिस प्रकार सर्प पकडने हारे बिल के अन्दर से भी अपने करतब के बलसे सर्प बाहर खींच ही लेते हैं उसी भांति नीच स्थल में भी पडे हुए अपने पतिको सती स्त्री बाहर निकाल लेती और उसी के साथ विहरती है ॥ ३३ ॥

॥ इति चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

वृकश्वानशृगालादि दष्टोयस्तुद्विजोत्तमः ॥
स्नात्वाजपेत्सगायत्रीं पवित्रांवेदमातरम् ॥ १ ॥

जिस ब्राह्मणको वृक ( चीग अथवा बघयाड़ ) कुत्ता और शृगाल ( गीदड ) प्रभृतिने काट खाया होतो वह स्नान करके वेदकी माता गायत्री का जप करे ॥ १ ॥

गवांशृंगोदकस्नानान्महानद्योस्तुसंगमे ॥
समुद्रदर्शनाद्वापिशुनादष्टः शुचिर्भवेत् ॥ २ ॥

अथवा कुत्तेका काटा हुआ गौ के शृंगके जल से वा दो महानदों के संगम में स्नान करे किंवा समुद्रका दर्शन करे तोभी शुद्ध हो जाता है ॥ २ ॥

वेदविद्याव्रतस्नातः शुनादष्टोद्विजोयदि ॥
सहिरण्योदकैः स्नात्वाघृतंप्राश्यविशुद्ध्यति ॥ ३ ॥

यदि किसी ऐसे ब्राह्मणको कुत्ता काटे कि जो वेद और चौदहों विद्याओंको जानता हो तथा अच्छे २ व्रत किएहों तो वह सोना

धोकर उस पानी से नहाले और घी खाले इतने ही से शुद्ध होता है ॥ ३ ॥

सव्रतस्तुशुनादष्टोयस्त्रिरात्रमुपावसेत् ॥
घृतंकुशोदकंपीत्वाव्रतशेषंसमापयेत् ॥ ४ ॥

जो किसी व्रतको कररहा हो उस बीच उसे कुत्ता काटलेवे तो वह तीन दिन उपवास करे और घी तथा कुशोंकाजल पीवे अनन्तर उस अपने व्रतको जो शेष रहा हो उसे पूरा करे ॥ ४ ॥

अव्रतस्सुव्रतोवापिशुनादष्टोभवेद्द्विजः ॥
प्रणिपत्यभवेत्पूतोविप्रैश्चक्षुर्निरीक्षितः ॥ ५ ॥

चाहे व्रत वाला हो अथवा व्रत करने हारा न हो कैसाभी द्विज यदि कुत्तेसे काटा जाकर ब्राह्मणों को दण्डवत् करे और ब्राह्मण लोग उसे आंखभर देखदें तो वह शुद्ध हो जाता है ॥ ५ ॥

शुनाघ्राताऽवलीढस्य नखैर्विलिखितस्यच ॥
अद्भिः प्रक्षालनंप्रोक्तं मग्निनाचोपचूलनम् ॥ ६ ॥

जो वस्तु कुत्तेने सूंघ, चाट, अथवा नखोंसे खसोट ली हो उसको जल से धोकर आगमें सेक दे तो शुद्ध हो जाती है ॥ ६ ॥

ब्राह्मणीतुशुनादष्टा जंबुकेनवृकेणवा ॥
उदितंग्रहनक्षत्रंदृष्ट्वासद्यः शुचिर्भवेत् ॥ ७ ॥

जिस ब्राह्मणी को कुत्ते, गीदड़ अथवा बीगने काट लिया हो तो वह उगे हुए ग्रह अर्थात् चन्द्र वा नक्षत्र अर्थात् तारों का दर्शन करने से नसीहन शुद्ध हो जाती है ॥ ७ ॥

कृष्णपक्षेयदासोमोनदृश्येतकदाचन ॥
यांदिशंव्रजतेसोमस्तांदिशंचाऽवलोकयेत् ॥ ८ ॥

कदाचित् कृष्णपक्ष हो और चन्द्रमा न देखपडे तो जिस दिशा में चन्द्रमा जाते हों उस दिशाको देखलें ॥ ८ ॥

असद्ब्राह्मणकेग्रामेशुनादष्टोद्विजोत्तमः ॥

वृषंप्रदक्षणीकृत्यसद्यः स्नात्वाशुचिर्भवेत् ॥ ९ ॥

किसी ऐसे गांव में जब ब्राह्मणको कुत्ता काटे कि जहां दूसरा ब्राह्मण कोई न हो तो बैल की प्रदक्षिणा करस्नान करडाले झट शुद्ध हो जाता है ॥ ९ ॥

चाण्डालेनश्वपाकेन गोभिर्विप्रैर्हतोयदि ॥

आहिताग्निर्हतोविप्रो विषेणात्महतोयदि ॥ १० ॥

यदि कोई अग्निहोत्री ब्राह्मण चाण्डाल, ( ब्राह्मणी में से शूद्र जन्म हुआ ) श्वपाक, ( क्षत्ता में उग्रसे उत्पन्न ) गौ, अथवा ब्राह्मण द्वारा मारागया हो किंवा विष खा कर आपही मरगया हो तो ॥ १० ॥

दहेत्तंब्राह्मणंविप्रो लोकाग्नौमंत्रवर्जितम् ॥

स्पृष्ट्वावोढ्काचदग्ध्वाच सपिण्डेषुचसर्वदा ॥ ११ ॥

उसे उसके सपिण्डों में से कोई ब्राह्मण लौकिक अग्नि में बिना मंत्र पढ़े ही जलादेवे, स्पर्श, हवन, और दाह करने हारा सपिण्ड॥११॥

प्राजापत्यंचरेत्पश्चाद्विप्राणामनुशासनात् ॥

दग्ध्वास्थीनिपुनर्गृह्यक्षीरैः प्रक्षालयेद्द्विजः ॥ १२ ॥

ब्राह्मणों की आज्ञा से प्राजपत्य व्रतकरे । दाह करके पुनः वह द्विज उसकी हड्डियां लेकर दूध से धोवे ॥ १२ ॥

स्वेनाग्निनास्वमंत्रेण पृथगेतत्पुनर्दहेत् ॥

आहिताग्निर्द्विजः कश्चित्प्रवसन्कालचादितः ॥ १३ ॥

और अपनी अग्नि तथा अपने मंत्र से उन्हें पुनः अन्यत्र जलावो । यदि कोई अग्निहोत्री द्विज परदेश में जाकर काल वश से ॥ १३ ॥

देहनाशमनुप्राप्तः तस्याग्निर्वसतेगृहे ॥

प्रेताग्निहोत्रसंस्कारः श्रूयतांमुनिपुंगवाः ॥ १४ ॥

मरजावे और उसकी अग्नि उसके घर में हो तो उस मुर्दे और उसकी अग्निका संस्कार है श्रेष्ठ मुनियों आप सुनें ॥ १४ ॥

कृष्णाजिनंसमास्तीर्य कुशैस्तुपुरुषाकृतिम् ॥
षट्शतानिशतंचैव पलाशानांचबृंततः ॥ १५ ॥

काले मृगका चर्म फैलाकर उसपर कुशोंका पुरुषका सरूप बनाना कुशन मिले तो पलाशके सातसौ पत्तों में से ॥ १५ ॥

च्चत्वारिंशाच्छिरेदद्याच्छतंकंठेतुविन्यसेत् ॥
बाहुभ्यांदशकंदद्या दंगुलीषुदशैवतु ॥ १६ ॥

चालीस पत्ते सिर में देना, सौपत्ते गले में, दोनों बाहों में दस अंगुलीयों में दस ॥ १६ ॥

शतंतुजघनेदद्याद् द्विशतंतूदरेतथा ॥
दद्यादष्टौवृषणयोः पंचमेढ्रेतुविन्यसेत् ॥ १७ ॥

जघनमें सौ,दोसौ पेटमें, दोनों अंडोंमें आठ, लिंगमें पांच॥१७॥

एकविंशतितूरुभ्यां त्रिशतंजानुजंघयोः ॥
पादांगुलीषुदद्यात्षट् यज्ञपात्रंततोन्यसेत् ॥ १८ ॥

दोनों ऊरुओं में इक्कीस, जानु और जंघाओं में तीनसौ, और पांवकी अंगुलियों में छः पत्ते देवे तब यज्ञके पात्रोंको रक्खे ॥ १८ ॥

शम्यांशश्ने विनिक्षिप्य अरणींमुष्कयोरपि ॥
जुहूंचदक्षिणेहस्ते वामेतूपभृतंन्यसेत् ॥ १९ ॥

शम्याको लिंगके ऊपर, अरणी को अंडों के ऊपर, जुहूको दाहिने हाथ पर, उपभृतको बाएं हाथ पर ॥ १९ ॥

पृष्ठेतूलूखलंदद्यात्पृष्ठेचमुशलंन्यसेत् ॥
उरसिक्षिप्यदृषदं तंडुलाज्यतिलान्मुखे ॥ २० ॥

पीठ पर मुसल और उखल देवे, छाती पर दृषत् देवे, चांवल, घी, और तिलोंको मुंह में देवे ॥ २० ॥

श्रोत्रेचप्रोक्षणींदद्या दाज्यस्थालींचचक्षुषोः ॥

कर्णेनेत्रेमुखेघ्राणे हिरण्यशकलंन्यसेत् ॥ २१ ॥

कानों पर प्रोक्षणी पात्र देवे आंखों पर आज्यस्थाली, तथा कान, आंख, मुह, और नाक में सोनेका टुकड़ा देवे ॥ २१ ॥

अग्निहोत्रोपकरण मशेषंतत्राबिन्यसेत् ॥
असौस्वर्गायलोकाय स्वाहेत्येकाहुतिंसकृत् ॥ २२ ॥

सारा अग्नि होत्रका उपकरण वहां रखकर (असौस्वर्गाय-लोकायस्वाहा) ऐसा कहकर एकहीबार आहुती ॥ २२ ॥

दद्यात्पुत्रोथवाभ्राता ध्यन्योवापिच बांधवः ॥
यथादहनसंस्कार स्तथाकार्यंविचक्षणैः ॥ २३ ॥

पुत्र अथवा भ्राता देवे किंवा कोई दूसरा बांधव हो तो वह भी दे अनन्तर जैसा दाहका संस्कार होता है तैसा विज्ञजन करैं ॥२३॥

ईदृशंतुबिधिंकुर्यात् ब्रह्मलोकगतिः स्मृता ॥
दहंतियेद्विजा स्तंतु तेयांतिपरमांगतिम् ॥ २४ ॥

इस प्रकारकी विधि करने से ब्रह्मलोककी गति होती है जो ब्राह्मण उसकी दाह करते हैं वे परमगति को पाते हैं ॥ २४ ॥

अन्यथाकुर्वतेकर्म स्वात्मवुद्ध्याप्रचोदिताः ॥
भवंत्यल्पायुषस्तेवै पतंतिनरकेशुचौ ॥ २५ ॥

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

जो कोई अपनी बुद्धिकी कल्पना से अन्यथा कर्म करते हैं तो वे अल्पायु होते हैं और अति अपवित्र नरक में पड़ते हैं ॥ २५ ॥

इति श्री पंचमोऽध्याय ॥ ५ ॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामिप्राणिहत्यासुनिष्कृतिम् ॥
पराशरेणपूर्वोक्तां मन्वर्थेपिचविस्तृताम् ॥ १ ॥

अब जीवों की हत्या करने पर जिस प्रायश्चित्त से मनुष्य शुद्ध होता है सो मैं जैसा पराशर ने पाहिले कह रक्खा है और मनुवा

क्यों मैं भी विस्तार सहित हे कहता हूं ॥ १ ॥

क्रौंचसारसहंसाश्च चक्रवाकंचकुक्कुटम् ॥
जालपादंचशरभं हत्वाऽहोरात्रतःशुचिः ॥ २ ॥

क्रौंच, ( कूंज ) सारस हंस, चकई, चकवा, कुक्कुट, ( मुर्गा ) और जालपाद, ( जिनके पाद एक चर्म से जुडे होते अर्थात् वतक मुर्गाबियां इत्यादि ) तथा शरभ को मारे तो एक दिन रात उपवास करने से शुद्ध होता है ॥ २ ॥

वलाकाटिट्टिभौवापि शुकपारावतावपि ॥
अटी नवकघाती चशुद्ध्येतनक्तभोजनात् ॥३॥

बलाका, टिट्टिभ, तोता, पारावत ( पनडूब्बी ) अटीन, और बक को मारे तो रात में भोजन करने से शुद्ध होता है ॥ ३ ॥

वृककाककपोतानां सारीतित्तिरघातकः ॥
अंतर्जलउभेसंध्ये प्राणायामेनशुद्ध्यति ॥ ४ ॥

वृक ( बीग ) काक, कबूतर, सारी और तित्तिर को मारे तो सांझ सवेरे जल में प्राणायाम करने से शुद्ध होता है ॥ ४ ॥

गृध्रश्येनशशादीनामूलूकस्यचघातकः ॥
अपक्वाशीदिनंतिष्ठेत् त्रिकालंमारुताशनः ॥ ५ ॥

गिद्ध, बाज, शश, ( खरगोश ) और उल्लूको मारे तो पहिले दिन बिनपकी वस्तु खाकर रहे दूसरे दिन तीसरे पहर भोजन करे तीसरेदिन कुछभी न खावे तो शुद्ध होता है ॥ ५ ॥

वल्गुनीटिट्टिभानांच कोकिलाखंजरीट ॥
केलाविकारक्तपक्षेषुशुद्ध्येतनक्तभोजनात् ॥ ६ ॥

वल्गुनी, टिट्टिभी कोयल; खंजरीट, लाविका, ( बटेर ) और जिनके परलालहों उन्हें मारे तो रातको भोजन करनेसे शुद्ध होताहै॥६॥

कारंडवचकोराणां पिंगुलाकुररस्यच ॥

भारद्वाजादिकंहत्वा शिवंसंपूज्यशुद्ध्यति ॥ ७ ॥

कारंडव, चकोर, पिंगला, कुरर और भारद्वाजादि पक्षियोंको मारे तो शिवकी पूजा करने से शुद्ध होता है ॥ ७ ॥

भेरुंडचाषभासांश्च पारावतकपिंजलम् ॥
पक्षिणांचैवसैंवषांमहोरात्रमभोजनम् ॥ ८ ॥

भेरुंड, चाष, ( निलकंठ वा गरूड ) भास पारावत, और कपिंजलप्रभृति सबपक्षियों के मारने में एक दिनरात भोजन न करे ॥८॥

हत्वामूषकमार्जारसर्प्पाऽजगरडुंडुभान् ॥
कृसरंभोजयेद्विप्रान्लोहदंडंचदक्षिणाम् ॥ ९ ॥

चूहा, बिल्ली, सर्प अजगर और डुंडुम, ( पानी का सर्प ) मारे तो कृसरान्न ( तिल मूंग की खिचडी ) ब्राह्मणोंको खिलावे और लोहेका दंड दक्षिणा में देवे ॥ ९ ॥

शिशुमारंतथागोधांहत्वाकूर्मंचशल्लकम् ॥
वृंताकफलभक्षीचाप्यहोरात्रेणशुद्ध्यति ॥ १० ॥

शिशुमार ( ससु ) गोधा ( गोह ) कछुआ, और शल्लक (साही) को मारे तो एक उपवास करे अथवा वृंताकफल खाकर एक दिन रात रहे इतनेही से शुद्ध होता है ॥ १० ॥

वृकजंबुकऋक्षांश्चतरक्षूणांचघातकः ॥
तिलप्रस्थंद्विजेदद्या द्वायुभक्षोदिनत्रयम् ॥ ११ ॥

वृक जंबुक रीछ तरक्षु ( तरख ) को मारे तो एक प्रस्थतिल ब्राह्मण कोदे और तीन दिन उपवास करे ॥ ११ ॥

गजस्यचतुरगंस्यमहिषोष्ट्रनिपातने ॥
प्रायश्चित्तमहोरात्रं त्रिसंध्यमवगाहनम् ॥ १२ ॥

हाथी घोडा भैंसा और ऊंट के मारने से एक दिन रात व्रतकरे और तीनो संध्याओं में ( प्रातः सायं मध्यान्ह ) स्नानकरे ॥ १२ ॥

कुरंगवानरसिंहं चित्रंव्याघ्रंच घातयन् ॥
शुद्धयतेसत्रिरात्रेण विप्राणांतर्पणेनच ॥ १३ ॥

हरिन, वानर, सिंह, चित्ता, और बाघ को मारे तो तीन दिन को व्रत करे और ब्राह्मणों को तुष्ट करके भोजन करावे ॥ १३ ॥

मृगरोहिवराहाणामवेर्वस्तस्यघातकः ॥
अफालकृष्टमश्नीया दहोरात्रमुपोष्यसः ॥ १४ ॥

मृग, रोही, शूकर, भेंड, और बकरेको मारकर एकदिन उपवास दूसरे दिन वह अन्न खावै जो बिना जुती हुई धरती में उपजा हो तब शुद्ध होता है ॥ १४ ॥

एवंचतुष्पदानांच सर्वेषांवनचारिणाम् ॥
अहोरात्रोषितस्तिष्ठे ज्जपन्वैजातवेदसम् ॥ १५ ॥

इसी भांति सम्पूर्ण प्रकार के और जंगली चारपायों के मारने पर एक दिन रात उपास करै और जात वैदस मन्त्र को जपता रहे ॥ १५ ॥

शिल्पिनंकारुकंशूद्रं स्त्रियंवायस्तुघातयेत् ॥
प्राजापत्यद्वयंकृत्वावृषैकादशदक्षिणा ॥ १६ ॥

चितेरे, रसोइये, शूद्र और स्त्री को जो मारे वह दोप्राजापत्य व्रत करे और दसगौ एक बैल दक्षिणा दे तब शुद्ध होवे ॥ १६ ॥

वैश्यवाक्षत्रियंवापिनिर्दोषंयोऽभिघातयेत् ॥
सोतिकृच्छ्रद्वयंकुर्याद् गोविंशद्दक्षिणांददेत् ॥ १७ ॥

जो निर्दोष क्षत्री अथवा वैश्य को मारे वह दो अति कृच्छ्रव्रत करे और वास गौ दक्षिणादे ॥ १७ ॥

वैश्यंशूद्रंक्रियासक्तंविकर्मस्थंद्विजोत्तमम् ॥
हत्वाचांद्रायणंतस्यत्रिंशद्गाश्चैवदक्षिणा ॥ १८ ॥

यदि यज्ञ आदि क्रिया अथवा जप पूजा में बैठे हुए वैश्य

अथवा शूद्र को मारे किंवा किसी अपने धर्म से च्युत ब्राह्मणको मारे तो चांद्रायण व्रत करके तीस गौ दक्षिणादेवै ॥ १८ ॥

चण्डालंहतवान् कश्चिद्ब्राह्मणोयदिकंचन ॥
प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंगोद्वयंदक्षिणांददेत् ॥ १९ ॥

यदि कोई ब्राह्मण चाण्डालको मारे तो प्राजापत्य कृच्छ्रव्रत करे और दो गौ दक्षिणादे ॥ १९ ॥

क्षत्रियेणापिवैश्येनशूद्रेणैवेतरेणच ॥
चांडालस्यवधेप्राप्ते कृच्छ्रार्द्धेनविशुद्ध्यति ॥ २० ॥

क्षत्रिय. वैश्य और शूद्र अथवा अन्यभी कोई यदि चाण्डाल को मारे तो आधा कृच्छ्र करने से शुद्ध होता है ॥ २० ॥

चौरःश्वपाकोचाण्डालो विप्रेणाभिहतोयदि ॥
अहोरात्रोषितः स्नात्वापंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २१ ॥

यदि चोरी करने हारे श्वपाक अथवा चाण्डाल को ब्राह्मण मारे तो एक दिन रात उपास करके पंचगव्य खावे ॥ २१ ॥

श्वपाकंचापिचाण्डालंविप्रः संभाषतेयदि ॥
द्विजसंभाषणंकुर्यात्सावित्रींचसकृत्जपेत ॥ २२ ॥

श्वपाक अथवा चाण्डाल से यदि ब्राह्मण बात चीत करे तो ब्राह्मणसे बोलकर एक बार गायत्री जपे तब शुद्ध होता है ॥ २२ ॥

चाण्डालैःसहसुप्तंतुत्रिरात्रमुपवासयेत ॥
चाण्डालैकपथंगत्वा गायत्रीस्मरणाच्छुचिः ॥ २३ ॥

चाण्डालके साथ सोनेहारे को तीन दिन उपास कराना और चाण्डाल के साथ राह में चला हो तो गायत्री स्मरण करने से शुद्ध होता है ॥ २३ ॥

चाण्डालदर्शनेसद्यआदित्यमवलोकयेत् ॥
चाण्डालस्पर्शनेचैवसचैलंस्नानमाचरेत ॥ २४ ॥

चाण्डालको देखे तो झटपट सूर्य की ओर ताक दे चाण्डाल को छू लेवे तो सचैल ( कपडे समेत ) स्नान कर डाले ॥ २४ ॥

चाण्डालखातवापीषुपीत्वासलिलमग्रजः ॥
अज्ञानाच्चैकभुक्तेन त्वहोरात्रेणशुद्ध्यति ॥ २५ ॥

यदि ब्राह्मणने बिना जाने चाण्डाल की खुदाई हुई वापी वा कूप आदिमें से जल पी लिया होतो एक भक्त करे और जान बुझकर नहाया वा पानी पीया होतो एक उपवास से शुद्ध होता है ॥ २५ ॥

चाण्डालभांडसंस्पृष्टंपीत्वाकूपगतंजलम् ॥
गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्राच्छुद्धिमाप्नुयात् ॥ २६ ॥

यदि चाण्डालने अपना भांडा पानी के लिये किसी कूप में डाला हो और उस कूप के जलको पीये तो तीन दिन तक गोमूत्र में यावक पकाकर खाने से शुद्ध होता है ॥ २६ ॥

चाण्डालघटसंस्थंतुयत्तोयंपिबते द्विजः ॥
तत्क्षणात्त्क्षिपतेयस्तु प्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ २७ ॥

यदि चाण्डाल के भाण्डे का जल कोई पीले और उसी क्षन उसे वमन कर दे तो वह प्राजापत्य व्रत करे ॥ २७ ॥

यदिनक्षिपतेतोयं शरीरेयस्यजीर्यति ॥
प्राजापत्यनंदातश्यं कृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ २८ ॥

कदाचित् वमन न किया और वह जल उसके पेटमेंही पचगया तो कृच्छ्र सान्तपनकरे ॥ २८ ॥

चरेत्सांतपनंविप्रः प्राजापत्यमनंतरः ॥
तदर्द्धंतुचरेद्वैश्यः पादंशूद्रस्यदापयेत् ॥ २९ ॥

यह सान्तपन ब्राह्मण करे क्षत्रिय होतो प्राजापत्य करे, वैश्य और शुद्र प्रजापत्य का चौथाई व्रत करें ॥ २९ ॥

भांडस्थमंत्यजानांतु जलंदधिपयः पिबेत् ॥

ब्राह्मणः क्षत्रियोवैश्यः शूद्रश्चैवप्रमादतः ॥ ३० ॥

यदि अंत्यज ( चांडाल आदि ) वर्तन का जल दही वा दूध चारो वर्ण में से कोई पीले ॥ ३० ॥

ब्रह्मकूर्चोपवासेनद्विजातीनांतुनिष्कृतिः ॥

शूद्रस्यचोपावसेन तथादानेनशक्तितः ॥ ३१ ॥

तो प्रथम तीन वर्णों की शुद्धि ब्रह्मकूर्च व्रत करनेसे होतीहै और शूद्र एक उपवासतथा अपनीशक्तीभर दान कर्ने से शुद्ध होता है ॥३१॥

भुंक्ते ज्ञानाद्द्विजश्रेष्ठः चांडालान्नंकथंचन ॥

गोमूत्रयावकाहारो दशरात्रेणशुद्ध्यति ॥ ३२ ॥

यदि किसी भांति विना जाने चाण्डाल का अन्न ब्राह्मण खालेवे तो गौके मूत्र में यावक पकाकर दस दिन खाने से शुद्ध होता है जान बूझ कर खावेतो चांद्रायण करे ॥ ३२ ॥

एकैकंग्रासमश्नीयाद्गोमूत्रेयावकस्यच ॥

दशाहनियमस्थस्यव्रतंतत्तुविनिर्दिशेत् ॥ ३३ ॥

इस व्रतमें गौके मूत्र में पके हुए यावक का एकही एकग्रास प्रतिदिन खाना होता है। और दस दिन नियम से रहना पडता है ३३

अविज्ञातस्तुचांडालो यत्रवेश्मनितिष्ठति ॥

विज्ञातरूपंसंन्यस्य द्विजाःकुर्युरनुग्रहम् ॥ ३४ ॥

जिस्के घरमें बिनाजाने चाण्डाल रहता हो तो जब उसे जाने झट दूरकरे और ब्राह्मणों के उपदेश से प्रायश्चित्त करे ३४ ॥

मुनिवक्त्रोद्गतान्धर्मान् गायंतोवेदपारगाः ॥

पतंतमुद्धरेयुस्तं धर्मज्ञाः पापसंकटात् ॥ ३५ ॥

वेद पारंगत ब्राह्मण लोग उस पतित होते मनुष्य का उद्धार ऐसे पाप संकट से पराशर आदि मुनियों के कहे हुए धर्मों को बतला कर करैं ॥ ३५ ॥

दध्नाचसर्पिषाचैव क्षीरगोमूत्रयावकम् ॥
भुंजीतसहभृत्यैश्च त्रिसंध्यमवगाहनम् ॥ ३६ ॥

गौके मूत्र में पके हुए यावकको दही घी और दूध के साथ अपने भृत्यों समेत भोजन करे और तीनों संध्या स्नान किया करे ॥ ३६ ॥

त्र्यहम्भुञ्जीतदध्नाचत्र्यहम्भुञ्जीतसर्पिषा ॥
त्र्यहंक्षीरेणभुंजीत एकैकेनदिनत्रयम् ॥ ३७ ॥

तीन दिन दही के साथ तीन दिन घी के और तीन दिन दूध के साथ खावे और अंत में पुनः एक २ दिन इन हर एक के साथ खावे तो बारह दिनमें यह व्रत होता है ॥ ३७ ॥

भावदुष्टं न भुंजीत नोच्छिष्टंकृमिदूषितम् ॥
दधिक्षीरस्यत्रिपलं पलमेकंघृतस्यतु ॥ ३८ ॥

अमेध्य बुद्धि जिसमें होजावे उसे न खावे जूठा न खावे और कृमि से दूषित को भी न खावे । दधि और दूध तो तीन २ पल ( अर्थात् १२ तोले ) और घी एक पल ( ४ तोले ) लेवे ॥ ३८ ॥

भस्मनातुभवेच्छुद्धिरुभयोःकांस्यताम्रयोः ॥
जलशौचेनवस्त्राणां परित्यागेनमृण्मयम् ॥ ३९ ॥

कांसे और तांबे की शुद्धि भस्म ( राख ) से होती है वस्त्रों की जल से और माटी के बर्तन की त्याग देने से शुद्धि है ॥ ३९ ॥

कुसुंभगुडकार्पास लवणंतैलसर्पिषी ॥
द्वारेकृत्वातुधान्यानिदद्याद्वेश्मनिपावकम् ॥ ४० ॥

कुसुंम, गुड़, कपास, लवण तेल घी और दूसरे अन्न भी घर के द्वार पर निकाल ले और घर में आग जलादे ॥ ४० ॥

एवंशुद्धस्ततःपश्चात्कुर्याद्ब्राह्मणतर्पणम् ॥
त्रिंशतगावृषंचैकंदद्याद्विप्रेषुदक्षिणाम् ॥ ४१ ॥

इस भांति शुद्ध होकर कर पीछे से ब्राह्मण भोजन करावे । तथा तीसगौ और एक बैल ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे ॥ ४१ ॥

पुनर्लेपनखातेन होमजाप्येन शुद्ध्यति ॥
आधारेणच विप्राणां भूमिदोषोन विद्यते ॥ ४२ ॥

पुनः उस गृहकी भूमिको लीपने खने से और होम जाप से शुद्ध कर तथा ब्राह्मणोंको बैठाने से भी भूमिका दोष नहीं रहता है (यहां तक घर में चांडाल रहने का प्रायश्चित्त ९ (श्लोकों में जानना) ॥ ४२ ॥

चांडालैः सहसंपर्कंमा संमासार्द्धमेववा ॥
गोमूत्रयावकाहारोमासार्द्धेन विशुद्ध्यति ॥ ४३ ॥

यदि चांडालादिकों के साथ एक वा आधे महीने तक संसर्ग रहा हो तो गोमूत्र में पके हुए यावकको १५ दिन खाने से शुद्ध होता है ॥ ४३ ॥

रजकीचर्मकारीचलुब्धकीवेण्डजीविनी ॥
चातुर्वर्ण्यस्यतुगृहेत्वविज्ञातातुतिष्ठति ॥ ४४ ॥

रजकी, ( धोबिन ) चमारी व्याधस्त्री और वण्डजीविनी, ( बरकारिन ) यदि ये चारों वर्णों में से किसी के घर में बिना जाने रही हों ॥ ४४ ॥

ज्ञात्वातुनिष्कृतिंकुर्यात्पूर्वोक्तस्यार्द्धमेवतु ॥
गृहदाहंनकुर्वीत शेषंसर्वंचकारयेत् ॥ ४५ ॥

तो जब जाने तब पहिले कहे हुएका आधा प्रायश्चित्त करे। गृहदाहन करे और सब करे ॥ ४५ ॥

गृहस्याभ्यंतरंगच्छेच्चांडालोयदिकस्यचित् ॥
तमागाराद्विनिःसार्य मृद्भांडंतुविसर्जयेत् ॥ ४६ ॥

यदि किसी के घर में चांडाल चला जावे तो उसे घरके बाहिर निकालकर मिट्टी के बर्तनों को फेंक देवे ॥ ४६ ॥

रसपूर्णांतुमृद्भांडं नत्यजेत्तुकदाचन ॥
गोमयेनतुसंमिश्रै जलैः प्रोक्षेद्गृहंतथा ॥ ४७ ॥

जिन मिट्टिके बर्तनों में घी तेल आदि रस भराहो उन्हें न त्यागे और गौ के गोबर से घर लिपवा देवें ॥ ४७ ॥

ब्राह्मणस्यव्रणद्वारे पूयशोणितसंभवे ॥
कृमिरुत्पद्यतेयस्य प्रायश्चित्तकथंभवेत् ॥ ४८ ॥

यदि ब्राह्मण को व्रण होकर रक्तपीव वहता हो और उसमें कृमि पड़जावें तो उसका प्रायश्चित्त क्यों कर होवे ॥ ४८ ॥

गवांमूत्रपुरीषेण दधिक्षीरेणसर्पिषा ॥
त्र्यहंस्नात्वाचपीत्वाच कृमिदष्टःशुचिर्भवेत् ॥ ४९ ॥

कि तीन दिन तक पंचगव्य से स्नान करे पंचगव्यही खावे तो कृमिदोष से शुद्ध होता है ॥ ४९ ॥

क्षत्रियोपिसुवर्णस्य पंचमाषान्प्रदापयेत् ॥
गोदक्षिणांतुवैश्यस्या प्युपवासंविनिर्दिशेत् ॥ ५० ॥

क्षत्रिय हो तो उसे पांचमाशे सोना भी दान देना होता है और वैश्य को एक उपास करके एक गौ देना होती है ॥ ५० ॥

शूद्राणांनोपवासः स्यात् शूद्रोदानेनशुध्यति ॥
अछिद्रमितियद्वाक्यं वदंतिक्षितिदेवताः ॥ ५१ ॥

शूद्रों को उपवास नहीं वे दान मात्रसेही शुद्ध होते हैं ब्राह्मणलोग 'अछिद्रमस्तु' इस वाक्यको जब कहेंतो ॥ ५१ ॥

प्रणम्यशिरसाग्राह्य मग्निष्टोमफलंहितत् ॥
जपछिद्रंतपश्छिद्रं यच्छिद्रंयज्ञकर्मणि ॥ ५२ ॥

प्रणाम करके माथे चढ़ाना उसका फल अग्निष्टोमयज्ञके तुल्यहोता है जप, तप, और यज्ञमें भी जोछिद्र ( न्यूनता ) हो ॥ ५२ ॥

सर्वंभवतिनिच्छिद्रंब्राह्मणैरुपपादितम् ॥

व्याधिव्यसनिनिश्रांतदुर्भिक्षेडामरेतथा ॥ ५३ ॥

सो सब ब्राह्मणों के वाक्यसे परिपूर्ण होजाता हो यदि कोई व्याधि ग्रहस्त हो, किसी पितृ सेवा आदि व्यसनमें पड़ाहो, थकाहो दुर्भिक्ष में और राजोपद्रव में पड़ाहोतो ॥ ५३ ॥

उपवासोव्रतंहोमोद्विजसंपादितानिवा ॥
अथवाब्राह्मणास्तुष्टाःसर्वेकुर्वंत्यनुग्रहम् ॥ ५४ ॥

उपवास, व्रत, होम आदि ब्रह्मणद्वारा करावे अथवा ब्राह्मणलोग सन्तुष्ट होकर अनुग्रह करे कि तू शुद्धहुआ, तोभी शुद्ध होता है ५४

सर्वान्कामानवाप्नोतिद्विजसंपादितैरिह ॥
दुर्बलेनुग्रहः प्रोक्तस्तथावैबालवृद्धयो ॥ ५५ ॥

ब्रह्मण द्वारा व्रतादि संपादन कराने से वहां पर सब कामना पूरिहोती हैं और जो दुर्बलहो तथा बालक और वृद्ध इनमें ब्राह्मणोंको (सभासदों वा परिषत् को) अनुग्रह करना चाहिये ॥ ५५ ॥

ततोऽन्यथाभवेद्दोष स्तस्मान्नानुग्रहःस्मृतः ॥
स्नेहाद्वायदि वालोभाद्भयादज्ञानतोऽपिवा ॥ ५६ ॥

इनसे विना दोष होता है इसमे औरों में अनुग्रह कर्ना मना है यदि स्नेह लोभ भय अथवा अज्ञानसे औरों पर अनुग्रह करेंतो ५७

कुर्वंत्यनुग्रहंयेतुतत्पापंतेषुगच्छति ॥
शरीरस्याऽत्ययेप्राप्तेवदंतिनियमंतुये ॥ ५७ ॥

वह पाप उन्हीं ब्राह्मणों को लगजाता है। जिसके शरीर नाश हो जाने की दशाहो उसे जो नियम व्रत उपदेश करें ॥ ५७ ॥

महत्कार्योऽपरोधेच नस्वस्थस्यकदाचन ॥
स्वस्थस्यमूढाःकुर्वंति वदंतिनियमंतुये ॥ ५८ ॥

अथवा किसी बड़े कर्ममें बझेहुए को उपदेशकरें तथा स्वस्थ मनुष्यों को कदाचित् न करें और जो लोग मूढ़ता से स्वस्थ के बद ले आपही नियम व्रत करें ॥ ५८ ॥

तेतस्यविघ्नकर्तारःपतंतिनरकेऽशुचौ ॥
स्वयमेवव्रतंकृत्वाब्राह्मणंयोऽवमन्यते ॥ ५९ ॥

ये सब उस्के विघ्नकरनेहारे हैं अति अशुचि नरक में पड़ते हैं। जो कोई ब्राह्मणों को अपमान कर उनसे बिना पूछे आपही व्रत करले तो ॥ ५९ ॥

वृथातस्योपवासःस्यान्नसपुण्येनयुज्यते ॥
सएवनियमोग्राह्योयमेकोपिवदेद्द्विजः ॥ ६० ॥

उस्का उपवास वृथा होता है पुण्य उसे नहीं मिलता उसी नियम को करना जिसे एक भी ब्राह्मण बतलादेवे ॥ ६० ॥

कुर्याद्वाक्यंद्विजानांतुअन्यथाभ्रूणहाभवेत् ॥
ब्राह्मणोजंगमंतीर्थं तीर्थंभूताहिसाधवः ॥ ६१ ॥

ब्राह्मणों का वाक्य करे नहीं तो भ्रूणहा ( गर्भहत्यारा ) होता है ब्राह्मणलोग जंगम तीर्थ हैं और साधुजन भी तीर्थ हैं ॥ ६१ ॥

तेषांवाक्योदकेनैव शुद्ध्यंतिमलिनाजनाः ॥
ब्राह्मणायानिभाषंतमन्यंतेतानिदेवताः ॥ ६२ ॥

उनके बचन रूपी जल से मलीन जन शुद्ध हो जाते हैं। जिन बातों को ब्राह्मण कहदेते हैं देवता भी उन्हें मानते हैं ॥ ६२ ॥

सर्वदेवमयोविप्रो नतद्वचनमन्यथा ॥
उपवासोव्रतं चैवस्नानंतीर्थंजपस्तपः ॥ ६३ ॥

ब्राह्मण सर्वदेवमय है उस्का बचन अन्यथा नहीं। उपवास,व्रत, स्नान, तीर्थ, जप और तप ॥ ६३ ॥

विप्रैः संपादितं यस्य सम्पूर्णंतस्यतत्फलम् ॥
अन्नाद्येकीटसंयुक्ते मक्षिकाकेशदूषिते ॥ ६४ ॥

जिस्को ब्राह्मणों ने संपन्न किया उसे उस्का सारा फल होता है। अन्नआदि वस्तु में यदि कीटपड़ें अथवा मक्खी वा केश पड़जावें ६४

तदंतरास्पृशेच्चापः तदन्नंभस्मनास्पृशेत् ॥
भुंजानश्चैवयोविप्रः पादंहस्तेनसंस्पृशेत् ॥ ६५ ॥

तो उसके मध्य जल और भस्म छिड़कने से शुद्ध होता है। जो ब्राह्मण भोजन करते समय हाथ से अपना पांव छूले ॥ ६५ ॥

स्वमुच्छिष्टमसौभुंक्ते योभुंक्तेमुक्तभाजने ॥
पादुकास्थोनभुंजीत नपर्यंकस्थितोपिवा ॥ ६६ ॥

वह उच्छिष्ट भोजनका प्रत्यवाय पाता है। मुक्तपात्र में भोजन से भी यही दोष है। पादुका पर और खट्वा आदि पर बैठ कर भोजन न करे ॥ ६६ ॥

श्वानचाण्डालदृक्चैव भोजनंपरिवर्जयेत् ॥
यदन्नंप्रतिषिद्धस्यादन्तशुद्धिस्तथैवच ॥ ६७ ॥

कुत्ते और चाण्डाल के सामने भोजन न करे। भोजन में जो अन्न प्रतिषिद्ध है और जिस भांती अन्नशुद्धि होती है ॥ ६७ ॥

यथापराशरेणोक्तं तथैवहिवदामिवः ॥
शृतंद्रोणाढकस्यान्नं काकश्वानोपघातितम् ॥ ६८ ॥

ये बातें जिस प्रकार पराशर मुनिने कही हैं मैं भी आपलोगोंसे उसी ढँगसे कहता हूं एकद्रोणाढक ( भर पकेहुए अन्नको यदि काक अथवा कुत्ता स्पर्श करदे ) ॥ ६८ ॥

केनेदंशुध्यतेचेति ब्राह्मणेभ्योनिवेदयेत् ॥
काकश्वानाऽवलीढंतु द्रोणान्नंनपरित्यजेत् ॥ ६९ ॥

तो वह किस भांती शुद्ध होगा ऐसा ब्राह्मणों से पूछे और काक वा कुत्ते का जुठारा हुआ द्रोणप्रमाण अन्न त्याग न करे ॥ ६९ ॥

वेदवेदांगविद्भिर्धर्मशास्त्रानुपालकैः ॥
प्रस्थाद्द्वात्रिंशतिर्द्रोणः स्मृतोद्विप्रस्थआढकः ॥ ७० ॥

वेद वेदांग जाननेहारे और धर्मशास्त्र का पालन करनेहारे

ब्राह्मणों ने ३२ प्रस्थों का एक द्रोण और दो प्रस्थ का एक आढक कहा है ॥ ७० ॥

ततोद्रोणाढकस्यान्नं श्रुतिस्मृतिविदोविदुः ॥
काकश्वानावलीढंतु गवाघ्रातंखरेणवा ॥ ७१ ॥

इसी प्रमाण से द्रोणाढक का अन्न श्रुति स्मृति वेत्ताओं ने अत्याज्य कहा हुआ है जिस अन्न को काक और कुत्ते ने जुठारा हो अथवा गौ वा गधे ने सूंघ लिया हो ॥ ७१ ॥

स्वल्पमन्नंत्यजेद्विप्रः शुद्धिर्द्रोणाढकोभवेत् ॥
अन्नस्योद्धृत्यतन्मात्रं यच्चलालाहतंभवेत् ॥ ७२ ॥

तो थोड़े अन्न को ब्राह्मण त्याग कर देवे और द्रोणाढक भर होने से शुद्धही गिना जाता है किन्तु इतना मात्र करना पड़ता है कि जितने में लाला ( लार ) लगी हो उतना अन्न निकाल कर फेंक देना ॥ ७२ ॥

सवर्णोदकमभ्युक्ष्य हुताशेनवदापयेत् ॥
हुताशनेनसंस्पृष्टं सुवर्णसलिलेनच ॥ ७३ ॥

और जो शेष है उसको सुवर्ण के जल से सेक करके अग्नि से तपाना जब वह अन्न अग्नि और सोने के जल से संपृष्ट हुआ ७३

विप्राणांब्रह्मघोषेण भोज्यंभवतितत्क्षणात् ॥
स्नेहोवागोरसोवापि तत्रशुद्धिःकथंभवेत् ॥७४॥

और ब्राह्मणों की वेदध्वनि से उसी छन शुद्ध होकर भोजन के योग्य हो जाता है परन्तु यदि स्नेह ( घी तेल आदि ) अथवा गोरस ( दूध दही ) हो तो उसकी शुद्धि क्यों कर होगी ॥ ७४ ॥

अल्पंपरित्यजेत्तत्र स्नेहस्योत्पवनेनच ॥
अनलज्वालयाशुद्धिर्गोरसस्यविधीयते ॥ ७५ ॥

कि उसमें से थोड़ा निकाल लेना और स्नेह द्रव्य को उत्पवन करनेसे ( अर्थात् कुशा के पत्र से कुछ २ उछाल देने से ) और

गोरस की शुद्धि अग्निज्वाला से होती है ॥ ७५ ॥

इतिप्राणिहत्यादिनिष्कृतिर्नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

इति श्रीपराशर स्मृति० षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथातोद्रव्यशुद्धिस्तु पराशरवचोयथा ॥
दारवाणां तुपात्राणांतक्षणाच्छुद्धिरिष्यते ॥ १ ॥

अब पराशर जी के वाक्यानुसार द्रव्यों की शुद्धि यों है कि काठ के पात्रों में यदि अमेध्य वस्तु लग जावे तो उन्हें कुछ छील देने से शुद्धि हो जाती है ॥ १ ॥

मार्जनायज्ञपात्राणांपाणिनायज्ञकर्मणि ॥
चमसानांग्रहाणांच शुद्धिःप्रक्षालनेनच ॥ २ ॥

और यज्ञकर्म में यज्ञपात्रों की शुद्धि हाथ से पोंछने करके हो जाती है चमस तथा ग्रह नामक पात्रों की शुद्धि जल से धोने से होती है ॥ २ ॥

चरूणांस्रुक्स्रुवाणांच शुद्धिरुष्णेनवारिणा ॥
भस्मनाशुद्धयते कांस्यं ताम्रमम्लेनशुद्धयति ॥ ३ ॥

चरु स्रुक् और स्रुव इन पात्रोंकी शुद्धि उष्ण जल करके प्रक्षालन से होती है। कांसे का पात्र भस्म ( राख ) से मलने से शुद्ध होता है और तामे की शुद्धि अम्ल ( खटाई ) से होती है ॥ ३ ॥

रजसाशुद्ध्यतेनारी विकलंयानगच्छति ॥
नदीवेगेनशुद्ध्यते लेपोयदिनदृश्यते ॥ ४ ॥

नारी अर्थात् पित्तल के पात्र की शुद्धि रज ( धूलि वा मिट्टी ) से होती है ( कोई यों अर्थ करते हैं कि नारी अर्थात् स्त्री की शुद्धि रजोधर्म से होती है ), परन्तु जो विकल अर्थात् अति भ्रष्ट न हुई हो तो। नदी की शुद्धि वेग से होती है यदि लेप न देख पड़े तो ॥ ४ ॥

वापीकूपतडागेषु दूषितेषुकथंचन ॥
उद्धृत्यवैकुंभशतं पंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ ५ ॥

यदि किसी भांति वापी, कूप, और तड़ाग दूषित हो गए हों तो सौघड़े जल निकाल कर पंचगव्य डालने से शुद्ध होते हैं ॥ ५ ॥

अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षातुरोहिणी ॥
दशवर्षाभवेत्कन्याअतऊर्ध्वंरजस्वला ॥ ६ ॥

आठ वर्ष की लड़की गौरी कहलाती, नौ वर्ष की रोहिणी और दस वर्ष की कन्या कहलाती है इससे उपरांत रजस्वला कहाता है ६

प्राप्तेतुद्वादशेवर्षे यःकन्यांनप्रयच्छति ॥
मासिमासिरजस्तस्याः पिबंतिपितरोनिशम् ॥ ७ ॥

बारह बरस होने पर जो कन्या को नहीं दान कर देते तो उन के पितर उस कन्याका रज प्रतिमास में पीते रहते हैं ॥ ७ ॥

माताचैवपिताचैव ज्येष्ठोभ्रातातथैवच ॥
त्रयस्तेनरकंयांति दृष्ट्वाकन्यांरजस्वलां ॥ ८ ॥

माता, पिता, और जेठा भाई ये तीनों रजस्वला कन्या को देखने से नरक में जाते हैं ॥ ८ ॥

यस्तांसमुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणोमदमोहितः ॥
असंभाष्योह्यपांक्तेयः सविप्रोवृषलीपतिः ॥ ९ ॥

जो ब्राह्मण मदसे मोहित होकर उस रजस्वला कन्याको ब्याह लेता है वह असंभाषणीय और पंक्तिवाह्य होकर वृषलीपति कहलाता है ॥ ९ ॥

यःकरोत्येकरात्रेण वृषलीसेवनंद्विजः ॥
सभैक्ष्यभुग्जपन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्विशुद्ध्यति ॥ १० ॥

ऐसी वृषली का संग जो द्विज एक रात भर कर्ता है वह तीन बरस तक भिक्षा मांग के खातारहै और नित्यही जप करता रहे तब शुद्ध होता है ॥ १० ॥

अस्तंगतेयदासूर्ये चाण्डालंपतितांस्त्रियम् ॥

सूतिकांस्पृशतश्चैव कथंशुद्धिर्विधीयते ॥ ११ ॥

सूरजके अस्त हो जाने पर यदि चाण्डाल, पतित अथवा सूति का स्त्री को छूलेवे तो उसकी शुद्धि क्यों कर हो ॥ ११ ॥

जातवेदंसुवर्णञ्च सोममार्गंविलोकयच्च ॥
ब्राह्मणानुमतश्चैव स्नानंकृत्वाविशुद्ध्यति ॥ १२ ॥

जातवेद ( अग्निवाचन्द्रमा ) सुवर्ण और चंद्रपथको देखकर ब्राह्मण की आज्ञालेकर सचैल स्नान करने से शुद्ध होता है ॥ १२ ॥

स्पृष्ट्वारजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणीब्राह्मणींतथा ॥
तावत्तिष्ठेन्निराहारो त्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति ॥ १३ ॥

यदि ब्राह्मणी रजस्वला किसी दूसरी रजस्वला ब्राह्मणी को छूलेवे तो उन रजोधर्म के तीन दिनों तक बिना भोजन किये ही रहै तो तीन दिनों में शुद्ध होती है ॥ १३ ॥

स्पृष्ट्वारजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणीक्षत्रियांतथा ॥
अर्द्धकृच्छ्रंचरेत्पूर्वापादमेकंत्वऽनंतरा ॥ १४ ॥

यदि ब्राह्मणी रजस्वला क्षत्रिया रजस्वला को छूलेवे तो ब्राह्मणी अर्द्धकृच्छ्र व्रतकरे और क्षत्रिया पादकृच्छ्रकरे ॥ १४ ॥

स्पृष्ट्वारजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणीवैश्यजां ॥
तथापादहीनंचरेत्पूर्वापादमेकमनंतरा ॥ १५ ॥

ब्राह्मणी रजस्वला वैश्यारजस्वलाका स्पर्शकरे तो ब्राह्मणी त्रिपादकृच्छ्र करे और वैश्य पादकृच्छ्रकरे ॥ १५ ॥

स्पृष्ट्वारजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणीशूद्रजांतथा ॥
कृच्छ्रेणशुद्ध्यतेपूर्वाशूद्रादानेनशुद्ध्यति ॥ १६ ॥

ब्राह्मणी रजस्वला शूद्रा रजस्वला को छूवे तो ब्राह्मणी पूरा कृच्छ्र व्रत करने से शुद्ध होती है और शूद्रा दान देनेसे शुद्ध होती है ॥ १६ ॥

स्नात्वारजस्वलायातु चतुर्थेहनिशुद्ध्यति ॥

कुर्याद्रजोनिवृत्तौतु देवपित्र्यादिकर्मच ॥ १७ ॥

जो रजस्वलाहो वह चौथे दिन स्नान करके शुद्ध होती है और देव व पितृ कार्यों को तो रज की निवृत्ति होने पर करे ॥ १७ ॥

रोगेनयद्रजःस्त्रीणामन्वहंतुप्रवर्त्तते ॥
नाशुचिः सातत्तस्तेनतत्स्याद्वैकालिकंमलम् ॥ १८ ॥

यदि रोग करके प्रति दिन स्त्री को रज निकले तो वह उस रज से अशुद्ध नहीं होती क्योंकि वह अकालिक मल गिना जाता है ॥ १८ ॥

साध्वाचारानतावत्स्य द्रजोयावत्प्रवर्त्तते ॥
रजोनिवृत्तौगम्यास्त्री गृहकर्मणिचैवहि ॥ १९ ॥

जब तक रज निवृत्त न हो तब तक साधुकर्म (देवपूजादि) स्त्री न करे रज निवृत्त होनेही पर स्त्री गमन के और गृह कार्य के योग्य होती है ॥ १९ ॥

प्रथमेहनिचाण्डाली द्वितीयेब्रह्मघातकी ॥
तृतीयेरजकीप्रोक्ता चतुर्थेहनिशुद्ध्यति ॥ २० ॥

रजोधर्म में पहिले दिन चाण्डाली, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी, और तीसरे दिन रजकी के तुल्य स्त्री रहती है चौथे दिन शुद्ध होती है ॥ २० ॥

आतुरेस्नानउत्पन्ने दशकृत्वोह्यनातुरः ॥
स्नात्वास्नात्वास्पृशेदेनं ततः शुद्ध्येत्सआतुरः ॥ २१ ॥

यदि किसी आतुर (रोगी आदि) को नहाना आनपड़े तो अनातुर (स्वस्थ मनुष्य) दसबार नहा नहा करके उसे छूवे तब वह आतुर शुद्ध हो जाता है ॥ २१ ॥

उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टः शुनाशूद्रेणवापुनः ॥
उपोष्यरजनीमेकां पंचगव्येनशुद्ध्यति ॥ २२ ॥

उच्छिष्ट अर्थात् जूठे मुंहवाले मनुष्य को दूसरा उच्छिष्ट अर्थात् जूठे मुंहवाला पुरुष कुत्ता अथवा शूद्र छूवे तो एक रात उपवास करके पंचगव्य खाने से शुद्ध होता है ॥ २२ ॥

अनुच्छिष्टेनशूद्रेण स्पर्शेस्नानंविधीयते ॥
तेनोच्छिष्टेनसंस्पृष्टःप्राजापत्यंसमाचरेत् ॥ २३ ॥

यदि अनुच्छिष्ट शूद्रने छुआ हो तो स्नान करे और उच्छिष्टने छुआ होतो प्राजापत्य व्रत करके शुद्ध होता है ॥ २३ ॥

भस्मनाशुद्ध्यतेकांस्यं सुरयायन्नलिप्यते ॥
सुरामात्रेणसंस्पृष्टं शुद्ध्यतेऽग्न्युपलेखनैः ॥ २४ ॥

भस्म मलने से वह कांसेका पात्र शुद्ध होता है जिसमें सुरा (मदिरा) का लेप न हो और यदि मदिरा से ही छू गया हो तो आग डालने से शुद्ध होता है ॥ २४ ॥

गवाघ्रातानिकांस्यानि श्वकाकोपहतानिच ॥
शुद्ध्यति दशभिःक्षारैःशूद्रोच्छिष्टानियानिच ॥२५॥

जिस कांसेको गौने सूंघलिया हो अथवा कुत्ते वा काकने दूषित किया हो तो वह दसबार खारी मिट्टी के मलने से शुद्ध होता है और इसी भांती शूद्रका जूठा कांसा भी शुद्ध होता है ॥ २५ ॥

गंडूषंपादशौचंच कृत्वावैकांस्यभाजने ॥
षण्मासान्भुविनिक्षिप्य उद्धृत्यपुनराहरेत् ॥ २६ ॥

यदि कांसे के पात्र में कुल्ली करे वा पांव धोवे तो छः महीने तक उसे पृथ्वी में गाड़रक्खे अनन्तर निकाल लावे ॥ २६ ॥

आयसेष्वायसानांच सीसस्याग्नौविशोधनम् ॥
दंतमस्थितथाशृंगं रौप्यंसौवर्णभाजनम् ॥ २७ ॥

लोहे के पात्रको लोहे से घिसे और सीसे को अग्नि में डालने से शुद्धि होती है दंत, हड्डी, शृंग, रूपे और सोने का पात्र ॥ २७ ॥

मणिपात्राणिशंखश्चेत्येतान्प्रक्षालयेज्जलैः ॥

पाषाणेनतु घर्ष एषांशुद्धिरुदाहृता ॥ २८ ॥

मणिपात्र और शंख इन्हें जल में धोडाले और पत्थर से घिसे तो इनकी शुद्धि होती है ॥ २८ ॥

मृण्मयेदहनाच्छुद्धिर्धान्यानांमार्जनादपि ॥
वेण्डवल्कलचीराणां क्षौमकार्पासवाससाम् ॥ २९ ॥

मिट्टी के पात्रकी शुद्धि अग्नि में जलाने से और धान्यों को जल के छींटे देने से। वेण्डपात्र अर्थात् बांसकी टोकरी आदि तथा वल्कलचीर ( भोजपत्रादिके वस्त्र ) अलसी ( तीसी ) और कपास के वस्त्रों की भी ॥ २९ ॥

और्णिनेत्रपटानांच प्रोक्षणाच्छुद्धिरिष्यते ॥
मुंजोपस्करशूर्पाणां शाणस्यफलचर्मणाम् ॥ ३० ॥

इसी भांती ऊन और नेत्र ( रेशम ) के वस्त्रों की शुद्धि जलके छींटे देने से ही होती है। मुंज, उपस्कर, ( झाडू आदि ) सूप, शाण की रसी, फल और चर्म की ॥ ३० ॥

तृणकाष्ठस्यरज्जूनामुदकाभ्युक्षणंमतम् ॥
तुलिकाद्युपधानानि रक्तवस्त्रादिकानिच ॥ ३१ ॥

तृण, काठ, रस्सियों की शुद्धि जल छिड़कने से होती है रूई के तकिये, रंगेहुए वस्त्र आदिको ॥ ३१ ॥

शोषयित्वार्कतापेन प्रोक्षणाच्छुद्धितामियुः ॥
मार्जारमक्षिकाकीटपतंगकृमिदर्दुराः ॥ ३२ ॥

धूप में सुखाकर जलका छींटा दे तो शुद्ध होते हैं बिल्ली, मक्खी कीट, पतंग, कृमि, और डड्डु ॥ ३२ ॥

मेध्यामेध्यंस्पृशंतोपि नोच्छिष्टंमनुरब्रवीत् ॥
महींस्पृष्ट्वागतंतोयं याश्चाप्यन्योन्यविप्रुषः ॥ ३३ ॥

ये पवित्र और अपवित्र वस्तुओंको छूकर भी ( उच्छिष्ट )

नहीं होते ऐसा मनुने कहा है। धरती में गिरकर जो जल आवे और बोलनेमें जो आपस में थूकके कणिके पडते हैं ॥ ३३ ॥

भुक्तोच्छिष्टंतथास्नेहं नोच्छिष्टंमनुरब्रवीत् ॥
तांबूलेक्षुफलेचैव भुक्तस्नेहानुलेपने ॥ ३४ ॥

भोजन के वारम्वार ग्रास लेनेसे अन्न और तेल आदि बारंबार लेकर लगाने में जूठे नहीं होते यह भी मनुने कहा है। पान, ईख, फल, भोजन किए हुए चिकने ( घी ) का लेप, ॥ ३४ ॥

मधुपर्केचसोमेच नोच्छिष्टंधर्मतोविदुः ॥
रथ्याकर्दमतोयानिनावःपंथास्तृणानिच ॥ ३५ ॥

मधुपर्क और सोमलता का रस इनमें जूठापन धर्म से ही नहीं होता है। गली, कीचड़, जल, नौका, सडक और तृण ॥ ३५ ॥

मारुतार्केणशुद्ध्यंतिपक्वेष्ठकचितानिच ॥
अदुष्टासततधारा वातोद्धूताश्चरेणवः ॥ ३६ ॥

सब धूप और वायु लगने से शुद्ध होते हैं इसी भांति पकी हुई ईंटोंका ढेर भी सदा बहती हुई धारा और वायु से उडी हुई धूल भी अशुद्ध नहीं ॥ ३६ ॥

स्त्रियोबृद्धाश्चबालाश्चनदुष्यंतिकदाचन ॥
क्षुतेनिष्ठीवनेचैवदंतोच्छिष्टेतथानृते ॥ ३७ ॥

स्त्री, बालक, और वृद्ध इन्हें भी कभी दोष नहीं। छींकने थूकने, दांतों में जूठा रहजाने, और झूठ बोलने में ॥ ३७ ॥

पतितानांचसंभाषे दक्षिणंश्रवणंस्पृशेत् ॥
अग्निरापश्चवेदाश्चसोमसूर्यानिलास्तथा ॥ ३८ ॥

तथा पतित, के साथ बात चीत करने में दहिने कानको छुवे। क्योंकि अग्नि, जल वेद, चन्द्रमा, सूर्य और वायु ॥ ३८ ॥

एतेसर्वेपिविप्राणांश्रोत्रेतिष्ठंतिदक्षिणे ॥

प्रभासादीनितीर्थानि गंगाद्यासरितस्तथा ॥ ३९ ॥

ये सभी ब्राह्मणों के दाहिने कान में रहिते हैं। प्रभास आदिक तीर्थ और गंगा आदिक नदियां भी ॥ ३९ ॥

विप्रस्यदक्षिणेकर्णेसान्निध्यंमनुरब्रवीत् ॥

देशभंगेप्रवासेवा व्याधिषुव्यसनेष्वपि ॥ ४० ॥

ब्राह्मण के दक्षिण कर्ण में सन्निहित रहती हैं ऐसा मनुने कहा है। देशोपद्रव में विदेश में, व्याधि और व्यसन में ॥ ४० ॥

रक्षेदेवस्वदेहादिपश्चाद्धर्मंसमाचरेत् ॥

येनकेनचधर्मेण मृदुनादारुणेनवा ॥ ४१ ॥

अपने देह आदिकी रक्षा पहिले करले पश्चात्; धर्म करे जिस किसी धर्म से अर्थात् मृदु वा दारुण से ॥ ४१ ॥

उद्धरेद्दीनमात्मानं समर्थोधर्ममाचरेत् ॥

आपत्कालेतुनिस्तीर्णेशौचाऽचारंविचिन्तयेत् ॥४२॥

अपने दीन आत्मा का उद्धार करके पीछे से समर्थ होकर धर्माचरणकरे आपत् काल बीते जाने पर शौच और आचारकी चिंता करे ॥ ४२ ॥

शुद्धिंसमुद्धरेत्पश्चात्स्वस्थोधर्मंसमाचरेत् ॥

इतिपाराशरीये धर्मशास्त्रेद्रव्यशुद्धि
नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

शुद्धि भी निकालली पीछे से धर्मा चरण करना ॥
इति श्रीपाराशर धर्म शास्त्रस्य पण्डित गुरुप्रसाद कृत
भाषा विवृतौ द्रव्य शुद्धिर्नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

गवांबंधनयोक्त्रेषुभवेन्मृत्युरकामतः ॥

अकामकृतपापस्य प्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥ १ ॥

यदि बांधने वा जोतते समय बिना चाहे ही गौ बैल की मृत्यु

हो जावे तो इस अनचाहे पाप का प्रायश्चित्त क्योंकर होगा ॥ १ ॥

वेदवेदांगविदुषां धर्मशास्त्रंविजानताम् ॥
स्वकर्मरताविप्राणां स्वकंपापंनिवेदयेत् ॥ २ ॥

कि वेद वेदांग और धर्म शास्त्रके जानने हारे विद्वानों को अपना पाप कहना ॥ २ ॥

अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिउपस्थानस्यलक्षणम् ॥
उपस्थितोहि न्यायेनव्रतादेशनमर्हति ॥ ३ ॥

अब उन विद्वानों के पास जाने का प्रकार सुनो जब उचित प्रकार से उनके पास जावे तो व्रतोपदेश के योग्य होता है ॥ ३ ॥

सद्योनिःसंशयेपापेनभुंजीतानुपस्थितः ॥
भुंजानोवर्द्धयेत्पापं पर्षद्यत्रनविद्यते ॥ ४ ॥

जहां पर पर्षद् ( विद्वानों का सभा ) न हो और पाप किसी को निश्चय करके लगही जावै तो वह विद्वानों के पास जावे विना गए चाहे जितनी देर लगे भोजन न करे यदि भोजन कर ले तो उसका पाप बढ जाता है ॥ ४ ॥

संशयेतुनभोक्तव्यंयावत्कार्यविनिश्चयः ॥
प्रमादस्तुनकर्तव्यो यथैवासंशयस्तथा ॥ ५ ॥

सन्देह पाप का हो गया हो तब भी विना निश्चय किये भोजन न करे इस में प्रमाद ( गलती या चूक ) कभी न करे जिसमें सन्देह दूर होय सो करे ॥ ५ ॥

कृत्वापापंनगूहेत गुह्यमानंविवर्द्धते ॥
स्वल्पं वाथप्रभूतंवा धर्मविद्भ्योनिवेदयेत् ॥ ६ ॥

पाप करके छिपावे नहीं छिपाने से बढता है थोड़ा हो वा बहुत हो धर्म विज्ञों से कह सुनावे ॥ ६ ॥

तेहिपापेकृतेवेद्याः हंतारश्चैवपाप्मनाम् ॥

व्याधितस्ययथावैद्या बुद्धिमंतोरुजापहा: ॥ ७ ॥

वेही पाप के मारने हारे वैद्य हैं जैसे रोगी मनुष्य के रोग छुडाने हारे बुद्धिमान वैद्य होते हैं ॥ ७ ॥

प्रायश्चित्तेसमुत्पन्नेह्रीमान्सत्वपरायण: ॥
मृदुगरार्जवसंपन्न: शुद्धिंगच्छेतमानव: ॥ ८ ॥

प्रायश्चित्त आ लगे तो लज्जा, धीरता और बारम्बार नम्रतासे युक्त होने से मनुष्य शुद्ध हो सक्ता है ॥ ८ ॥

सचैलोबाग्यत: स्नात्वाक्लिन्नवासा:समाहित: ॥
क्षत्रियोवाथवैश्योवा तत:पर्षदमाव्रजेत् ॥ ९ ॥

मौन होकर वस्त्र समेत नहाले उन्हीं गीले वस्त्रों से सावधानी रख कर क्षत्री हो वा वैश्य हो पर्षत् के पास जावे ॥ ९ ॥

उपस्थायतत:शीघ्रमार्तिमान्धरणींव्रजेत् ॥
गात्रैश्चशिरसाचैवनचकिंचिदुदाहरेत् ॥ १० ॥

वहां जा झटपट अति दुःखी हो कर भूमि पर सिर और सारा देह लम्बा कर दंडवत् कर और मुंह से कुछ भी न बोले ॥ १० ॥

सावित्र्याश्चापिगायत्र्या:संध्योपास्त्यग्निकार्ययो: ॥
अज्ञानात्कृषिकर्त्तारोब्राह्मणानामधारका: ॥ ११ ॥

जो ब्राह्मण गायत्री वा सावित्री नहीं जानते तथा संध्या वंदन और अग्निहोत्र नहीं जानते खेती करते हैं यह नाम मात्र के ब्राह्मण हैं ॥ ११ ॥

अव्रतानाममन्त्राणांजातिमात्रोपजीविनाम् ॥
सहस्रस:समेतानांपरिषत्वंनविद्यते ॥ १२ ॥

विना व्रतवाले, विना मंत्र जानने वाले, जाति मात्रसे ही ब्राह्मण जीविका करने हारे ब्राह्मण यदि हजारों इकठे हों तो परिषत् नहीं कहे जा सकते ॥ १२ ॥

यद्वदंतितमोमूढामूर्खाधर्ममतद्विदः ॥
तत्पापंशतधाभूत्वा तद्वक्तॄनऽधिगच्छति ॥ १३ ॥

जो कुछ वे अज्ञानी और धर्म के न जानने हारे मूर्ख लोग कहते हैं तो वह पाप सौगुणा होकर उन कहने वालों को लगजाता है ॥ १३ ॥

अज्ञात्वाधर्मशास्त्राणिप्रायश्चित्तंददातियः ॥
प्रायश्चित्तीभवेत्पूतःकिल्विषंपर्षदिव्रजेत् ॥ १४ ॥

धर्म शास्त्र विना जानेही जो प्रायश्चित्त बतलाता है तो प्रायश्चित्ती शुद्ध हो जाता है और उसका पाप उस बतलाने हारे पर्षत् में लग जाता है ॥ १४ ॥

चत्वारोवात्रयोवापि यंब्रूयुर्वेदपारगाः ॥
सधर्मइतिविज्ञेयो नेतरैस्तुसहस्रशः ॥ १५ ॥

चार वा तीन वेदपारग मनुष्य जो कहैं वही धर्म जानना दूसरे सैकड़ों वा हजारों के कहने से भी धर्म नहीं होता ॥ १५ ॥

प्रमाणमार्गमार्गंतो येधर्मंप्रवदंति वै ॥
तेषामुद्विजतेपापंसद्भूतगुणवादिनाम् ॥ १६ ॥

प्रमाण का पथ चाहने हारे लोग जो धर्म कहते हैं उन्हीं वस्तुतः सत्यगुण कहने वालों से पाप डरता है ॥ १६ ॥

यथाश्म निस्थितंतोयं मारुतार्केणशुद्ध्यति ॥
तथैवपर्षदादेशात्पापंनश्यतिनान्यथा ॥ १७ ॥

जैसे पत्थर में गड़ा हुआ जल वायु और सूर्य के आतप से शुद्ध होता है इसी भांति पर्षत के ही बतलाने से पाप छूटता है अन्यथा नहीं ॥ १७ ॥

नैवगच्छतिकर्तारं नैवगच्छति पर्षदम् ॥
मारुतार्कादिसंयोगा त्पापंनश्यतितोयवत् ॥ १८ ॥

न कर्ने हारे को और न पर्वत को पाप लगता है किन्तु वायु और सूर्य के संयोग से जल की नाईं नष्ट हो जाता है ॥ १८ ॥

चत्वारोवात्रयोत्रापि वेदवंतोग्निहोत्रिणः ॥
ब्राह्मणानां समर्थोये परिषत्साभिधीयते ॥ १९ ॥

चार अथवा तीन वेद जानने हारे अग्निहोत्री जो ब्राह्मणों मे समर्थ हो उन्हीं को परिषत् कहते हैं ॥ १९ ॥

अनाहिताग्नयोयेन्ये वेदवेदांगपारगाः ॥
पंचत्रयोत्राधर्मज्ञाः परिषत्साप्रकीर्तिता ॥ २० ॥

और जो अग्निहोत्री नहीं है परन्तु वेद और वेदांगों को जानते है उनमें से पांच वा तीन धर्मवेत्ता मनुष्य जहां एकत्र हों तो वह भी परिषत् कही जाती है ॥ २० ॥

मुनीनामात्मविद्यानां द्विजानांयज्ञयाजिनाम् ॥
वेदव्रतेषुस्नातानामेकोपिपरिषद्भवेत् ॥ २१ ॥

आत्म विद्या जानने हारे मुनि, यज्ञकर्म कर्ने कराने में निपुण ब्राह्मण और वेद तथा व्रतों में परम निपुण ब्राह्मणों में से एक को भी पर्षद् कहते हैं ॥ २१ ॥

पंचपूर्वमयाप्रोक्ता स्तेषांचासंभवेत्रयः ॥
सवृत्तिपरितुष्टाये परिषत्साप्रकीर्तिता ॥ २२ ॥

पहिले मैंने पांच प्रकार कहे उनके असंभव में तीन जो अपनी वृत्ति में तुष्ट रहने हारे ब्राह्मण हैं वही परिषत् हैं ॥ २२ ॥

अतऊर्ध्वंतुयेविप्राः केवलंनाम धारकाः ॥
परिषत्वंनतेष्वस्ति सहस्रगुणितेष्वपि ॥ २३ ॥

अनन्तर जो केवल नाम के ब्राह्मण हैं वे हजार गुण भी हों तो उन्में परिषद् नहीं होती ॥ २३ ॥

यथा काष्ठमयोहस्ती यथाचर्ममयोमृगः ॥

ब्राह्मणास्त्वनधीयान स्त्रयस्तेनामधारकाः ॥ २४ ॥

जैसे काठ का हाथी चाम का मृग इसी भांति बिन पढा ब्राह्मण ये तीनों नाम मात्र के हैं ॥ २४ ॥

ग्रामस्थानंयथाशून्यं यथाकूप स्तुनिर्जलः ॥

यथाहुतमनग्नौच अमंत्रोब्राह्मणस्तथा ॥ २५ ॥

जैसे सूना गांव निर्जल कूप, और बिना अग्नि का होम तैसाही मंत्र हीन ब्राह्मण भी है ॥ २५ ॥

यथाषंढोफलःस्त्रीषु यथागौरूषराफला ॥

यथाचाज्ञेफलंदानं तथाविप्रोऽनृचोऽफलः ॥२६॥

जैसे नपुंसक स्त्रियों को निष्फल, ऊषर पृथ्वीनिष्फल, और मूर्ख को दान दिया निष्फल तैसे ही बिना वेद का ब्राह्मण निष्फल है ॥ २६ ॥

चित्रकर्मयथानेकैरंगैरुन्मील्यतेशनैः ॥

ब्राह्मण्यमपितद्वद्धि संस्कारैर्मंत्रपूर्वकैः ॥ २७ ॥

जैसे कई रंगों से धीरे २ चित्र बनता है इसीभांति मंत्रपूर्वक संस्कारों से ब्राह्मणता सिद्ध होती है ॥ २७ ॥

प्रायश्चित्तंप्रयच्छंति येद्विजानामधारकाः ॥

तेद्विजाः पापकर्माणः समतांनरकंययुः ॥ २८ ॥

जो नाममात्र के ब्राह्मण प्रायश्चित्त देते हैं वे पापी ब्राह्मण सब नरक में जाते हैं ॥ २८ ॥

येपठंतिद्विजावेदं पंचयज्ञरताश्चये ॥

त्रैलोक्यंतारयंत्येव पंचेंद्रियरताअपि ॥ २९ ॥

जो ब्राह्मण वेद पढते हैं और पंचयज्ञकर्ते वे पंचेंद्रिय रत भी हों तो भी तीनोंलोकको तारतेही हैं ॥ २९ ॥

संप्रणीतःश्मशानेषुदीप्तोऽग्निःसर्वभक्षकः ॥

तथाचवेदविद्विप्रः सर्वभक्षोऽपिदैवतम् ॥ ३० ॥

जैसे श्मशान आदि में जलती हुई आग सब प्रकारकी वस्तु का भक्षण करती है इसी भांति वेदवित् ब्राह्मण सर्व भक्षी हो तो भी देवता ही है ॥ ३० ॥

अमेध्यानितुसर्वाणि प्रक्षिप्यंतेयथोदके ॥
तथैवकिल्विषंसर्वंप्रक्षिपेच्चाद्विजानले ॥ ३१ ॥

जैसे हर प्रकारके मैले जल में डाले जाने से दूर होते हैं तैसे ही सब पाप ब्राह्मण में डालने से जाता है ॥ ३१ ॥

गायत्रीरहितोविप्रःशूद्रादप्यशुचिर्भवेत् ॥
गायत्रीब्रह्मतत्वज्ञाः संपूज्यंतेजनैर्द्विजाः ॥ ३२ ॥

गायत्री रहित ब्राह्मण शूद्रसे भी अधिक अशुद्ध होता है गायत्री और ब्रह्मतत्व के जानने हारे ब्राह्मण और लोगों से पूजे जाते हैं ॥ ३२ ॥

दुःशीलोपिद्विजःपूज्योनतुशूद्रोजितेंद्रियः ॥
कःपरित्यज्यगांदुष्टांदुहेच्छीलवतींखरीम् ॥ ३३ ॥

ब्राह्मण दुःशील भी पूजने योग्य है और शूद्र जितेन्द्रिय भी तो न पूजिए कौनऐसा है जो दुष्टा गौको छोड़ बड़ी सूधी गधी को दुहेगा ॥ ३३ ॥

धर्मशास्त्ररथारूढा वेदखड्गधराद्विजाः ॥
क्रीडार्थमपियंब्रूयुःसधर्मःपरमःस्मृतः ॥ ३४ ॥

धर्मशास्त्ररूपी रथ पर चढ़े और वेदरूपी खड्ग को धारण किए जो ब्राह्मण हैं वे क्रीडा के अर्थ भी जो कहैं वही परम धर्म होता है ॥ ३४ ॥

चातुर्वेद्योविकल्पीचअंगविद्धर्मपाठकः ॥
त्रयश्चाश्रमिणोमुख्याःपर्षदेषादशावरा ॥ ३५ ॥

चातुर्वेद्य ( चारोंवेद जाननेहारा ) विकल्पी ( धर्म पर्षत्प्रायश्चित्तों

के प्रमाण वाला ) अंग ( वेदांग ) जानने हारा, धर्मशास्त्री और तीनों मुख्यआश्रमी ( ब्रह्मचारी आदि ) यह पर्षत् दस वा दस से अधिक की होती है ॥ ३५ ॥

राज्ञश्चानुमतेस्थित्वाप्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥
स्वयमेवनकर्तव्यं कर्तव्यास्वल्पनिष्कृतिः ॥ ३६ ॥

राजा की सम्मति से प्रायश्चित्त बतलावे आपही न बतलावे छोटा प्रायश्चित्त हो तो आप भी बतला देवे ॥ ३६ ॥

ब्राह्मणांस्तानतिक्रम्य राजाकर्तुंयदिच्छति ॥
तत्पापंशतधाभूत्वा राजानमनुगच्छति ॥ ३७ ॥

उन ब्राह्मणों का उलंघन करके जो राजा कर्म को इच्छा करे तो वह पाप सौगुणा होकर राजा को जा लगता है ॥ ३७ ॥

प्रायश्चित्तंसदादद्याद्देवतायतनाग्रतः ॥
आत्मकृच्छ्रंततःकृत्वाजपेद्वैवेदमातरम् ॥ ३८ ॥

देवता के मंदिर वा तीर्थ के सामने सदा प्रायश्चित्त देना अनन्तर पर्षद् भी प्रायश्चित्त बतलाने के कारण अपने आपभी व्रत करे और गायत्री जपे ॥ ३८ ॥

सशिखंवपनंकृत्वात्रिसंध्यमवगाहनम् ॥
गवांमध्येबसेद्रात्रौ दिवागाश्चाप्यनुव्रजेत् ॥ ३९ ॥

( अब जो प्रायश्चित्त में कर्ना है सो यो है ) कि शिखा सहित मूंड मुडाकर त्रिकाल स्नान, रात को गौओं के बीच रहना, दिन को गौओं के पीछे २ चलना ॥ ३९ ॥

उष्णेवर्षतिशीतेवा मारुतेवातिवाभृशम् ॥
नकुर्वीतात्मनस्त्राणं गोरकृत्वातुशक्तितः ॥ ४० ॥

गर्मी, वर्षा, शीत अथवा आंधी में भी यथाशक्ति गौओं की रक्षा किए बिना अपनी रक्षा न करे ॥ ४० ॥

आत्मनोऽयदिवाऽन्येषांगृहेक्षेत्रेथवाखले ॥
भक्षयन्तींनकथयेत्पिबंतंचैववत्सकम् ॥ ४१ ॥

अपने वा और किसी के घर खेत अथवा खलिहान में गौखाती हो तो न बतलावे और बछरा पीता हो तो भी न कहे ॥ ४१ ॥

पिबंतीषु पिबेत्तोयं संविशंतिषुसंविशेत् ॥
पतितांपंकलग्नांवासर्वप्राणैः समुद्धरेत् ॥ ४२ ॥

गाय जल पीने लगे तो आप जल पीवे जब वे सोवैं वा बैठैंतो आप भी सोवै बैठे, गौ कहीं गिरपड़ी हो वा पंक में फँसी हो तो अपना सारा बल लगाकर उसे उठावे ॥ ४२ ॥

ब्राह्मणार्थे गवार्थेवायस्तुप्राणान्परित्यजेत् ॥
मुच्यतेब्रह्महत्याया गोप्तागोब्राह्मणस्यच ॥ ४३ ॥

ब्राह्मण वा गौके अर्थ जो अपने प्राणोंको त्यागे वह ब्रह्महत्या से छूट जाता है तथा जिसने गौ अथवा ब्राह्मण के बध में रक्षा की हो वह भी ब्रह्महत्या से छूट जाता है ॥ ४३ ॥

गोवधस्यानुरूपेणप्राजापत्यंविनिर्दिशेत् ॥
प्राजापत्यंततःकृच्छ्रंविभजेतच्चतुर्विधम् ॥ ४४ ॥

गोबध के अनुरूप ( सदृश ) प्राजापत्य ब्रत बतलाना इसी लिये प्राजापत्य और कृच्छ्रका चार प्रकारसे विभाग करना ॥ ४४ ॥

एकाहमेकभक्ताशी एकाहंनक्तभोजनः ॥
अयाचितात्वेकमहरेकाहंमारुताशनः ॥ ४५ ॥

एक दिन एक भक्त ( एकबार भोजन ) करे, एक दिन रातको खावे, एक दिन बिनामांगे जो मिल जाए सो खावे, एक दिन कुछ न खावे ॥ ४५ ॥

दिनद्वयंचैकभक्तोद्विदिनंनक्तभोजनः ॥
दिनद्वयमयाचीस्याद्द्विदिनंमारुताशनः ॥ ४६ ॥

दो दिन एक भक्त करे, दो दिन रात में खावे, दो दिन विनमांगे और दो दिन कुछ न खावे ॥ ४६ ॥

त्रिदिनंचैकभक्ताशीत्रिदिनंनक्तभोजनः ॥
दिनत्रयमयाचीस्यात्त्रिदिनंमारुताशनः ॥ ४७ ॥

तीन दिन एकभक्त, तीन दिन रातकों, तीन दिन विनमांगे और तीन दिन कुछ न खावे ॥ ४७ ॥

चतुरहंत्वेकभक्ताशीचतुरहंक्तभोजनः ॥
चतुर्दिनमयाचीस्याच्चतुरहंमारुताशनः ॥ ४८ ॥

चार दिन नक्त, चार दिन अयाचित और चार दिन वायु भक्षण करे ( यहीचार प्रकार हैं ) ॥ ४८ ॥

प्रायश्चित्तेततस्तीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥
विप्राणांदक्षिणांदद्यात्पवित्राणिजपेद्द्विजः ॥ ४९ ॥

प्रायश्चित्त करचुके तो ब्राह्मण भोजन करावे ब्राह्मणों को दक्षिणादे और पवित्र मन्त्रों को जप द्विज अर्थात् ब्राह्मण आदि तीनों वर्णों को करना चाहिये ॥ ४९ ॥

ब्राह्मणान्भोजयित्वातुगोघ्नःशुद्ध्येन्नसंशयः ॥

इति पाराशरस्मृति अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

ब्राह्मणों को भोजन करावे तो गौ की हत्याकरने हारा शुद्ध होता है इस में सन्देह नहीं ॥

इति पाराशरस्मृति अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

गवांसंरक्षणार्थाय नदुष्येद्रोधबंधयोः ॥
तद्वधंतुनतंविद्यात्कामाकामकृतंतथा ॥ १ ॥

गौओं की रक्षा के निमित्त यदि उनका रोध ( घर अथवा वाड़े में रोकना ) और बंधन करे और उतनेही से गौ मरजावे तो दोष नहीं क्योंकि इसको गोवध नहीं कहते तथा कामाकामकृत भूल चूक वा धोखा धोखा जो हो उसे भी वध न समझना ॥ १ ॥

दण्डादूद्धर्वंयदनोन प्रहाराद्यदिपातयेत् ॥
प्रायश्चितंतदाप्रोक्तं द्विगुणंगोबधेचरेत् ॥ २ ॥

दण्ड ( जो हाथ के अंगूठे इतना मोटा काष्ठ से अधिक प्रमाण वाले लगुड़ ( लाठी ) आदि से ताडन करके मार डाले तब अकाम कृत में दूना प्रायश्चित्त गौबध में करे ॥ २ ॥

रोधबंधनयोक्त्राणि घातश्चेतिचतुर्विधम् ॥
एकपादंचरेद्रोधेद्वौपादौबंधनेचरेत् ॥ ३ ॥

रोकना बांधना, जोतना, और मारना इन चार प्रकारों से गोवध होता है तो रोध में एक चौथाई व्रत करे और बांधने में दो चौथाई ( आधा ) करे ॥ ३ ॥

योक्रोषुतुत्रिपादंस्याच्चरेत्सर्वंनिपातने ॥
गोवाटेवागृहेवापि दुर्गेष्वथसमस्थले ॥ ४ ॥

जोतने में तीन चोथाई और मारने में साराही प्रायश्चित्त करे गौ के वाडे गृह, दुर्ग, ( किला अथवा वीहड जगह जैसे पर्वत आदि) और समस्थल ( समथर वा मैदान ) ॥ ४ ॥

नदीष्वथसमुद्रेषुत्वन्येषुचनदीमुखे ॥
दग्धदेशेमृतागावःस्तंभनाद्रोधउच्यते ॥ ५ ॥

नदी, समुद्र अथवा और किसी स्थल में नदियों के मुहाने में दग्ध देश ( जहां आग लगी हो ) उस में यदि रोकेनसे गौ मरजावे तो उसे रोध कहते हैं ॥ ५ ॥

योक्त्रदामयदोरैश्चकंठाभरणभूषणैः ॥
गृहेचोपिवनेवापिवद्धः स्याद्गौर्मृतोयदि ॥ ६ ॥

योत्क, ( पाश, जोता, वा नाधा, द्दामक गाडी के जुए का नाधा ) दोर ( रस्सी ) कंठा भरण ( कंठा वा गण्डा ) और भूषण आदि से वंधे हुए गो की मृत्यु चाहे घर अथवा बन में हो जावे तो ॥ ६ ॥

तदेवबंधनंविद्यात्कामाकामकृतंचयत् ॥

हलेवाशकटेपंक्तौपृष्ठेवापीडितोनरैः ॥ ७ ॥

इसीको बंधन समझना और जो कामो काम कृत कहते सो भी यही है हल, गाड़ी और पंक्ति, ( दोचार गौओं को एक साथ जोड़ कर गलबांधने ) में अथवा पृष्ठ ( पीठ पर लादने ) में मनुष्य से पीड़ित होकर ॥ ७ ॥

गोपतिर्मृत्युमाप्नोतियोक्तोभवतितद्वधः ॥

मत्तः प्रमत्तउन्मत्तश्चेत्चानोवाऽप्यचेतनः ॥ ८ ॥

बैल मरजावे तो उसबंधको योक्त कहते हैं। मत्त, ( धनसे ) प्रमत्त, ( मदिरादिसे ) और उन्मत्त, ( ग्रहभूतपिशाचादिसे ) यदि सावधानता अथवा असावधानता में ॥ ८ ॥

कामाकामाकृतक्रोधो दण्डैर्हन्यादथोपलैः ॥

प्रहतावामृतावापितद्धिहेतुर्निपातने ॥ ९ ॥

इच्छा अथवा अनिच्छा से क्रोधकरके दण्ड अथवा पत्थर से मारे और मरजावे तो इसी को निपातन कहते हैं ॥ ९ ॥

अंगुष्ठमात्रंस्थूलस्तु बाहुमात्रंप्रमाणतः ॥

आर्द्रस्तुसपलाशश्च दण्डइत्यभिधीयते ॥ १० ॥

अंगुष्ठ के तुल्यमोटा और बाहुकी बराबर लंबा और गीला जो पत्ते समेत हो उसे दण्ड कहते हैं ॥ १० ॥

मूर्छितःपतितोवापि दण्डेनाभिहतःसतु ॥

उत्थितस्तुयदागच्छेत्पंचसप्तदशाथवा ॥ ११ ॥

दंडके मारने से मूर्छित हो अथवा गिरपड़े परन्तु पुनः उठकर यदि पांच सात अथवा दस पांवचले ॥ ११ ॥

ग्रासंवायदिगृह्णीयात्तोयंवापिपिबेद्यदि ॥

पूर्वव्याध्युपसृष्टश्चेत्प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ १२ ॥

अथवा घास आदिखाले वा पानी पीवे और पहिले से रोगी हो तो इसके मरने पर कुछ प्रायश्चित्त नहीं है ॥ १२ ॥

पिंडस्थेपादमेकंतुद्वौपादौगर्भसंमिते ॥
पादोनंव्रतमुद्दिष्टं हत्वागर्भमचेतनम् ॥ १३ ॥

पिण्डस्थं, ( पंद्रहदिनों का गौकागर्भगिरावेतो एक चौथाई व्रतकरे, गर्भ संमित ( महीने भर ) के गिराने में दोचौथाई और अचेतन ( सात महीने से पहिलेका ) गर्भगिराने में तीन चौथाई व्रतकरे॥१३॥

पादेंगरोमवपनं द्विपादेश्मश्रुणोपिच ॥
त्रिपादेतुशिखावर्ज्जं सशिखंतुनिपातने ॥ १४ ॥

एक चौथाई में शरीर के रोमसुडन करावें दोचौथाई मे रोम और दाढीमूंछभी मुडावे तीन चौथाई में शिखाछोड सारे शरीरको मुण्डन करावे और निपातन में तो शिखासमेत मुण्डन करावे ॥ १४ ॥

पादेवस्त्रयुगंचैव द्विपादेकांस्यभाजनम् ॥
त्रिपादेगोवृषंदद्याच्चतुर्थेगोद्वयंस्मृतम् ॥ १५ ॥

चौथाई व्रत करे तो वस्त्रब्राह्मण को दक्षिणादे दोचौथाई-अर्थात् आधा व्रत करे तो कांसेका पात्रदे, तीन चौथाई व्रत जब करे तो बल देवै सारा व्रत करे तो दो गौ दक्षिणादे ॥ १५ ॥

निष्पन्नसर्वगात्रस्तु दृश्यतेवासचेतनः ॥
अंगप्रत्यंगसंपूर्णो द्विगुणंगोव्रतंचरेत् ॥ १६ ॥

जब गौके गर्भ में चेतन अर्थात् जीव पडा हो सारे अंग प्रत्यंग बन गये होवैं उस समय जो उसका निपात करे तो दूनी गोहत्या व्रत करे ॥ १६ ॥

पाषाणेनैवदंडेन गावोयेनाभिघातिताः ॥
शृंगभंगेचरेत्पादं द्वौपादौ नेत्रघातने ॥ १७ ॥

यदि कोई पत्थर वा दंडे से गौ को मारे और उस्की सींघ टूट जावे वा आंख फूटे तो पहिले में चौथाई और दूसरे में आधा व्रत

करे ॥ १७ ॥

लांगूलेपादकृच्छ्रंतु द्वौपादावस्थिभंजने ॥
त्रिपादंचैवकर्णेतु चरेत्सर्वंनिपातने ॥ १८ ॥

पुच्छ तोडे तो पादकृच्छ्र करे और हड्डी टूटे तो आधा कृच्छ्रकरे कान तोडे तो तीन चौथाई व्रत करे मरजावे तो सारा व्रत करे ॥ १८ ॥

श्रृंगभंगेस्थिभंगे च कटिभंगेतथैवच ॥
यदिजीवतिषण्मासान्प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ १९ ॥

सींघ टूटे वा हड्डी टूटेअथवा कमर टूटजावे और उस्के अनन्तर भी वह गौ छ महीने तक जीता रहै तो प्रायश्चित नहीं होता है १९

व्रणभंगेचकर्त्तव्यः स्नेहाभ्यंगस्तुपाणिना ॥
यवसश्चोपहर्त्तव्यो यावत्दृढबलोभवेत् ॥ २० ॥

यदि गौका फोड़ दे तो अपने हाथ से उसमें तैल वा घी लगावे और जब तक वह गौ दृढ और बली न हो तब ताईं उसको हरी घास ले आकर दिया करे ॥ २० ॥

यावत्संपूर्णसर्वांग स्तावत्तंपोषयेन्नरः ॥
गोरूपंब्राह्मणस्याग्रे नमस्कृत्वाविसर्जयेत् ॥२१॥

जब तक उसका सारा अंग पूरा न हो तबतक उसका पोषण वह नर करे अनन्तर उस गौ का किसी ब्राह्मणको नमस्कार करके दे देवे ॥ २१ ॥

सद्यः संपूर्णसर्वांगो हीनदेहीभवेत्तदा ॥
गोघातकस्यतस्यार्द्धं प्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ २२ ॥

जब उसके अंग सब अच्छे होगए हो तब गौका देह छूट जावे तो उसमें घातक को आधा प्रायश्चितदेना । २२ ॥

काष्ठलोष्टकपाषाणै शस्त्रेणैवोद्धतोबलात् ॥
व्यापादयतियोगांतु तस्यशुद्धिं विनिर्दिशेत् ॥२३॥

काष्ठ ईंट पत्थर अथवा शास्त्रोंसे ही जो उद्धत मनुष्य बलात्कारसे गौका मारे तो उसकी शुद्धि यों करनी ॥ २३ ॥

चरेत्सांतपनंकाष्ठे प्राजापत्यंतुलोष्टके ॥
तप्तकृच्छ्रंतुपाषाणे शस्त्रेणैवातिकृच्छ्रकम् ॥२४॥

सांतपन व्रत काठे से मारने में, ईंटमें प्राजापत्य, पत्थरमे तप्त कृच्छ्र, और शस्त्र से मारने में अति कृच्छ्र व्रत करे ॥ २४ ॥

पंचसांतपनेगावः प्राजापत्येतथात्रयः ॥
तप्तकृच्छ्रेभवंत्यष्टा वतिकृच्छ्रेत्रयोदश ॥ २५ ॥

सान्तपन व्रत के बदले पांच गौदान होते हैं, प्राजापत्यके तीनगौ, तप्तकृच्छ्र में आठगौं, और अति कृच्छ्र में तेरह गौ होती हैं ॥ २५ ॥

प्रमापणेप्राणभृतांदद्यात्तत्प्रतिरूपकम् ॥
तस्यानुरूपंमूल्यंवादद्यादित्यब्रवीन्मनुः ॥ २६ ॥

जिसकी गौ वा कोई पशु मारा हो तो उसके स्वामी को वैसाही पशुदेदेवे अथवा दो मनुष्य जो उसका मोल कह दें सो देवे ऐसा मनुने कहा है ॥ २६ ॥

अन्यत्रांकनलक्ष्याभ्यां वाहनेमोचनेतथा ॥
सायंसंगोपनार्थंच नदुष्येद्रोधबंधयोः ॥ २७ ॥

वृषोत्सर्ग आदिमें जो शस्त्रसे अंकन ( चक्रत्रिशूलादि ) होता है तथा उसी अंकन के निमित्त जो गोधम से लक्ष्य ( चिन्ह ) किया जाता है उसमें वाहन ( गोनलादने ) और मोचन ( गोनउतारने मे और संध्या समय में रक्षा केलिये जो रोध और बंध किया जाता हैं उससे गौ मरजावे तो दोष नहीं ॥ २७ ॥

अतिदाहेतिवाहे च नासिकाभेदनेतथा ॥
नदीपर्वतसंचारे प्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ २८ ॥

यदि अत्यंत दाह ( दागना ) अथवा वाहन ( लादना ) वो जो

तना ) किंवा नासिका छेदन ( नाकछेदना ) गौका करै और ऐसी नदी अथवा पर्वत में जहां मरने का भयहो चरावे उसमें यदि गौमरजावे तो यों प्रायश्चितकरे ॥ २९ ॥

अति दाहेचरेत्पादंद्वौपादौवाहनेचरेत् ॥
नासिक्येपादहीनंतु चरेत्सर्वंनिपातने ॥ २९ ॥

कि अति दाहमेंपाद, दो पाद अति वाहन में नाथनेमें तीनपाद और निपात में सारही प्रायश्चित्त करे ॥ २९ ॥

दहनात्तुविपद्येत अनड्वा योक्त्रयंत्रितः ॥
उक्तंपराशरेणैवह्येकंपादंयथाविधि ॥ ३० ॥

यदि गौ घरमें आग लगने से मरजावे जुए में नधा हुआ मरे तो पराशरनेही एकपाद ( चौथाई ) व्रत यथाविधि करने कहा है ॥ ३० ॥

रोधनंबंधनंचैव भारप्रहरणंतथा ॥
दुर्गप्रेरणयोक्त्रं च निमित्तानिवधस्यषट् ॥ ३१ ॥

रोधन, बंधन, भार, प्रहार, दुर्ग अर्थात् विषमस्थल में लेजाना, और जुएमें जोतना ये ६ वधके निमित्त हैं ॥ ३१ ॥

बंधपाशसुगुप्तांगो म्रियतेयदिगोपशुः ॥
भवनेतस्यपापीस्यात्प्रायश्चित्तार्द्धमर्हति ॥ ३२ ॥

बंधन, और पाश ( गलेका बंधन ) से जकड़ा हुआ ही यदि गौ वा बैल किसी के घरमें मरजावे तो वह भी पापी होता है वसे आधा प्रायश्चित्त करना चाहिये ॥ ३२ ॥

ननारिकेलैर्नचशाणवालैर्नचापिमौंजैर्नचवल्कशृंखलैः
एतैस्तुगावोननिबंधनीया बध्वातुतिष्ठेत्परशुंगृहीत्वा ३३

नारियल, शण, वाल, मुंज, औ वल्क ( दरख्त की छाल ) के रस्से से और लोहे का शृंखले ( सिंकडी, वा सीकड ) इनसे गौका नबांधे यदि बांधेतो परशु ( काटने का शस्त्र ) लेकर खड़ारहे ॥ ३३ ॥

कुशैः काशैश्चबध्नीयाद्गोपशुंदक्षिणामुखम् ॥
पाशलग्नाग्निदग्धेषुप्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ ३४ ॥

गौको कुश और काश की रस्सी से दक्षिण मुंह बांधे तो पाश लगे रहने और अग्नि में जलजाने से दोष नहीं ॥ ३४ ॥

यदितत्रभवेत्काष्ठंप्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥
जपित्वापावनींदेवीं मुच्यतेसर्वकिल्बिषात् ॥ ३५ ॥

यदि कुश काश की रस्सिओं में काठ भी लगाकर बांधा हो तो यों प्रायश्चित्त होताहै कि गायत्री वा पावमानी ऋचा को अष्टोत्तर सौ जप के उस पाप से छूटता है ॥ ३५ ॥

प्रेरयन्कूपवापीषुवृक्षच्छेदेषुपातयन् ॥
गवाशनेषुविक्रीणं स्ततः प्राप्नोतिगोवधम् ॥ ३६ ॥

कूप, वापी, और जहांपर बडे २ वृक्ष काटे जाते हों ऐसे स्थलों में ले जावे अथवा गोभक्षक (म्लेच्छ) के हाथ बेचे तो गौवध का प्रायश्चित्त करे ॥ ३६ ॥

आराधितस्तुयः कश्चिद्भिन्नकक्षोयदाभवेत् ॥
श्रवणंहृदयंभिन्नं मग्नोवाकूप संकटे ॥ ३७ ॥

यदि किसी बैल को यत्नसे पुष्ट करके दौडाने आदि में उसका कक्ष हीन वा छाती फट जावे अथवा कूप आदि संकट के स्थल में गिर पडे ॥ ३७ ॥

कूपादुत्क्रमणेचैव भग्नोवाग्रीवपादयोः ॥
सएवम्रियतेतत्र त्रीन्पादास्तुसमाचरेत ॥ ३८ ॥

कूप से निकलते समय भी यदि गर्दन वा पांव टूट जावे और उसी से वह बैल मरे तीन चौथाई प्राजापत्य व्रतकरे ॥ ३८ ॥

कूपखातेतटाबंधे नदीबंधेप्रपासुच ॥
पानीयेषुविपन्नानांप्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ ३९ ॥

पुराने कूपके गर्तमें तड़ावंध, ( जिसे बांध कहते है ) में नदी बंध ( सेतु वा पुल ) में प्रपा, ( पौंसले ) में और यदि पानी के गर्त बीच डूब मरेतो प्रायश्चित्त नहीं होता है ॥ ३९ ॥

कूपखातेतटाखाते दीर्घखातेतथैव च ॥

स्वल्पेषुधर्मखातेषु प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ ४० ॥

कूपखात तड़ाखात दीर्घ खाते. और छोटे २ जो धर्म खाते है इन्मेंगिरकर मरजानेसे प्रायश्चित्त नहीं है ॥ ४० ॥

वेश्मद्वारे निवासेषुयोनरः खातमिच्छति ॥

स्वकार्यगृहखातेषु प्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ ४१ ॥

घरके द्वारपर गौओंके निवासस्थल ( रहने की जगह ) में जो कोई अपने कार्य के लिए गर्तकरे और गृहनिर्माण के लिये जो गर्तहो इन्में मरजावे तो प्रायश्चित्त होता है ॥ ४१ ॥

निशिबंधनिरुद्धेषु सर्पव्याघ्रहतेषु च ॥

अग्निविद्युद्विपन्नेषु प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ ४२ ॥

रातमें बांधले वा निरोध करनेसे, सर्प अथवा व्याघ्र के द्वारा अग्नि लगने वा विद्युत ( विजली गिरनेसे जोमरे ) उसमें प्रायश्चित्त नहीं ॥ ४२ ॥

ग्रामघातेशरौघेण वेश्मभंगान्निपातने ॥

अतिवृष्टिहतानांच प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ ४३ ॥

ग्रामको घेरकर शत्रुलोग मारते हों और उनके बाणसे गौ भी मरजावे तथा घरगिरनेसे मरै अथवा बड़ी वृष्टिहोनेसे मरै तो उसमें प्रायश्चित्त नहीं ॥ ४३ ॥

संग्रामेप्रहतानांच येदग्धावेश्मकेषुच ॥

दावाग्निग्रामघातेषु प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ ४४ ॥

संग्राममें, घरके बीच जलकर, दावाग्निमें जंगल में आग लगने से और जब गांवका गांवघात होरहा हो इन स्थलों में गौमरेतो

प्रायश्चित्त नहीं हैं ॥ ४४ ॥

यंत्रितागौश्चिकित्सार्थं गूढगर्भविमोचने ॥
यत्नेकृतेविपद्येत प्रायश्चित्तंनविद्यते ॥४५॥

औषधकेलिये जो गौ बांधी गई हो तथा पेट में जो गर्भ मर गया उसके निकालने में यदि गौ मरे तो दोष नहीं ॥ ४५ ॥

व्यापन्नानांबहूनांच रोधेनेवंधनेपिवा ॥
भिषङ्मिथ्योपचारेण प्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥ ४६ ॥

बांधने वा रोधन करने में यदि बहुत सी गौ मर जावें और वैद्य के उलटे पुलटे औषध देने से मरे तो वहां पर प्रायश्चित्त होता है ॥ ४६ ॥

गोवृषाणांविपत्तौच यावतः प्रेक्षकाजनाः ॥
अनिवारयतांतेषां सर्वेषां पातकंभवेत् ॥ ४७ ॥

यदि गौ वा बैल कहीं कूप आदि में गिरकर वा किसी प्रकार मरजावे और उनके बचाने में यत्न न करे चुप चाप जो लोग देखा करें उन सबोंको प्रायश्चित्त होता है ॥ ४७ ॥

एकोहतोयैर्बहुभिः समेतैर्नज्ञायतेयस्यहतोभिघातात् ॥
दिव्येनतेषामुपलभ्यहंता निवर्त्तनीयोनृपसन्नियुक्तैः ४८

जहां कई मनुष्यों ने मिल कर एक को मारा हो और यह न बूझ पड़े कि किसकी चोट से गौ मरी तो दिव्य ( शपथआदि ) से उनके बीच मारने हारे का निश्चय करके राजनियुक्त मनुष्य उसे अलग कर सब को दिखला दे ॥ ४८ ॥

एकाचेद्बहुभिः काचिद्दैवाद्व्यापादिताक्वचित् ॥
पादंपादंतुहत्यायाश्चरेयुस्तेपृथक् पृथक् ॥ ४९ ॥

यदि एक गौको कई मनुष्यों ने मारा हो तो वे सब एक एक चौथाई प्रायश्चित्त करे ॥ ४९ ॥

हतेतुरुधिरंदृश्यंव्याधि ग्रस्तः कृशोभवेत् ॥
लालाभवतिदष्टेषु एवमन्वेषणंभवेत् ॥ ५० ॥

किस कारण से गौ की मृत्यु हुई इस्के जानने का उपाय यों है कि रुधिर देख पड़े तो मारा हुआ जानना कृश ( दुबला होकर मरा हो तो व्याधि से मरा जाने लाला ( मुंह से लार ) बहती हो तो सांप के काटने से मरा जाने ॥ ५० ॥

ग्रासार्थंचोदितोवापि अध्वानंनैवगच्छति ॥
मनुना चैवमेकेन सर्वशास्त्राणिजानता ॥ ५१ ॥

और खाने के लिए प्रेरणा करने से भी न चले तो भी उसे कष्टित जानना ऐसा मनुजी ने जो सर्व शास्त्रज्ञाता हैं इन्की मृत्यु का हेतु जानने का उपाय कहा है ॥ ५१ ॥

प्रायश्चित्तंतुतेनोक्तं गोघ्नंचांद्रायणंचरेत् ॥
केशानांरक्षणार्थायद्विगुणंव्रतमाचरेत् ॥ ५२ ॥

उन्हों ने प्रायश्चित्त भी यों कहा है कि गोघ्न से चांद्रायण करावै और यदि केशों का मुंडन न करावे तो दूना व्रत करे ॥ ५२ ॥

द्विगुणव्रतआदिष्टेदक्षिणाद् द्विगुणाभवेत् ॥
राजावाराजपुत्रोवाब्राह्मणोवाबहुश्रुतः ॥ ५३ ॥

दूने व्रत में दक्षिणा भी दूनी होती है राजा, राजाका पुत्र, अथवा बहुश्रुत ब्राह्मण ॥ ५३ ॥

अकृत्वावपनंतेषांप्रायश्चित्तंविनिर्दिशेत् ॥
यस्यनद्विगुणंदानं केशांश्चपरिरक्षतः ॥ ५४ ॥

कोई भी यदि हत्यारों को केशमुंडन कराये विना दूना प्राय श्चित्त न करावे ॥ ५४ ॥

तत्पापंतस्यतिष्ठतमृत्वाच नरकंव्रजेत् ॥
यत्किंचित्क्रियतेपापंसर्वंकेशेषुतिष्ठति ॥ ५५ ॥

तो वह पाप उसका रहता है और देह त्याग करें पर नरक में पड़ता है जो कुछ पाप करे सो सब केशों में रहता है ॥ ५५ ॥

सर्वान्केशान्समुद्धृत्य छेदयेदंगुलिद्वयम् ॥
एवंनारीकुमारीणां शिरसोमुंडनंस्मृतम् ॥ ५६ ॥

स्त्री और कुमारी का मुंडन यों होता है कि सारा केश पकड़ के ऊपर २ का दो दो अंगुल बाल काट लेवे ॥ ५६ ॥

नास्त्रियाः केशवपनं नदूरेशयनासनम् ॥
नचगोष्ठेवसेद्रात्रौ नदिवागाअनुव्रजेत् ॥ ५७ ॥

स्त्रियों को सारे केशका मुंडन, दूर होकर सोना, बैठना, गौशाला में रात का रहना, और दिनमें गौओं के पीछे पीछे जाना ये काम नहीं करने होते हैं ॥ ५९ ॥

नदीषुसंगमे चैव अरण्येषुविशेषतः ॥
नस्त्रीणामजिनंवासोव्रतमेवसमाचरेत् ॥ ५८ ॥

विशेष करके नदी नदियों के संगम और जंगल में स्त्रियों को न वास देना तथा मृगचर्म भी उन्हें न पहिनाना ऐसी भांति उनसे व्रत कराना चाहिए ॥ ५८ ॥

त्रिसंध्यंस्नानमित्युक्तं सुराणामर्च्चनंतथा ॥
बंधुमध्येव्रतंतासां कृच्छ्रचांद्रायणादिकम् ॥ ५९ ॥

त्रिकाल स्नान देवताओं का पूजन और अपने बंधुओं के मध्य रहना इस भांति स्त्रियों का कृच्छ्र चान्द्रायणादि व्रत होता है ॥ ५९ ॥

गृहेषुसततंतिष्ठेच्छुचिर्नियममाचरेत् ॥
इहयोगोवधं कृत्वाप्रच्छादयितुमिच्छति ॥ ६० ॥

घर में ही सदा पवित्र रह कर स्त्रियां नियम करें जो कोई गोहत्या करके इस संसार में छिपाना चाहता है सो ॥ ६० ॥

सयातिनरकंघोरं कालसूत्रमसंशयम् ॥

विमुक्तोनरकात्तस्मान्मर्त्यलोकेप्रजायते ॥ ६१ ॥

घोर नरक कालसूत्र नाभी में निस्सन्देह जा पड़ता है उस नरक से छूट कर जब पुनः मर्त्यलोक में आता है तो ॥ ६१ ॥

क्लीबोदुःखीचकुष्ठी च सप्तजन्मनिवैनरः ॥
तस्मात्प्रकाशयेत्पापंस्वधर्मंसततं चरेत् ॥ ६२ ॥

क्लीब ( नपुंसक ) दुःखी और कुष्ठी सात जन्म तक होता है इस हेतु पाप को प्रकट करके सदा अपने धर्म को करे ॥ ६२ ॥

स्त्रीबालभृत्यगोविप्रे ष्वतिकोपंविवर्जयेत् ॥
इतिपाराशरीये धर्म शास्त्रे गोरक्षणार्थं गोविपात्ति
प्रायश्चित्तंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ।

स्त्री, बालक, भृत्य ( नौकर ) गौ और ब्राह्मण इनके ऊपर अति क्रोध न करे ।

इति श्री ००००० नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

चातुर्वर्ण्येषुसर्वेष हितांवक्ष्यामिनिष्कृतिम् ॥
अगम्यागमनेचैव शुद्धौचांद्रायणंचरेत् ॥ १ ॥

चारों वर्ण के लोगों के लिए बड़ी हितकारी शुद्धि अब कहूंगा ( अपनीस्त्री के बिना ) अन्य स्त्री में जावे तो चान्द्रायण व्रत करने से शुद्ध होता है ॥ १ ॥

एकैकंह्रासयेद्ग्रासं कृष्णेशुक्लेचवर्द्धयेत् ॥
अमावास्यांनभुंजीत ह्येषचाद्रायणेविधिः ॥ २ ॥

कृष्णपक्ष में एक २ ग्रास घटाते जाना, और शुक्ल पक्षमें एक एक बढाते जाना और अमावास्या को कुछ भी भोजन न करे यही चान्द्रायणी विधि है ॥ २ ॥

कुक्कुटांडप्रमाणंतु ग्रासंवैपरिकल्पयेत् ॥
अन्यथा जातदोषेणनधर्मोनचशुद्ध्यते ॥ ३ ॥

प्रायश्चित्तैततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥
गोद्वयंवस्त्रयुग्मंच दद्याद्विप्रेषुदक्षिणाम् ॥ ४ ॥

कुक्कुट ( मुर्गी ) के अंडे की बराबर ग्रास बनाना यदि घट बढ़ करे तो दोष होने से धर्म और शुद्धि दोनों नहीं होती है ॥ ३ ॥

चांडालींवाश्वपाकींवा अनुगच्छतियोद्विजः ॥
त्रिरात्रमुपवासित्वा विप्राणामनुशासनात् ॥ ५ ॥

प्रायश्चित्त करचुके तो ब्राह्मण भोजन करावे और दोगौ तथा दोवस्त्र ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे ॥ ४ ॥

सशिखंवपनंकृत्वा प्राजापत्यद्वयंचरेत् ॥
ब्रह्मकूर्चंततः कृत्वा कुर्याद् ब्राह्मणतर्पणम् ॥६॥

जोद्विज चाण्डाली अथवा श्वपाकी में गमन करता है वह तीन दिनरात उपवासकर्के ब्राह्मणों की आज्ञा से ॥ ५ ॥

गायत्रींचजपन्नित्यं दद्याद्गोमिथुनद्वयम् ॥
विप्रायदक्षिणांदद्या च्छुद्धिमाप्नोत्यसंशयम् ॥ ७ ॥

शिखासमेते मुण्डन कराकर दोप्राजापत्य करे अनन्तर ब्रह्मकूर्च व्रतकर्के ब्राह्मण भोजन करावे ॥ ६ ॥

गोद्वयंदक्षिणांदद्या च्छुद्धिंपाराशरोब्रवीत् ॥
क्षत्रियोवाथ वैश्योवा चांडालींगच्छतोपिवा ॥ ८ ॥

गायत्री का नित्यही जपकरे और दोबैल तथा दोगौ ब्राह्मण कोदे तथा दक्षिणाभी देतो निश्चय कर्के शुद्ध होता है ॥ ॥ ७ ॥

दक्षिणा दो गौदे ऐसी शुद्धि पराशर ने कही है यदि क्षत्रिय अथवा वैश्य चाण्डाली में गमन करेतो ॥ ८ ॥

प्राजापत्यद्वयंकुर्यात् दद्याद्गोमिथुनद्वयम् ॥
श्वपाकींवाथचांडालीं शूद्रोवायदि गच्छति ॥ ९ ॥

दो प्राजापत्य करके दो गौ दो बैल दान दे। यदि कोई शूद्र श्वपा की अथवा चाण्डाली में जावे ॥ ९ ॥

प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंचतुर्गोमिथुनंददेत् ॥
मातरंयदिगच्छेत्तु भगिनीस्वसुतांतथा ॥ १० ॥

तो प्राजापत्य कृच्छ्र करके चार गौ चार बैल दान दे यदि कोई माता, बहन, और निज पुत्री में गमन करे ॥ १० ॥

एतास्तुमोहितो गत्वाकृच्छ्राणित्रीणिसंचरेत् ॥
चांद्रायणत्रयंकुर्याच्छिश्नच्छेदेनशुद्ध्यति ॥ ११ ॥

तो मोह से इनमें गमन करके तीन कृच्छ्र व्रत करे और तीन चांद्रायण भी करेतदनन्तर लिंग काटडाले तब शुद्ध होता है ॥ ११ ॥

मातृष्वसृगमेचैवआत्ममेढ्रनिकृंतनम् ॥
अज्ञानेनतुयोगच्छेत्कुर्याच्चांद्रायणत्रयम् ॥ १२ ॥

मासी में भी गमन करे तो अपना लिंग काटडाले जो कोई इनमें अज्ञान से गमन करे वह तीन चान्द्रायण करे ॥ १२ ॥

दशगोमिथुनं दत्वा शुद्धिंपाराशरोब्रवीत् ।
पितृदारान्समारुह्य मातुराप्तांचभ्रातृजाम् ॥ १३ ॥

दस गौ और दस बैल दान दे तो पराशर ने शुद्धि कही है पिता की स्त्रियों में ( अर्थात् अपनी माता को सौतिनों में ) गमन करे अथवा माता की सखी में वा भाई की कन्या में ॥ १३ ॥

गुरुपत्नींस्नुषांचैव भ्रातृभार्यांतथैवच ॥
मातुलानींसगोत्रांच प्राजापत्यत्रयंचरेत् ॥ १४ ॥

गुरु की पत्नी में, पुत्र की वधू में, भाई की स्त्री में, मामी, और सगोत्रा स्त्री में, गमन करे तो तीन प्राजापत्य व्रत करे ॥ १४ ॥

गोद्वयंदक्षिणांदत्वा मुच्यतेनात्रसंशयः ॥
पश्वादिगमने महिष्युष्ट्रीकपींस्तथा ॥ १५ ॥

और दो गौ दक्षिणादेतो शुद्ध होता है पशु, वेश्या भैंस ऊंटिन वानरी, ॥ १५ ॥

खरींचसूकरीं गत्वा प्राजापत्यंसमाचरेत् ॥
गोगामीचत्रिरात्रेण गामेकांब्राह्मणेददेत् ॥१६॥

गधी और शूकरी में गमन करे तो प्राजापत्य व्रत करे गौ में गमन करे तो तीन दिन रात उपवास करके एकगौ ब्राह्मणकोदे ॥१६॥

महिष्युष्ट्रीखरीगामी त्वहोरात्रेणशुद्धयति ॥
अमरेसमरेवापि दुर्भिक्षे वाजनक्षये ॥ १७ ॥

भैंस, ऊंटिन और गधी में यदि एक ही वार गमन करे तो एक दिन रात उपवास कर्ने से शुद्ध होता है डाका, युद्ध, दुर्भिक्ष, ( अकाल ) महामारी ॥ १७ ॥

बंदिग्राहभयार्ता वा सदास्वस्त्रींनिरीक्षयेत् ॥
चाण्डालैः सहसंपर्कंयानारीकुरुतेततः ॥१८॥

बल से दासी करण, राजा और चोर के भय से सदा अपनी स्त्री की रक्षा कर्नी जो स्त्री चाण्डाल का संग कर्ती है तो ॥ १८ ॥

विप्रान्दशवरान्कृत्वा स्वयंदोषंप्रकाशयेत् ॥
आकंठसंमितेकूपे गोमयोदककर्दमे ॥ १६ ॥

वह बड़े उत्कृष्ट दश ब्राह्मणों के सामने अपने दोष को कहे और गले पर्यंत किसी कूप वा गर्त्त में जल और गोवर की कीचड़ बनाकर ॥ १९ ॥

तत्रस्थित्वानि राहारात्वहोरात्रेणानिष्क्रमेत् ॥
सशिखंवपनंकृत्वाभुंजीयाद्यावकौदनम् ॥ २० ॥

उसमें दिन रात विन भोजन किएही खड़ी रहे अनन्तर निकल कर दूसरे दिन शिखा समेत मुण्डनकराव और यवका भात खावे२०

त्रिरात्रमुपवासित्वा त्वेकरात्रंजलेवसेत् ॥

शंखपुष्पीलतामुलं पत्रंवाकुसुमंफलम् ॥ २१ ॥

तदनन्तर तीनदिन उपवास करके एक दिन रात जल में खड़ी रहे सातवें दिन शंख पुष्पी लता का फल, फूल, जड़ वा पत्ते में से कोई एक ॥ २१ ॥

सुवर्णंपंचगव्यंचक्काथयित्वापिवेज्जलम् ॥

एकभक्तंचरेत्पश्चा द्यावत्पुष्पवतीभवेत् ॥ २२ ॥

और सोना तथा पंचगव्य इन सबों को इकट्ठा जल में औट उस जल को पीछे पीवे जब तक रजस्वला न हो एक भक्त व्रत करती रहै ॥ २२ ॥

व्रतंचरतितद्यावत्तावत्संवसतेवहिः ।

प्रायश्चित्तेततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥२३॥

जब ताईं व्रत करे तब तक बाहर निवास करे प्रायश्चित करके ब्राह्मण भोजन करावे ।२३ ॥

गोद्वयंदक्षिणांदद्याच्छुद्धिंपाराशरोब्रवीत् ॥

चातुर्वर्ण्यस्यनारीणां कृच्छ्चांद्रायणंचरेत् ॥ २४

दो गौ दक्षिणा दे तो शुद्ध होती है ऐसा पराशर ने कहा है यदि इच्छा पूर्वक चारो वर्ण की स्त्रियां चाण्डाल का संग करें तो एक कृच्छ्र और एक चान्द्रायण व्रत करें ॥ २४ ॥

यथाभूमिस्तथानारी तस्मात्तांनतुदूषयेत् ॥

बंदिग्राहेणयाभुक्ता हत्वाबद्धाबलाद्भयात् ॥ २५॥

जैसी पृथ्वी तैसी ही स्त्री होती है इस से उसको दूषण न देवे जो स्त्री बलात्कार से बांध मार करके दासी बनाई जाकर भोगी गई हो ॥ २५ ॥

कृत्वासांतपनंकृच्छ्रं शुद्ध्येत्पाराशरोब्रवीत् ॥

सकृत्भुक्तातुयानारी नेच्छंतीपापकर्मभिः ॥२६॥

तो वह सान्तपन कृच्छ्र करके शुद्ध होती है ऐसा पराशर ने कहा जिस विन चाहनी स्त्री को पाप कर्मियों ने एक ही वार भोग किया हो ॥ २६ ॥

प्राजापत्येनशुद्ध्येतऋतुप्रस्रवणेन च ॥
पतत्यर्द्धशरीरस्य यस्यभार्यासुरांपिवेत् ॥ २७ ॥

वह प्राजापत्य व्रत और ऋतुकाल में रज के वहने से शुद्ध होती है जिसका भार्या सुरा पी ले तो उसकी आधा शरीर पतित होती है ॥ २७ ॥

पतितार्द्धशरीरस्य निष्कृतिर्नविधीयते ॥
गायत्रींजपमानस्तु कृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ २८ ॥

जिसका आधा शरीर पतित हुआ उसकी शुद्धि नहीं वह गायत्री जपता हुआ कृच्छ्र सान्तपन व्रत को करे ॥ २८ ॥

गोमूत्रंगोमयंक्षीर दधिसर्पिः कुशोदकम् ॥
एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रंसांतपनंस्मृतम् ॥ २९ ॥

एक दिन गोमूत्र पीकर रहै दूसरे दिन गोवर, तीसरे दिन गौ का दूध, चौथे दिन गौका दही, पांचवें दिन घी, छठे दिन कुशा का जल पीकर रहै और सातवे दिन उपवास व्रत करे यही कृच्छ्र सांत पन व्रत कहा है ॥ २९ ॥

जारेणजनयेद्गर्भं मृतेत्यक्तेगतेपतौ ॥
तांत्यजदपरेराष्ट्रे पतितांपापकारिणीम् ॥ ३० ॥

जो स्त्री अपने पति के मरने, त्यागने, और विदेश जाने पर जार से गर्भवती हो तो उस पापिनी को दूसरे राज्य में छोड आना ॥ ३० ॥

ब्राह्मणीतुयदागच्छेत्परपुन्सासमन्विता ॥
सातुनष्टाविनिर्दिष्टानतस्यागमनंपुनः ॥ ३१ ॥

जो ब्राह्मणी किसी दूसरे पुरुष के साथ जावे तो वह नष्टा

कहाती है उसको पुनः आगमन नहीं होता ॥ ३१ ॥

कामान्मोहाच्चयोगच्छेत्त्यक्त्वाबंधून्सुतान्पतिम् ॥

साऽपिनष्टापरेलोकेमानुषेषुविशेषतः ॥ ३२ ॥

जो अपने बंधु, सुत, और पति को छोड़ कर काम अथवा मोह से चली जावे वह भी परलोक में नष्टा होती है और इस लोक में तो अधिक नष्टा होती है ॥ ३२ ॥

मदमोहगतानारी क्रोधाद्दंडादिताडिता ॥

अद्वितीयगताचैव पुनरागमनंभवेत् ॥ ३३ ॥

कोई स्त्री मद मोह से चली जावे और क्रोध में आकर दंड आदि से ताडित होकर यदि अकेली जावे तो उसका पुनः आगमन होता है ॥ ३३ ॥

दशमेतुदिनेप्राप्तेप्रायश्चित्तंनविद्यते ॥

दशाहंनत्यजेन्नारीं त्यजन्नष्टस्तुतांतथा ॥ ३४ ॥

यदि दस दिन बाहर हो बीत जावें तो प्रायश्चित नहीं हो सक्ता इस लिए दस दिन तक स्त्री को त्याग कर न रखना दस दिन त्याग हो रहै तो स्वयं नष्ट होकर ॥ ३४ ॥

भर्त्ताचैवचरेत्कृच्छ्रं कृच्छ्रार्द्धं चैवबांधवाः ॥

तेषांभुक्त्वाचपीत्वाच अहोरात्रेणशुद्ध्यति ॥ ३५ ॥

भर्त्ता भी एक कृच्छ्र व्रत करे और संबंधि आधा कृच्छ्र व्रत करें उनके घर भोजन करने और पानी पीने से दिन रात उपवास करे तो शुद्ध होता है ॥ २५ ॥

ब्राह्मणीतुयदागच्छेत्परपुंसाविवर्जिता ॥

गत्वापुंसांशतंयाति त्यजेयुस्तांतुगोत्रिणः ॥ ३६ ॥

ब्राह्मणी यदि अकेली चलीजावे और सौ पुरुषों के पास जाकर आवैतो उसे गोत्री लोग छोड़दवै ॥ ३६ ॥

पुंसोयदिगृहंगच्छेत्तदाशुद्धंगृहंभवेत् ॥

पितृमातृगृहंयच्च जारस्यैवतुतद्गृहम् ॥ ३७ ॥

यदि वह अपने पुरुष के घर जावे तो वह घर अशुद्ध हो जाता है माता पिता के घर जावे तो वह जारकाही घर होता है ॥ ३७ ॥

उल्लिख्यतद्गृहपरंची त्संचगव्येनशोधयेत् ॥
त्यजेच्चमृण्मयंपात्र वस्त्रकाष्ठंचशोधयेत् ॥ ३८ ॥

उसघर को भूमि और मिट्टी को कुछ २ छीलकर पीछे पंचगव्य से लीपदेवे। मिट्टी के वर्तनों को फेंकदेवे और वस्त्र तथा काष्ठ को धो डाले। ३८ ॥

संभारांश्शोधयेत्सर्वान् गोबालैश्चफलोद्भवान् ॥
ताम्राणिपंचगव्येन कांस्यानिदशभस्मभिः ॥ ३९ ॥

और भी जो घरकी वस्तु हैं उनको शुद्ध करडाले अर्थात् फल से बनेहुए को गोवालों से ताम्र को पंचगव्य से और कांसे के वर्तनों को दसवार भस्म लगाने से शुद्धकरे ॥ ३९ ॥

प्रायश्चित्तंचरेद्विप्रो ब्राह्मणैरुपपादितम् ॥
गोद्वयंदक्षिणांदद्यात्प्राजापत्यद्वयं चरेत् ॥ ४० ॥

यदि ब्राह्मणहो तो दूसरे ब्राह्मणों का कहाहुआ प्रायश्चित्त करे दो गौ दक्षिणादेवे और दो प्राजापत्यकरे ॥ ४० ॥

इतरेषामहोरात्रं पंचगव्येनशोधनम् ॥
उपवासैर्व्रतैः पुण्यः स्नानसंध्यार्चनादिभि ॥ ४१ ॥

और वर्ण हो तो एक दिन रात उपवास करके पंचगव्य से शुद्ध होते हैं। उपवास, व्रत, पुण्य, स्नान, संध्या, और पूजन आदि ४१

जपहोमदयादानैः शुद्ध्येतब्राह्मणादयः ॥
आकाशंवायुरग्निश्च मध्येभूमिगतंजलम् ॥ ४२ ॥

जप, होम, दया और दान इतनी बातोंसे ब्राह्मण आदि वर्ण शुद्ध होते है। आकाश, वायु, अग्नि, और पृथ्वी पर पड़ा हुआ शुद्ध जल ये सब ॥ ४२ ॥

नदुष्यंनिचदर्भाश्च यज्ञेषुचमसायथा ॥

इति पाराशरीये धर्म शास्त्र दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

और कुशा जैसे यज्ञों में चमसे पात्र को दोष नहीं लगता इसी भांति सदा शुद्धही रहते हैं ॥

इति श्रीपाराशरीये धर्म शास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अमेध्यरेतोगोमांसंचांडालन्नमथापिवा ॥
यदिभुक्तंतुविप्रेणकृच्छ्रंचांद्रायणंचरेत् ॥ १ ॥

यदि कोई ब्राह्मण अमेध्य ( मनुष्य को हड्डी, शव, विष्ठा, मूत्र ऋतुरज, वसा, प्रस्वेद, नेत्रमल, श्लेष्मा ) और वाय तथा गोमांस अथवा चाण्डाल का अन्न इनमें से एक भी वस्तु अपनी इच्छा पूर्वक खाले तो चांद्रायण करे अनिच्छा से खावे तो कृच्छ् व्रत करे ॥ १ ॥

तथैवक्षत्रियोवैश्योप्यर्द्धंचांद्रायणंचरेत् ॥
शूद्रोऽप्येवंयदाभुंक्ते प्राजापत्यसमाचरेत् ॥ २ ॥

और क्षत्रिय वा वैश्य खा लेवे तो आधा चांद्रायण करें शूद्र भी खावे तो प्राजापत्य व्रत करे ॥ २ ॥

पंचगव्यंपिवेच्छूद्रो ब्रह्मकूर्चंपिवेद्द्विजः ॥
एकद्वित्रिचतुर्गावोद्द्याद्विप्राद्यनुक्रमात् ॥ ३ ॥

व्रत करने पर शूद्र तो पंचगव्य पीवे और तीनि वर्ण ब्रह्मकूर्च पीवें तथा क्रम से एक दो तीन और चार गौ चारों वर्णों को दक्षिणा भी देनी पडती है ॥ ३ ॥

शूद्रान्नंसूतकान्नञ्चअभोज्यस्यान्नमेवच ॥
शंकितंप्रतिषिद्धान्नंपूर्वोच्छिष्टंतथैवच ॥ ४ ॥

शूद्रका अन्न, सूतक का अन्न, चन्द्र सूर्य ग्रहण मे दिया अन्न अभोज्य मनुष्है का अन्न, शंकित ( अर्थात भोज्य है वा अभोज्य है इस शंकाका आस्पद ) अन्न प्रतिषिद्ध अन्न ( देवनिर्माल्य आदि ) और उच्छिष्ट ( जूठा ) अन्न ॥ ४ ॥

यदिभुक्तंतुविप्रेण अज्ञानादापदापिवा ॥
ज्ञात्वासमाचरेत्कृच्छ्र ब्रह्मकूर्चंतुपावनम् ॥ ५ ॥

यदि ब्राह्मण भोजन करले चाहे अज्ञानसे अथवा विपत्ति में तो पीछे जानकर कृच्छ्रव्रत कर और कूर्च पीवे तो शुद्ध होता है ॥ ५ ॥

बालैर्नकुलमार्जारै रन्नमुच्छिष्टितं यदा ॥
तिलदर्भोदकैःप्रोक्ष्य शुद्धतेनात्रसंशयः ॥ ६ ॥

बालक (जो पांच वर्ष से अधिक न हो) नेवरा बिल्ली इन सबोंने यदि अन्नको जूठा किया हो तो तिल और कुशाके जलसे उसको प्रोक्षण करे तो निस्सन्देह शुद्ध होता है ॥ ६ ॥

शूद्रोप्यभोज्यंभुक्त्वान्नंपंचगव्येनशुद्धयति ॥
क्षत्रियोवापिवैश्यश्च प्राजापत्येनशुद्धयति ॥ ७ ॥

शूद्र ने भी अभोज्य अन्नका भोजन किया हो तो पंचगव्य पीने से शुद्ध होता है और क्षत्रिय वा वैश्य ने खा लिया हो तो प्राजापत्य करने से शुद्ध होते हैं ॥ ७ ॥

एकपंक्त्युपविष्टानांविप्राणांसहभोजने ॥
यद्येकोपित्यजेत्पात्रंशेषमन्नंनभोजयेत् ॥ ८ ॥

एक पंक्ति में बैठे हुए ब्राह्मणों में से यदि एक भी भोजन करना छोड़ दे तो औरों को भी भोजन छोड़ देना चाहिए (अर्थात् शेष अन्न उच्छिष्ट हो जाता है) ॥ ८ ॥

मोहाद्भुंजीतयस्तत्र पंक्तावुच्छिष्टभोजने ॥
प्रायश्चित्तंचरेद्विप्रः कृच्छ्रंसांतपनंतथा ॥ ९ ॥

यदि कोई ब्राह्मण मोहसे उक्त पंक्ति में उच्छिष्ट अन्न को भोजन करे तो कृच्छ्र सान्तपन व्रत कर यही प्रायश्चित्त है ॥ ९ ॥

पीयूषंश्वेतलशुनं वृंताकफल गृंजनम् ॥
पलाण्डुंवृक्षनिर्यासान्देवस्वंकवकानिच ॥ १० ॥

पीयूष ( नवीन जल ) श्वेतलशुन, श्वेतवृंताक, ( भंटा, बैगन वा बताऊ ) गृंजन, पलाण्डु, ( प्याज वा गट्ठे ) वृक्षों का नियोस ( गोंद ) देवस्व ( देवता की चढ़ी हुई वस्तु ) और कवक ( छत्राक कुकुरमुत्ते ) ॥ १० ॥

उष्ट्रीक्षीरमवीक्षीर मज्ञानाद्भुंजतेद्विजः ॥
त्रिरात्रमुपवासेन पंचगव्येनशुद्धयति ॥ ११ ॥

ऊंटनी का दूध, और भेड़का दूध जो अज्ञान से ब्राह्मण पीवे खाले तो तीन दिन उपवास करके पंचगव्य पीवे तब शुद्ध होताहै ११

मण्डूकंभक्षयित्वातु मूषिकामांसमेवच ॥
ज्ञात्वाविप्रस्त्वहोरात्रंयावकान्नेनशुद्ध्यति ॥ १२ ॥

मण्डूक ( डड्डू वा मेंघा ) और मूषिक ( चूहे ) का मांस ब्राह्मण जान कर, खा ले तो दिन रात यावक ( यवका भात ) खाने से शुद्ध होता है ॥ १२ ॥

क्षत्रियश्चापिवैश्यश्च क्रियावंतौशुचिव्रतौ ॥
तद्गृहेतुद्विजै र्भोज्यंहव्यकव्येषुनित्यशः ॥ १३ ॥

जो क्षत्रिय और वैश्य पवित्र रहते और धर्म क्रिया करते हैं उनके घर में ब्राह्मण को देव पितृ कार्यों में सदा भोजन करना चाहिये ॥ १३ ॥

घृतंक्षीरंतथातैलं गुडंस्नेहेनपाचितम् ॥
गत्वानदीतटेविप्रो भुंजीयाच्छूद्रभोजनम् ॥ १४ ॥

शूद्र के घरका घी तेल दूध गुड और घी से पका हुआ पदार्थ जो हो इतनी ही वस्तुओं का भोजन केवल ब्राह्मणको करना चाहिये सो भी नदी के तट पर आकर खाना शूद्र के घर में न खाना ॥ १४ ॥

मद्यमांसरतंनित्यंनीचकर्मप्रवर्तकम् ॥
तंशूद्रंवर्जयेद्विप्रःश्वपाकमिवदूरतः ॥ १५ ॥

जो शूद्र मद्य और मांस में नित्यही रतहो ( अर्थात् सेवत हो )

और नीच कर्म अर्थात् ( चमड़ा काटना इत्यादि ) को कराता हो उस शूद्रको ब्राह्मण दूर से ही श्वपाक का नाई वराहे॥ १५॥

द्विजशुश्रूषणरतान्मद्यमांसविवर्जितान् ॥
स्वकर्मनिरतान्नित्यंतांश्छूद्रान्नत्यजेद्द्विजः ॥ १६ ॥

जो शूद्र द्विजों की शुश्रुषा में रतहो, मद्य मांस को छोड़े हुए हों नित्य ही अपने कर्म में रत रहे उन शूद्रों को द्विज कभी न त्यागे ॥ १६ ॥

अज्ञानाद्भुंजतेविप्राः सूतकेमृतकेपिवा ॥
प्रायश्चित्तं कथंतेषांवर्णेवर्णेविनिर्दिशेत् ॥ १७ ॥

यदि ब्राह्मण लोग बिना जाने सूतक अथवा मृतक में भोजन करलें तो उनका हर एक वर्णों के गृह में खाने से पृथक् २ प्रायश्चित्त यों कहना चाहिये कि ॥ १७ ॥

गायत्र्यष्टसहस्रेणशुद्धिः स्याच्छूद्रसूतके ॥
वैश्येपंचसहस्रेणत्रिसहस्रेणक्षत्रिये ॥ १८ ॥

शूद्र के घर सूतक में भोजन करें तो आठ सहस्र गायत्री जपने से शुद्धि होती है, वैश्य के सूतक में पांच सहस्र और क्षत्रिय के घर तीन सहस्र से शुद्धि होता है ॥ १८ ॥

ब्राह्मणस्ययदाभुंक्ते द्वेसहस्रेतुदापयेत् ॥
अथवा वामदेव्येन साम्नाचैकेनशुद्ध्यति ॥ १९ ॥

और ब्राह्मणके घर सूतक में भोजन किएहो तो दो सहस्र गायत्री जपे अथवा वामदेव्य सामका एक ही पाठ करे तो भी शुद्ध होता है ॥ १९ ॥

शुष्कान्नंगोरसंस्नेहं शूद्रवेश्मनआहृतम् ॥
पक्वंविप्रगृहेभक्तंभोज्यंतन्मनुरब्रवीत् ॥ २० ॥

सूखाअन्न, गोरस, और स्नेह ( अर्थात् घी तेल ) शूद्र के घर से लाकर ब्राह्मण के घर में पकाया हो तो मनुजी ने उसे भोजन करनेके योग्य कहा है ॥ २० ॥

आपत्कालेतुविप्रेणभुक्तंशूद्रगृहेयदि ॥
मनस्तापेनशुद्ध्यतेद्रुपदांवासकृज्जपेत् ॥ २१ ॥

यदि आपत्काल में ब्राह्मण ने शूद्र के घर भोजन किया हो तो मनमें सन्ताप करने से शुद्ध होता है अथवा एकबार (द्रुपदा) मंत्र का जप करदे ॥ २१ ॥

दासनापितगोपालकुलमित्रार्द्धसीरिणः ॥
एतेशूद्रेषुभोज्यान्ना यश्चात्मानंनिवेदयेत् ॥ २२ ॥

दास, नापित, गोपाल, अपने कुलका मित्र, और अर्द्धसीरी इतने शूद्रों का अन्न भोजन करना चाहिए तथा जिस शूद्र ने आप को समर्पण कर दिया हो उसका भी अन्न भोज्य है ॥ २२ ॥

शूद्रकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेनतुसंस्कृतः ॥
असंस्काराद्भवेद्दासः संस्कारादेवनापितः ॥ २३ ॥

जो शुद्र की कन्या में ब्राह्मण से उत्पन्न हुआ उनका यदि संस्कार करदे तो नापित हो जाता है और संस्कार न हुआ तो वही दास कहलाता है ॥ २३ ॥

क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायांसमुत्पन्नास्तुयःसुतः ॥
सगोपालइतिख्यातोभोज्योविप्रैर्नसंशयः ॥ २४ ॥

जो पुत्र शुद्र की कन्या में क्षत्रिय से उत्पन्न हो उसे गो पालक कहते हैं उसका अन्न निस्संदेह ब्राह्मणों को खाना चाहिए ॥ २४ ॥

वैश्यकन्यासमुद्भूतोब्राह्मणेनतुसंस्कृतः ॥
सोह्यर्द्धिकइतिज्ञेयो भोज्योविप्रैर्नसंशयः ॥ २५ ॥

ब्राह्मण से वैश्य की कन्या में जो उत्पन्न हो और संस्कार भी उसका हो तो वही अधिक (अर्द्धसीरी) है निस्संदेह उसका अन्न ब्राह्मणों को भोज्य है ॥ २५ ॥

भांडस्थितमभोज्यानां जलंदधिघृतंपयः ॥
अकामतस्तुयोभुंक्ते प्रायश्चित्तंकथंभवेत् ॥ २६ ॥

यदि अभोज्यों के वर्तन में रक्खे हुए जल, दधि, घी, और दूध जो विनाजाने खाले उसका प्रायश्चित्त क्यों करहो ॥ २६ ॥

ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवाउपसर्पति ॥
ब्रह्मकूर्चोपवासेन योज्यावर्णस्यनिष्कृतिः ॥ २७ ॥

चारों वर्णों में से चाहे जो होतो उसकी शुद्धि ब्रह्मकूर्चके पीकर और एक उपवास करने से हो जाता है ॥ २७ ॥

शूद्राणांनोपवासःस्याच्छूद्रोदानेनशुद्ध्यति ॥
ब्रह्मकूर्चमहोरात्रंश्वपाकमपिशोधयेत् ॥ २८ ॥

शूद्रों को उपवास नहीं करना होगा शूद्र दान देनेसे शुद्ध होता है ब्रह्मकूर्च पीकर दिन रात रहे तो श्वपाक भी शुद्ध हो जाता है ॥ २८ ॥

गोमूत्रंगोमयंक्षीरं दधिसर्पिःकुशोदकम् ॥
निर्दिष्टंपंचगव्यंच पवित्रंपापशोधनम् ॥ २९ ॥

गौका मूत्र, गोवर, दूध, दही घी, और कुशोंका जल येही मिलकर पंचगव्य होता है जो परम पवित्र और पापों को शोधने हारा है ॥ २९ ॥

गोमूत्रंकृष्णवर्णायाःश्वेतायाश्चैवगोमयम् ॥
पयश्चताम्रवर्णायारक्तायाग्रह्यतेदधि ॥ ३० ॥

काली गौका मूत्र, श्वेत गौका गोवर ताम्रवर्णा गौका दूध, और लाल गौका दही ॥ ३० ॥

कपिलायाघृतंग्राह्यंसर्वंकापिलमेववा ॥
मूत्रमेकपलंदद्या दंगुष्ठार्द्धंतुगोमयम् ॥ ३१ ॥

कपिला गौका घी, अथवा ये सब वस्तु कापिलाही की लेनी मूत्र एक पल (४ तोला) लेना, अर्द्ध अंगुष्ठ तुल्य गोवर लेना ॥ ३१ ॥

क्षीरंसप्त पलंदद्या द्दधित्रिपलमुच्यते ॥

घृतमेकपलंदद्यात्पलमेकंकुशोदकम् ॥ ३२ ॥

दूध सातपल ( २८ तोले ) देना, दही तीन पल ( १२ तोले ) देना, घी एक पल ( ४ तोले ) देना, कुशोदक भी एक पल देना ॥ ३२ ॥

गायत्र्यादायगोमूत्रंगंधद्वारेतिगोमयम् ॥

आप्यायस्वेतिचक्षीरं दधिक्राव्णस्तथादधि ॥ ३३ ॥

गायत्री पढकर गो मूत्र लेना, ( गन्धद्वार ) मन्त्र पढकर गोवर लेना ( आप्यायस्व ) इस मन्त्र से दूध, ( दधिक्राव्ण ) इस मन्त्र से दही, ॥ ३३ ॥

तेजोसिशुक्रमित्याज्यं देवस्यत्वाकुशोदकम् ॥

पंचगव्यंमृचापूतं स्थापयेदग्निसन्निधौ ॥ ३४ ॥

( तेजोसिशुक्रम् ) इस मन्त्र से घी लेना, ( देवस्यत्वा ) इस मंत्रसे दही, कुशोदकलेना, उक्तऋचाओं से पवित्र किए हुए पंचगव्यको अग्निके समीप रखना ॥ ३४ ॥

आपोहिष्ठेति चालोड्यमानस्तोकेतिमंथनम् ॥

सप्तवारास्तुयेदर्भा अच्छिन्नाग्राः शुकत्विषः ॥ ३५ ॥

( आपोहिष्ठा ) इस मंत्रसे उसे हिलाना, और ( मानस्तोक ) इस मंत्रसे मंथन करना अनन्तर सप्तवार ( अर्थात् सात अपराधों को निवारण करने हारे ) ऐसे कुशों से कि जिनका अग्रभाग कटा न हो और हरे हो ॥ ३५ ॥

एतैरुद्धृत्यहोतव्यं पंचगव्यं यथाविधि ॥

इरावतीइदंविष्णुर्मानस्तोकेचशंवती ॥ ३६ ॥

इन कुशाओं से पंचगव्य उठाकर विधि पूर्वक होम करना करने की ऋचाएं ( इरावती ) ( इदं विष्णुर ) ( मानस्ताक ) ( शंवती ) ये है ॥ ३६ ॥

ेतव्यं हुतशेषंपिवेद्द्विजः ॥

आलाड्यप्रणवेनैव निर्मथ्यप्रणवेनतु॥ ३७॥

इन्हीं से होम करना होम से जो बच रहै उसे (द्विजलोग यों पीवे कि प्रणव पाठकर उसका आलोडन करें उसी प्रणव से ही मथे॥ ३७॥

उद्धृत्यप्रणवेनैव पिवेच्चप्रणवेनतु॥
यत्त्वगस्थिगतंपापंदेहेतिष्ठतिदेहिनाम् ॥ ३८॥

और प्रणव सेही निकाल कर प्रणव ही से पीवे जो कुछ हड्डी और चमड़े में मनुष्यों का पाप रहता है॥ ३८॥

ब्रह्मकूर्चंदहत्सर्वं यथैवाग्निरिवेन्धनम्॥
पवित्रंत्रिषुलोकेषुदेवताभिरधिष्ठितम्॥ ३९॥

उसे यह ब्रह्मकूर्च सम्पूर्ण रूप से भस्म करदेता है; जैसे आग ईधन को जला देती है यह तीनों लोक में पवित्र है और देवताओं से अधिष्ठित होता है अर्थात् इसमें देवता रहते हैं॥ ३९॥

वरुणश्चैवगोमूत्रेगोमयेहव्यवाहनः॥
दध्निवायुःसमुद्दिष्टःसोमःक्षीरेघृतेरविः॥ ४०॥

वरुण गोमूत्र में, गोबर में अग्नि, दही में वायु, घी में सूर्य, और दूध में चन्द्रमा रहते हैं॥ ४०॥

पिवतःपतितंतोयं भोजनेमुखानिःसृतम्॥
अपेयंतद्विजानीयाद्भुक्त्वाचान्द्रायणंचरेत्॥ ४१॥

पानी पीते समय जो पानी गिर पड़े और भोजन करते समय जो अन्न मुंह से निकल पड़े तो वह पानी न पीना चाहिए और अन्न खाना न चाहिए यदि खावे तो चान्द्रायण व्रत करे॥ ४१॥

कूपेचपतितंदृष्ट्वाश्वशृगालञ्चमर्कटम्॥
अस्थिचर्मादिपतितं पीत्वामेध्याअपोद्विजः॥ ४२॥

यदि कूप में कुत्ता, गीदड़, और वानर की हड्डी अथवा चर्म पड़ा

हुआ देखे और उस अपवित्र जलको द्विज पीले तो आगे जो प्राय श्चित्त कहेंगे सो करे ॥ ४२ ॥

नारंतुकुणपंकाकंविड्वराहंखराष्ट्रकम् ॥
गावयंसौप्रतीकंच मायूरंखड्गकंतथा ॥ ४३ ॥

तथा मनुष्य कौवे, गांव के सूकर, गधे वा ऊंट गवय, सुप्रतिक, मयूर और गैंडे ॥ ४३ ॥

वैयाघ्रमार्क्षंसैंहंवाकूपेयदिनिमज्जति ॥
तडागस्थाऽथदुष्टस्यपीतस्यादुदकंयदि ॥ ४४ ॥

व्याघ्र, रीछ, और सिंह का मुर्दा, यदि कूप अथवा तड़ाग में डूब गया हो और उसका दुष्ट जल यदि कोई पीवे ॥ ४४ ॥

प्रायश्चित्तंभवेत्पुंसः क्रमेणैतेनसर्वशः ॥
विप्रःशुद्ध्येत्त्रिरात्रेण क्षत्रियस्तुदिनद्वयात् ॥ ४५ ॥

तो क्रम से सारा ऐसा प्रायश्चित्त पुरुष को होता है कि ब्राह्मण तीन दिन और क्षत्रिय दो दिन के उपवास से शुद्ध होता है ॥ ४५ ॥

एकाहेनतुवैश्यस्तुशूद्रोनक्तेनशुद्ध्यति ॥
परपाकनिवृत्तस्य परपाकरतस्य च ॥ ४६ ॥

वैश्य एक दिन के उपवास से और शूद्र नक्त ( रात में ) भोजन करने से शुद्ध होता है । परपाकनिवृत्त और परपाकरत ॥ ४६ ॥

अपचस्यचभुक्त्वान्नं द्विजश्चांद्रायणंचरेत् ॥
अपचस्यतुयद्दानं दातुरस्यकुतः फलम् ॥ ४७ ॥

तथा अपचकाअन्न यदि द्विज खालेवे तो चान्द्रायण करे जो कोई अपचको देता है तो उस दाता को फलकहां है ॥ ४७ ॥

दाताप्रतिग्रहीताच द्वौतौनिरयगामिनौ ॥
गृहीत्वाग्निंसमारोप्य पंचयज्ञान्ननिर्वपेत् ॥ ४८ ॥

दाता और प्रतिग्रहीता वे दोनोंही नरक में जाते हैं । जो अग्नि

समारोपण करके पंचयज्ञों को नहीं करता ॥ ४८ ॥

परपाकनिवृत्तोसौ मुनिभिः परिकीर्तितः ॥
पंचयज्ञान्स्वयंकृत्वापरान्नेनोपजीवति ॥ ४९ ॥

मुनियों ने उसे परपाक निवृत्त कहा है । जो पंचयज्ञों को करके के अन्नसे जीता है ॥ ४९ ॥

सततंप्रातरुत्थायपरपाकरतस्तुसः ॥
गृहस्थधर्मायोविप्रो ददातिपरिवर्जितः ॥ ५० ॥

सदा प्रातः काल उठकर सो परपाकरत कहलाता है । जो ब्राह्मण गृहस्थ धर्मी होकर देता नहीं ॥ ५० ।

ऋषिभिर्धर्मतत्वज्ञैरपचः परिकीर्तितः ॥
युगेयुगेचयेधर्मा स्तेषुतेषुचयेद्विजाः ॥ ५१ ॥

उसे धर्मतत्व को जानने हारे ऋषियोंने अपच कहा हैं । युग २ दूसरे के जो धर्म है और उनयुगों मे जो द्विज है ॥ ५१ ॥

तेषांनिंदानकर्तव्यायुगरूपाहितेद्विजाः ॥
हुंकारंब्राह्मणस्योक्त्वात्वंकारंचगरीयसः ॥ ५२ ॥

उनकी निन्दा न कर्णी चाहिये क्योंकि वे द्विज युगरूपही हैं । यदि ब्राह्मण को हुंकार कर और बडे को त्वंकार ( तू ) कहै ॥ ५२ ॥

स्नात्वातिष्ठन्नहःशेषमभिवाद्य प्रसादयेत् ॥
ताडयित्वातृणेनापिकंठंबध्वापिवाससा ॥ ५३ ॥

तो जितना वह दिन शेषहो उतनी वेर तक स्नान करके बैठा रहै और उनको प्रणाम करके प्रसन्न करावे तिनकेसे भी मारे अथवा गले में वस्त्र से भी बांधे ॥ ५३ ॥

विवादेनापिनिर्जित्यप्रणिपत्यप्रसादयेत् ॥
अवगूर्यत्वहोरात्रंत्रिरात्रंक्षितिपातने ॥ ५४ ॥

अथवा विवाद में भी जीत ले तो प्रणाम करके प्रसन्न करावे

मारने को दंडआदि उठावे तो एक दिनरात, उठाकर धर्ती पर फेंके तो तीन दिन ॥ ५४ ॥

अतिकृच्छ्रंचरुधिरेकृच्छ्राभ्यंतरशोणिते ॥
नवाहमतिकृच्छ्रः स्यात्पाणिपूरान्नभोजनः ॥ ५५ ॥

और मारने से रुधिर निकल आवे तो अतिकृच्छ्र, चमड़े के भीतर ही रुधिर जमजावे तो कृच्छ्र मतकर नव दिन तक एक पसर ( मूठी वा प्रसृति ) भर अन्न भोजन करके रहै ॥ ५५ ॥

त्रिरात्रमुपवासःस्याद्तिकृच्छ्रःसउच्यते ॥
सर्वेषामेवपापानां संकरेसमुपस्थिते ॥ ५६ ॥

अनन्तर तीन दिन उपवास करे तो अति कृच्छ्रव्रत होता है सब पापों का जब संकर ( मेल ) होजावे तो ॥ ५६ ॥

दशसाहस्रमभ्यस्तागायत्रीशोधनंपरम् ॥

दस सहस्र गायत्री का जप करनें से परम शोधन होता है

इतिपाराशरेधर्म्मशास्त्रे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

इति एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

दुःस्वप्नंयदिपश्येत्तु वांतेवाक्षुरकर्म्मणि ॥
मैथुनेप्रेतधूमेच स्नानमेवाविधीयते ॥ १ ॥

यदि दुःस्वप्न देखे, वमन करे, क्षौर करावे, मैथुन करे, प्रेत धूमलगे तो स्नान मात्र विहित है ॥ १ ॥

अज्ञानात्प्राश्यविण्मूत्रं सुरासंस्पृष्टमेवच ॥
पुनःसंस्कारमर्हंतित्रयोवर्णाद्विजातयः ॥ २ ॥

अज्ञान से यदि विष्ठा वा मूत्रखा पीलें और सुरा ( मद्य ) से मिला हुआ पदार्थ खालें तो तीनों द्विज वर्ण पुनः संस्कार के योग्य हो जाते हैं ॥ २ ॥

अजिनंमेखलादंडौ भैक्षचर्याव्रतानिच ॥

निवर्ततेद्विजातीनां पुनः संस्कारकर्माणि ॥ ३ ॥

पुनस्संस्कार जब द्विजों का होता है तो अजिन, (मृगचर्म) मेखला, और दण्ड, पलाशादि का तथा भैक्ष्यचर्या और व्रत ये नहीं करने पड़ते ॥ ३ ॥

विण्मूत्रभोजने चैव शुद्ध्यर्थं प्राजापत्यंसमाचरेत् ॥
पंचगव्यंचकुर्वीतस्नात्वापीत्वाशुचिर्भवेत् ॥ ४ ॥

और विष्ठा मूत्र की शुद्ध होने के लिए प्राजापत्य व्रत करे पंच गव्य भी करे स्नान के उपरांत उसे पीकर शुद्ध होते हैं ॥ ४ ॥

जलाग्निपतने चैव प्रव्रज्यानाशकेषु च ॥
वृत्यावासतवर्णानांकथंशुद्धि र्विधीयते ॥ ५ ॥

जो मनुष्य जल में डूब कर वा अग्नि में जलकर अथवा पहाड़ से गिरकर किंवा सन्यासी होकर अनशन व्रत करके मनोमनसे चाहे हो और इस अपनी संकल्प वृत्तिसे बच रहे हों (अर्थात्) उपायों से मरने को साध न सके हों) तो उन चारों वर्ण के लोगों की शुद्धि क्यों कर हो ॥ ५ ॥

प्राजापत्यद्वयेनैव तीर्थाभिगमनेन च ॥
वृषैकादशदानेन वर्णाः शुद्ध्यंतितेत्रयः ॥ ६ ॥

तीनों वर्ण तो यों शुद्ध होते हैं कि दो प्राजापत्य करके किसी तीर्थ में जा स्नान कर और दस गौ एक बैल दान देवें ॥ ६ ॥

ब्राह्मणस्यप्रवक्ष्यामिवनंगत्वाच तुष्पथे ॥
सशिखंवपनंकृत्वाप्राजापत्यद्वयंचरेत् ॥ ७ ॥

और ब्राह्मण की शुद्धि यों होगी बन में जाकर चौराहे के मध्य बैठ कर शिखा समेत मुण्डन करावे दो प्राजापत्य व्रत करे ॥ ७॥

गोद्वयंदक्षिणांदद्याच्छुद्धिंपाराशरोब्रवीत् ॥

मुच्यतेतेनपापेन ब्राह्मणत्वंचगच्छति ॥ ८ ॥

दो गौ दक्षिणादेतो शुद्ध होता है ऐसा पराशरने कहा वह पापसे मुक्त होकर पुनः ब्राह्मणता को पाता है ॥ ८ ॥

स्नानानिपंचपुण्यानि कीर्तितानिमनीषिभिः ॥
आग्नेयंवारुणंब्राह्मंवायव्यंदिव्यमेवच ॥ ९ ॥

पांच प्रकार के स्नान पण्डितों ने पवित्र कहा है अर्थात् आग्नेय, वारुण, ब्राह्म, वायव्य, और दिव्य ॥ ९ ॥

आग्नेयंभस्मनास्नानमवगाह्यतुवारुणं ॥
आपोहिष्ठेतिचब्राह्मयं वायव्यंगोरजः स्मृतम् ॥ १० ॥

भस्म सारे अंगमें मलनेसे आग्नेय स्नान होता है जल में नहाने से वारुण ( आपोहिष्ठा ) इस मंत्रसे मार्जन करने से ब्राह्म गौकीरज से वायव्य ॥ १० ॥

यत्तुसातपवर्षेण स्नानंतद्दिव्यमुच्यते ॥
तत्रस्नात्वातुगंगायां स्नातोभवतिमानव ॥ ११ ॥

और जब धूपनिकली हो उसी समय वर्षा भी पडे उसमें नहाने से दिव्य स्नान होता है उसमें नहाकर मनुष्य गंगा का स्नान करने हारा होता है ॥ ११ ॥

स्नातुंयांतंद्विजंसर्वे देवाः पितृगणैः सह ॥
वायुभूतास्तुगच्छंति तृषार्ताः सलिलार्थिनः ॥ १२ ॥

जब द्विज स्नान करने को चलते तो उनके पीछे २ सारे देवता पितरों सहित वायु होकर ( हवा बनकर ) प्यासे हुए जल के लिए जाते हैं ॥ १२ ॥

निराशास्तेनिवर्तंते वस्त्रनिष्पीडनेकृते ॥
तस्मान्नपीडयेद्वस्त्रमकृत्वापितृतर्पणम् ॥ १३ ॥

जब धोती निचोडे ले तो वे निरास हो फिर जाते इस हेतु जब पितृतर्पण न कर लेवे तब ताईं धोती न धोवे ॥ १३ ॥

रोमकूपेष्ववस्थाप्य यस्तिलैस्तर्पयेत्पितॄन् ॥
तर्पितास्तेनतेसर्वे रुधिरेणमलेनच॥ १४ ॥ 12 03

जो मनुष्य अपने रोमके गर्तों पर तिल रखकर पितरों का तर्पण करता है वह मानो उन पितरों का रुधिर और मल से तर्पण करता है॥ १४ ॥

अवधूनोतियः केशान्स्नात्वाप्रस्रवतेद्विजाः ॥
आचमेद्वाजलस्थोपि सवाह्यः पितृदैवतैः॥ १५॥

जो द्विज स्नान करके अपने केशों को फटकारता है, गीले कपड़ों से मूतने लगता अथवा सूखा वस्त्र पहिनकर जल में खड़ा हो आचमन करता है वह देव पितृ कार्य से वाह्य होता ( नहीं कर सक्ता ) है॥ १५ ॥

शिरः प्रावृत्यकंठंवा मुक्तकच्छशिखोपिवा ॥
विनायज्ञोपवीतेन आचांतोप्यशुचिर्भवेत् ॥ १६ ॥

शिर अथवा गले में वस्त्र लपेट, कच्छ [ धोती के टोंक ] अथवा शिखा को खोल यज्ञोपवित के बिना आचमन कर भी ले तथापि अशुद्ध रहता है ॥ १६ ॥

जलेस्थलेस्थानोचामेज्जलस्थश्च वहिस्थले ॥
उभेस्पृष्ट्वासमाचामे दुभयत्रशुचिर्भवेत् ॥ १७ ॥

बाहर खड़ा होकर जल में और जल में खड़ा हो कर बाहर आचमन न करे यदि एक पांव जल में और एक बाहर रक्खे होतो चाहे जिस प्रकार आचमन करे शुद्ध ही होता है ॥ १७ ॥

स्नात्वापीत्वाक्षुतेसुप्तेभुक्त्वारथ्योपसर्पणे ॥
आचांतःपुनराचामेद्वासोविपरिधायच ॥ १८ ॥

स्नान, भोजन, जलपान छींक, सो और गली में चल कर दोबार आचमन करे इसी भांति वस्त्र पहिन कर भी ॥ १८ ॥

क्षुतेनिष्ठीवनेचैवदंतोच्छिष्टेतथाऽनृते ॥

पतितानांचसंभाषे दक्षिणंश्रवणंस्पृशेत् ॥ १९ ॥

छींकने, थूकने, दांत में जूठा रहने झूठ बोलने और पतितों के साथ बोलने पर दहिना कान छूलेवे ॥ १९ ॥

भास्करस्यकरैःपूतं दिवास्नानंप्रशस्यते ॥

अप्रशस्तंनिशिस्नानं राहोरन्यत्रदर्शनात् ॥ २० ॥

दिन में स्नान करना प्रशस्त है क्योंकि सूर्य की किरणों से वह पवित्र किया होता है ग्रहणके बिना रात में नहाना प्रशस्त नहीं है ॥ २० ॥

मरुतोवसवोरुद्रा आदित्याश्चाथदेवताः ॥

सर्वेसोमेप्रलीयंतेतस्माद्दानंतुसंग्रहे ॥ २१ ॥

मारुत्, वसु, रुद्र, आदित्य, और सारे देवता चंद्रमा में छुकजाते हैं इस हेतु ग्रहण में दान करना चाहिए ( कि देवताओं की रक्षा हो ) ॥ २१ ॥

खलयज्ञेविवाहेच संक्रांतेग्रहणेतथा ॥

शर्वर्यांदानमस्त्येववनाऽन्यत्रतुविधीयते ॥ २२ ॥

खल यज्ञ अर्थात् खलिहान, विवाह, संक्रांति, और ग्रहण में रात का दान करना और कभी भी रात को दान न करना चाहिए ॥ २२ ॥

पुत्रजन्मनियज्ञेचतथाचात्ययकर्मणि ॥

राहोश्चदर्शनेदानं प्रशस्तंनान्यदानिशि ॥ २३ ॥

पुत्र जन्म यज्ञ मरण और राहु के दर्शन ( ग्रहण ) में रात के समय दान प्रशस्त होता है इससे अन्य समय में नहीं ॥ २३ ॥

महानिशातुविज्ञेयामध्यस्थं प्रहरद्वयम् ॥

प्रदोषपश्चिमौयामौदिनवत्स्नानमाचरेत् ॥ २४ ॥

जो बिचले दो पहर हैं वही महा निशा होती है और संध्याको

प्रहर तथा पिछले पहर की रात में दिन के तुल्य स्नान करना चाहिये ॥ २४ ॥

चैत्यवृक्षश्चितिःपूयश्चांडालःसोमविक्रयी ॥

एतास्तुब्राह्मणःस्पृष्ट्वासवासाजलमाविशेत् ॥ २५ ॥

चैत्यवृक्ष ( अर्थात् श्मशानके वृक्ष ) और चिति अर्थात् प्रसिद्ध कोई मृत्तिकादि समूह वा श्मशान पूय ( अर्थात् दुर्गंधि युक्त मज्जा वा पीव ) चांडाल, और सोमलता वेचने द्वारा यदि इनमें से किसी को ब्राह्मण छू लेवे तो वस्त्र सहित जल में स्नान करे ॥ २५ ॥

अस्थिसंचयनत्पूर्वं रुदित्वास्नानमाचरेत् ॥

अंतर्दशाहेविप्रस्यहूयर्ध्वमाचमनंस्मृतम् ॥ २६ ॥

यदि अस्थि संचयन ( अर्थात् मरने के अनन्तर चार दिन ) के पूर्व यदि ब्राह्मण रोवे तो स्नान करके शुद्ध होता है उससे उपरांत दस दिन के भीतर रोवे तो आचमन मात्र करके पवित्र होता है ॥ २६ ॥

सर्वंगंगासमेतोयं राहुग्रस्तेदिवाकरे ॥

सोमग्रस्तेतथैवोक्तं स्नानदानादिकर्मसु ॥ २७ ॥

सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण में जो कोई जलस्नान दानादिक में मिले वही गङ्गा के समान फल देता है ॥ २७ ॥

कुशैःपूतंभवेत्स्नानं कुशेनोपस्पृशेद्द्विजः ॥

कुशेनचोद्धृतंतोयंसोमपानसमंभवेत् ॥ २८ ॥

कुशसे स्नान पवित्र होता है कुशके साथ ही ब्राह्मण आचमन कर जो जल कुशके साथ उठाया जाता है वह सोमपान के तुल्य होता है ॥ २८ ॥

अग्निकार्यात्परिभ्रष्टाः संध्योपासनवर्जिताः ॥

वेदंचैवानधीयानाः सर्वेतेवृषलाःस्मृताः ॥ २९ ॥

अग्निहोत्रसे परिभ्रष्ट ( च्युत वा विमुख ) संध्या वंदन छोड़े

हुए और वेद न पढने हारे ब्राह्मण वृषल अर्थात् शूद्र के तुल्य होते हैं ॥ २९ ॥

तस्माद्वृषलभीतेन ब्राह्मणेनविशेषतः ॥
अध्येतव्योप्येकदेशो यदिसर्वंनशक्यते ॥ ३० ॥

इस हेतु अर्थात वृषल होने के भयसे ब्राह्मणको चाहिये कि सारा न पढता वेद का एक भागही पढलेवे ॥ ३० ॥

शूद्रान्नरसपुष्टस्याधीयमानस्यनित्यशः ॥
जपतोजुह्वतोवापि गतिरूर्ध्वानविद्यते ॥ ३१ ॥

जो कोई शूद्र के अन्न और रससे पुष्ट है वह चाहे नित्य वेदाध्ययन, जप, और होम किया करे परन्तु उसकी उत्तम गति नहीं होता है ॥ ३१ ॥

शूद्रान्नशूद्रसंपर्कःशूद्रेणतुसहासनम् ॥
शूद्रात्ज्ञानागमश्चापिज्वलंतमपिपातयेत् ॥ ३२ ॥

शूद्र का अन्न, शूद्र का संसर्ग, शूद्र के साथ बैठना, और शूद्र ज्ञान सीखना, इन बातों से अग्नि समान तेज वाला भी ब्राह्मण पतित हो जाता है ॥ ३२ ॥

याशूद्रापाचयेन्नित्यंशूद्रीचगृहमेधिनी ॥
वर्जितःपितृदेवेभ्योरौरवंयातिसद्विजः ॥ ३३ ॥

जिस द्विजकापाक शूद्री बनाती है और जिसकी गृहणी ( स्त्री ) शूद्री है तथा पितृ और देव कार्य से जो वर्जित ( विमुख ) है वह रौरव नरक में जाता है ॥ ३३ ॥

मृतकसूतकपुष्टांगं द्विजशूद्रान्नभोजिनम् ॥
अहंतन्नविजानामिकांकांयोनिंगमिष्यति ॥ ३४ ॥

मरण और सूतक के आशौचवाला का अन्न खाने हारा तथा शूद्रका अन्न भोजन करनेहारा ( अथवा शूद्र का अन्न उसके मृतक

सूतक में भोजन करने द्वारा ) द्विज यह नहीं जानते कि किस किस योनि में जावेगा ॥ २४ ॥

गृध्रोद्वादशजन्मानिदशजन्मानिसूकरः ॥
श्वयोनौसप्तजन्मानिइत्येवंमनुरब्रवीत् ॥ २५ ॥

मनुने यों कहा है कि बारह जन्म गृध्र ( गिद्ध ) दशजन्म सूकर ( सूअर ) और सातजन्म कुत्ते की योनि में वह पड़ता है ॥ २५ ॥

दक्षिणार्थंतुयोविप्रः शूद्रस्यजुहुयाद्धविः ॥
ब्राह्मणस्तुभवेच्छूद्रः शूद्रस्तुब्राह्मणोभवेत् ॥ २६ ॥

यदि दक्षिणा के लोभ से ब्राह्मण शूद्रकी हवि ( खीर आदि ) होम करे तो वह ब्राह्मण शूद्रहो जाता है और वह शूद्र ब्राह्मण बन जाता है ॥ २६ ॥

मौनव्रतंसमाश्रित्यआसीनोनवदेद्द्विजः ॥
भुंजानोहिवदेद्य स्तुतदन्नंपरिवर्जयेत् ॥ ३७ ॥

जिसने मौन होकर भोजन कर्नेका संकल्प किया हो और भोजन कर्ने समय मेंही यदि बोलदिया हो तो जितना अन्न बच रहा हो उसे न खावे छोड दे ॥ ३७ ॥

अर्द्धभुक्तेतुयोविप्रस्तस्मिन्पात्रे जलंपिवेत् ॥
हतंदैवंचपित्र्यंचआत्मानंचैवघातयेत् ॥ ३८ ॥

जो ब्राह्मण आधा तिहाई भोजन कर्ते ही उसी भोजन पात्र में जल पीलेवे तो देवकार्य वा पितृकार्य तथा निज आत्मा को भी वह हत ( नष्ट ) कर्ता है ॥ ३८ ॥

भुंजानेषुतुविप्रेषु योऽग्रेपात्रंविमुंचति ॥
समूढः सचपापिष्ठो ब्रह्मघ्नः सखलूच्यते ॥ ३९ ॥

ब्राह्मणों के भोजन कर्ते समय जो पहिले पात्र ( भोजन कर्ना छोड देता है वह मूर्ख, पापिष्ठ, और ब्रह्मघ्न कहलाता है ॥ ३९ ॥

भाजनेषुचतिष्ठत्सुस्वस्तिकुर्वन्तियेद्विजाः ॥
नदेवास्तृप्तिमायांतिनिराशाःपितरस्तथा ॥ ४० ॥

भोजन पात्र उठने वा चलित होने नहीं पाए इसके बीचमें ब्राह्मण लोग यदि स्वस्ति बोल उठैतो देवता तृप्त नहीं होते और पितर लोग निरास होजाते हैं ॥ ४० ॥

अस्नात्वानैवभुंजीत अजप्त्वाग्निमपूज्यच ।
नपर्णपृष्ठेभुंजीतरात्रौदीपंविनातथा ॥ ४१ ॥

विना स्नान, जप और अग्नि होत्रके किए ही भोजन नकरे तथा परो की पीठ पर भी भोजन न करे और रात के समय दीपक विना न भोजन करे ॥ ४१ ॥

गृहस्थस्तुदयायुक्तो धर्ममेवानुचिंतयेत् ॥
पोष्यवर्गार्थसिद्ध्यर्थं न्यायवर्तीसबुद्धिमान ॥ ४२ ॥

जो गृहस्थ दयायुक्त होकर धर्मही की चिन्ता करे और अपने पोष्यवर्ग ( स्त्रीपुत्र भृत्य आदि ) की अर्थ सिद्धि के लिए न्याय वर्ती ( न्याय वा नीति पूर्वक चलता ) हो तो वही बुद्धिमान् कहाता है ॥४२॥

न्यायोपार्जितवित्तेनकर्त्तव्यंह्यात्मरक्षणम् ॥
अन्यायेनतुयोजीवेत्सर्वकर्मबहिष्कृतः ॥ ४३ ॥

न्याय से जो धन उपार्जन करे उसी से अपने आपकी रक्षा करे और ( जो अन्याय से जीवन करे वह सब कर्मों से बहिष्कृत होता है ॥ ४३ ॥

अग्निचित्कपिलासत्रीराजाभिक्षुर्महोदधिः ।
दृष्टमात्राः पुनंत्येतेतस्मात्पश्येत्तु नित्यशः ॥ ४४ ॥

अग्निहोत्री अथवा इष्टका चयनकारी कपिलागौ, यज्ञकर्नेहारा, राजा, संन्यासी, और समुद्र, ये देखनेही से पवित्र करते हैं इस लिए इन्हें नित नित देखे ॥ ४४ ॥

अरणींकृष्णमार्जारंचदनंसुमणिंघृतम् ॥
तिलान्कृष्णाजिनंछागंगृहेचै तान्रिक्षयेत ॥ ४५ ॥

अरणि, ( जिसे मथकर यज्ञ में आगनिकालते हैं ) काली बिल्ली, चन्दन, अच्छी मणि, घी, तिल, कृष्णाजिन ( कालेमृगकाचर्म ) और बकरा इतनी वस्तु घरमें रखनी चाहिये ॥ ४५ ॥

गवांशतंसैकवृषंयत्रातिष्ठत्ययंत्रितम् ॥
तत्क्षेत्रदशगुणितंगोचर्मपरिकीर्तितम् ॥ ४६ ॥

जितनी दूरमें सौ गौ और एक बैल खुले हुए खडे हों उससे दसगने स्थल को गौचर्म कहते हैं ॥ ७६ ॥

ब्रह्महत्यादिभिर्मर्त्योमनोवाक्कायकर्मभिः ॥
एतद्गोचर्मदानेन मुच्यतेसर्वकिल्विषे ॥ ४७ ॥

यदि इस गोचर्मका दान मनुष्य करे तो ब्रह्म हत्यादिक जो मानासिक वाचिक और कायिक पाप हैं उन से छुट जाता है ॥४७॥

कुटुंविनेदरिद्राय श्रोत्रियायविशेषतः ॥
यद्दानंदीयतेतस्मैतद्दानंशुभकारकम् ॥ ४८ ॥

कुटुंव वाले दरिद्र और विशेष करके वेद पाठी ब्राह्मण को जो दान दे वह दान शुभ फल देने हारा होता है ॥ ४८ ॥

वापीकूपतडागाद्यैर्वाजपेयशतैर्मखैः ॥
गवांकोटिप्रदानेनभूमिहर्तानशुद्ध्यति ॥ ४९ ॥

जो मनुष्य किसी की भूमि हर लेवे वह चाहे सैकड़ों वापी कूप, तडाग, आदि बनावे अथवा वाजपेय आदि सैकड़ौं यज्ञ करे और कोटि गौ दान करे तो भी शुद्ध नहीं होता है ॥ ४९ ॥

अष्टादशदिनादर्वाक्स्नानमेवरजस्वला ॥
अतऊर्ध्वंत्रिरात्रस्यादुशनामुनिरब्रवीत ॥ ५० ॥

यदि अठारह दिन के भीतर ही स्त्री रजस्वला हो तो तीन दिन अशुचि होती है ऐसा उशना मुनि ने कहा है ॥ ५० ॥

युगंयुगद्वयंचैवत्रियुगंचचतुर्युगम् ॥
चाण्डालसूतकोदक्यापतितानामधःक्रमात् ॥ ५१ ॥

पतित रजस्वला प्रसूति स्त्री, और चाण्डाल इन सबों से क्रम करके ४८९ ९६१२ और १२ १६ हाथ के अंतराल से रहना ॥ ५१ ॥

ततः सन्निधिमात्रेण सचैलंस्नानमाचरेत् ॥
स्नात्वावलोकयेत्सूर्यमज्ञानात्स्पृशतेयदि ॥ ५२ ॥

यदि इननें के समीप वे आनपडै तो वस्त्र समेत स्नान करडावे यदि अज्ञान से इन्हें छुलेवे तो स्नानकर्के सूर्य का अवलोकन करे ( ज्ञानसे स्पर्श में ८००- गिनती जप भी होता है ) ॥ ५२ ॥

विद्यमानेषुहस्तेषु ब्राह्मणोज्ञानदुर्बलः ॥
तोयंपिबेत वक्त्रेणश्वयोनौजायतेध्रुवम् ॥ ५३ ॥

हाथ र.ते ही यदि कोई अल्प ज्ञानी ब्राह्मण नदी में मुंह लगा कर पानी पीवे तो वह अवश्य कुत्ते की योनि में पडता है ॥ ५३ ॥

यस्तुक्रुद्धः पुमान् ब्रूयाज्जया यास्तुअगम्यातम् ॥
पुनरिच्छतिचेदेनां विप्रमध्येतुश्रावयेत् ॥ ५४ ॥

यदि कोई ब्राह्मण क्रुद्ध होकर अपनी स्त्री को अगम्यता (अर्थात माता वा भगिनी ) बोलदे और पुनः उसका संग किया चाहे तो ब्राह्मणों की परिषत् के मध्य जाकर सुनावे ॥ ५४ ॥

श्रांतःक्रुद्धस्तमोंधोवाक्षुत्पिपासाभयार्दितः ॥
दानं पुण्यमकृत्वाप्रायश्चित्तंदिनत्रयं ॥ ५५ ॥

कि भै श्रांत, ( थकाहुआ ) क्रुध, तमोंध ( अज्ञानी अथवा क्षुधा और प्यास से किंवा भय से पीडित होकर ऐसा कह बैठा अथवा दान और तीर्थ यात्रादि पुण्य कर्ना कहकर न करे तो भी ब्राह्मणों को यही पूर्वोक्त कारण सुनावे और उन्के कहने से तीन दिन उपवास करे ॥ ५५ ॥

उपस्पृशेतत्रिषवणंमहानद्युपसंगमे ॥
चीर्णांतेचैवगांदद्याद्ब्राह्मणान्भोजयेद्दश ॥ ५६ ॥

और समुद्र गामिनी नदी के संगम में त्रिकाल स्नान करे अनन्तर एक गोदान दे और दस ब्राह्मणों को भोजन करावे ॥ ५६ ॥

दुराचारस्यविप्रस्यनिषिद्धाचरणस्यच ॥
अन्नंभुक्त्वाद्विजःकुर्याद्दिनमेकमभोजनम् ॥ ५७ ॥

जो ब्राह्मण दुराचारी ( विहित कर्मनकर्त्ता ) हो और जो निषिद्धा चरण ( अविहितकर्मकर्त्ता ) हो उसका अन्न यदि कोई द्विज भोजन करे तो एक दिन उपवास करे ॥ ५७ ॥

सदाचारस्यविप्रस्यतथा वेदान्तवादिनः ॥
भुक्त्वान्नमुच्यतेपापादहोरात्रन्तरान्तरः ॥ ५८ ॥

( यदि उपवास न कर सके ) तो किसी सदाचार ब्राह्मण तथा वेदाङ्गवेत्ता अथवा वेदान्तवादी ) ब्राह्मणका अन्न दूसरे २ दिनखावे तो उसपाप से मुक्त होजाता है ॥ ५८ ॥

ऊर्ध्वोच्छिष्टमधोच्छिष्टमंतरिक्षमृतौतथा ॥
कृच्छ्रत्रयंप्रकुर्वीत आशौचमरणेतथा ॥ ५९ ॥

यदि कोई ऊर्ध्वोच्छिष्ट ( वमनादिसजूठेमुंह ) अधोच्छिष्ट ( मूत्र पुरीषसे अशुद्ध)होकर अथवा खट्वा वा अटारी आदि अन्तरिक्षमें मर जावेतो उसके निमित्त तीन कृच्छ्र करानेसे ( अथवा व्रतके बदले उतनी गौदान देने से ) शुद्धहोता है यही प्रायश्चित्त आशौच में मरे हुए का भी है ॥ ५९ ॥

कृच्छ्रदेव्ययुतंचैवप्राणायामशतद्वयम् ॥
पुण्यतीर्थेनार्द्रशिरः स्नानंद्वादशसंख्यया ॥ ६० ॥

एक अयुत १०००० गायत्री जपने से भी एक कृच्छ्रव्रत का फल होता है तथा दोसौ प्राणायाम करनेसे एककृच्छ्रहोता है, और किसी पुण्य तीर्थ में स्नान करें जब सिरके बाल सूखजावें पुनः स्नान करे इसप्रकार बारहबार स्नान करनेसे भी एक कृच्छ्रव्रतहोताहै ॥ ६० ॥

द्वियोजनंतीर्थयात्राकृच्छ्रमेकंप्रकल्पितम् ॥
गृहस्थःकामतःकुर्याद्रेतसःस्खलनंभुवि ॥ ६१ ॥

दोयोजन तीर्थकी ओर चले तो भी एक कृच्छ्रव्रत होता है यदि गृहस्थ अपनी इच्छासे वीर्य भूमि में गिरावे ॥ ६१ ॥

सहस्रंतुजपेद्देव्याःप्राणायामास्त्रिभिःसह ॥
चातुर्विद्योपपन्नस्तु बिधिवद्ब्रह्मघातके ॥ ६२ ॥

तो एक सहस्र गायत्री जपकर और तीन प्रणायाम करे जो ब्रह्म घातीहो उसको चारों वेद जानने हारा विप्र ॥ ६२ ॥

समुद्रंसंतुगमनंप्रायश्चित्तंसमादिशेत् ॥
सेतुंबधपथेभिक्षांचातुर्वर्ण्यात्समाचरेत् ॥ ६३ ॥

समुद्रसेतु ( रामेश्वर के दर्शन के लिये ) गमन करनेका प्रायश्चित्तबतलावे सेतुबंधजातेहुए मार्गमें चारौंवर्णोंके घरभिक्षामांगे ६३

वर्जयित्वाविकर्मस्थान्छत्रोपानाद्विवर्जितः ॥
अहंदुष्कृतकर्मावैमहापातककारकः ॥ ६४ ॥

विरुद्ध कर्म करनेंहारोंके घर भिक्षा न करे और छाता, जूता, पास न रक्खे तथा ऐसा कह कर भिक्षा मांगे कि मैं दुष्कृत कर्म करनेंहारा महापातकी हूँ ॥ ६४ ॥

गृहद्वारेषुतिष्ठामिभिक्षार्थीब्रह्मघातकः ॥
गोकुलेषुचवसेच्चैवग्रामेषुनगरेषुच ॥ ६५ ॥

ब्रह्म घातक घरके द्वारपर भिक्षा के अर्थ खड़ा हूं । गौओं के मध्य ग्राम और नगरों में बासकरै ॥ ६५ ॥

तपोवनेषुतीर्थेषुनदीप्रस्रवणेषुच ॥
एतेषुख्यापयन्नेनः पुण्यंगत्वातु सागरम् ॥ ६६ ॥

तपोवन, तीर्थ, नदी, झर्ने, इनस्थलों में अपना पापकहता हुआ पवित्र सागर में जाकर ॥ ६६ ॥

दशयोजनविस्तीर्णंशतयोजनमायतम् ॥
रामचन्द्रसमादिष्टंनलसंचयसंचितम् ॥ ६७ ॥

दस योजन चौड़ा सौ योजन लंबा, रामचन्द्र के कथन से नल ने संचय करके रचितकिया ॥ ६७ ॥

सेतुंदृष्ट्वासमुद्रस्यब्रह्महत्यांव्यपोहति ॥
सेतुंदृष्ट्वाविशुद्धात्मात्ववगाहेतसागरम् ॥ ६८ ॥

ऐसे समुद्र सेतुको देखकर ब्रह्महत्या से छूटजाता है सेतुदर्शन से शुद्धदेहहोकर समुद्रमें स्नानकरे ॥ ६८ ॥

यजेतवाश्वमेधेनराजातुपृथिवीपतिः ॥
पुनःप्रत्यागतोवेश्मवासार्थमुपसर्पति ॥ ६९ ॥

यदि पृथ्वी का पति राजा हो तो अश्वमेध यज्ञ करनें से ब्रह्महत्या से छूटता है पुनः घर में आकर वास करे ॥ ६९ ॥

सपुत्रःसहभृत्यश्चकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥
गाश्चैवैकशतंदद्या च्चातुर्विद्येषुदक्षिणाम् ॥ ७० ॥

पुत्र और भार्या तथा भृत्यों समेत ब्राह्मणों को भोजन करावे और चारों वेद जानने हारे ब्राह्मणों को एक सौ गौदक्षिणादेवे ।७०।

ब्राह्मणानांप्रसादेन ब्रह्महातुविमुच्यते ॥
विंध्यादुत्तरतोयस्यसवंासःपरिकीर्तितः ॥ ७१ ॥

और ब्राह्मणों की प्रसन्नता से ब्रह्मघाती शुद्ध होताहै जिस्का निवास विंध्य पर्वत के उत्तर भाग में हों ॥ ७१ ।

पराशरमतंतस्यसेतुबंधस्यदर्शनम् ॥
सवनस्थांस्त्रियंहत्वाब्रह्महत्याव्रतंचरेत् ॥ ७२ ॥

उसी को पराशर के मत से सेतुबंध का दर्शन विहित है यज्ञ कर्ती हुई स्त्री को मारे तो ब्रह्महत्याका व्रत करे ॥ ७२ ॥

मद्यपश्चद्विजःकुर्यान्नदींगत्वासमुद्रगाम् ॥
चांद्रायणेतपश्चीर्णेकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ७३ ॥

मद्यपि ब्राह्मण भी ब्रह्म हत्या व्रत करे और समुद्र गामिनी नदी में स्नान कर के चान्द्रायण करे तदनन्तर ब्राह्मण भोजन करावे ॥ ७३ ॥

अनडुत्सहितांगांचदद्याद्विप्रेषुदक्षिणाम् ॥
सुरापानंसकृत्कृत्वा अग्निवर्णांसुरांपिबेत् ॥ ७४ ॥

एक बैल और गौ ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे जो एकवार सुरा ( मद्य ) पीकर अग्नि समान तप्त करके सुरा पीकर मरजावे ॥ ७४ ॥

सपावयेदिहात्मा मिहलो केपरत्रच ॥
अपहृत्यसुवर्णंतुब्राह्मणस्यनतःस्वयम् ॥ ७५ ॥

सो अपने आत्मा को इस लोक और परलोक दोनों में शुद्ध कर्ता है यदि ब्राह्मण के सुवर्ण चोरी करे तो अपनेही आप ॥ ७५ ॥

गच्छेन्मुसलमादाय राजानंस्ववधायतु
हतः शुद्धिमवाप्नोति राज्ञाऽसौमुक्तएवच ॥ ७६ ॥

हाथमें मूसल लेकर राजा के पास अपने बध के अर्थ जावे

राजा उस्से मारे तो शुद्ध होता है और राजा उसे छोड़दे तो भी शुद्ध होजाता है ॥ ७६ ॥

कामतस्यतुकृतंयत्स्यान्नान्यथावधमर्हति ॥
आसनाच्छयनाद्यानात्संभाषात्सहभोजनात् ॥ ७७ ॥

यदि जान बूझकर ब्राह्मण का सोना चुराया हो तब उसका वध कर्ना अन्यथा बध के योग्य नहीं होता है एकत्र बैठने और सोने से तथा एकही सवारी पर चढकर चलने और साथ भोजन कर्ने से ।७७।

संक्रामंतीहपापानि तैलविन्दुरिवांभसि ॥
चांद्रायणयावकंच तुलापुरुषएवच ॥ ७८ ॥

एक को पाप दूसरे को उसे भांति लगजाता है जैसे तैल काविन्दु पानी में फैल जाता है चान्द्रायण यावक, तुलापुरुष, ॥ ७८ ॥

गवांचैवानुगमनंसर्वं पापप्रणाशनम् ॥
एतत्पराशरंशास्त्रं श्लोकानांशतपंचकम् । ७९ ॥

और गौओं के पीछे २ चलना इन से हर एक प्रकार का पाप नष्ट होता है ॥ ७६ ॥

द्विनवत्यासमायुक्तं धर्मशास्त्रस्यसंग्रहः ॥
यथाध्ययकर्माणिधर्मशास्त्रमिदंतथा ॥ ८० ॥

यह पराशर का बनाया हुआ पांच सौ और बानमें श्लोक का धर्म शास्त्र संग्रह है जैसे वेदाध्ययन से पुण्य होता है उसीप्रकार इस धर्म शास्त्र के पढने से भी पुण्य है ॥ ८० ॥

अध्येतव्यंप्रयत्नेननियतंस्वर्गकामिना ॥
इति श्रीपाराशरेधर्मशास्त्रेसकल प्रायश्चित्तनिर्णयो नामद्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥१२॥

इस हेतु जो स्वर्ग कामना करे वह नियम पूर्वक इसे पढे ॥ इति श्री पराशर धर्म शास्त्र भाषा विवृतौ पण्डित गुरु प्रसाद कृतायां सकल प्रायश्चित्त निर्णयो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

॥ इति श्री पाराशर स्मृतिरियं पूर्तिमागमत् ॥